अलग अलग, तितर बितर, कटा हुआ, टूटा हुआ।

प्रा०छिपकली } टिकटिकी, एक
छिपकी } जानवरका नाम।

प्रा०छिपना } क्रि० अ० लुकना, अ-
छपना } लख होना, दबकना, अदृश्य होना।

प्रा० छिमा-(सं० क्षमा) स्त्री० क्षमा, माफी।

प्रा०छियालीस-(सं०षट्चत्वारिंशत्, षट्=छः चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और छः।

प्रा० छियासी-(सं० षडशीतिः षट्=छः अशीति=अस्सी) गु० अस्सी और छः।

प्रा० छिलका-(सं०छली, छद्=ढकना)पु०छाल, बकला, त्वचा, पोस्त।

प्रा० छिहत्तर-(सं० षट्सप्ततिः षट्=छः सप्तति=सत्तर) गु० सत्तर और छः।

प्रा० छी-वि० बो० तुच्छ और घिन करने का शब्द।

प्रा० छींक-(सं० छिक्का, छिक् ऐसा शब्द, कृ=करना) स्त्री० शब्द जो नाक से होता है।

प्रा०छींका-(सं०शिक्य, शि=छेदना) पु० झूला, बहँगीकी डोरी, जालकी तरह बनीहुई चीज जिसमें कोई चीज रखके लटका देते हैं।

प्रा० छींट-(सं० चित्र रंग रंगका) स्त्री० एक प्रकार का रंगा हुआ कपड़ा। [सींचना।

प्रा० छींटना-क्रि० स० छिड़कना,

प्रा०छींटा-पु० छांटा, टपका, बिन्दु।

प्रा० छीजना-क्रि० अ० घटना, कम होना, सूखना, झूरना, देखा देखी कीजै योग, छीजैकाया बाढ़े रोग, कहावत० जो कोई किसी की देखा देखी तप अथवा व्रत आदि करता है उसका शरीर दुबला हो जाता और बीमारी बढ़ती है।

प्रा० छीन-(सं० क्षीण) गु० मन्द, पतला, दुबला, कृश, घटा हुआ, लाग़र।

प्रा० छीनना-क्रि० स० लेलेना, खींचलेना, जबरदस्ती से लेलेना, झपट लेना।

प्रा० छीनाछानी करना-बोल० झपट लेना, झपटा झपटी करना, छीना झपटी करना। [दूध।

प्रा० छीर-(सं० क्षीर) पु० दुग्ध,

प्रा० छीलना-क्रि० स० काटना, छिलका उतारना।

प्रा० छुछूंदर-(सं० छुछुन्दरी, छुछु ऐसा शब्द, दृ=फाड़ना) पु० एक जानवर का नाम।

प्रा० छुछूंदरछोड़ना-बोल० चुगली खाना, कलङ्क लगाना, बुराई

करना, निंदा करना, भड़काना, बहकाना।

प्रा० छुट-(सं०छुट्=जुदा २ करना क्रि० वि० सिवाय, २ छोटा) गु० छोटा, थोड़ा।

प्रा० छुटकारा-(छूटना) पु० छुड़ाव, उद्धार, मुक्ति, मोक्ष, रिहाई।

प्रा० छुट्टी-स्त्री० छुटकारा, रुखसत, अवकाश, फुरसत, समय।

सं० छुड़-(छेदना) पु०आच्छादन, आवरण,नीच, खल, मिथ्यावादी, तुच्छ, पेच, फेर, किरण, भूषण।

प्रा० छुड़ौतो-(छुड़ाना) स्त्री० छुड़ाने का मोल। [चूना, नींबू।

सं० छुर-पु० छुरा छुरी स्त्री० छूरा,

सं० छुरिका } छूरी } (छुर्=काटना) स्त्री० चकू, चाकू।

प्रा० छुहारा-पु० खजूर, एक फल का नाम।

प्रा० छूछा-गु० खाली, खोखला, शून्य, वृथा, निष्फल, पु० टोना, टोटका, जादू।

प्रा० छूट-(छूटना) स्त्री० छोड़ना, बट्टा, छुड़ाव।

प्रा० छूत (छूना) स्त्री० छूना, अपवित्रता, किसी से छूआ जाना।

सं० छूद-(छूद=प्रकाशकरना) पु० प्रकाश, दीप्ति, वमन, विलाप, गु० प्रकाशक, प्रकाशवान्।

प्रा० छेंकना-क्रि० स० रोकना, अटकाना, घेरना।

प्रा० छेड़-(छेड़ना) स्त्री० खिजावट, सताना।

प्रा० छेड़छाड़ } छेड़खानी } बोल० टोकटाक, ताना, खिजावट, टेढ़ीबात।

सं० छेद-(छिद्=काटना) पु० काटा हुआ, भिन्न का हर, भाग।

प्रा० छेद-(सं० छिद) पु० गड़हा, खड्डा, मांद।

प्रा० छेदना-(सं० छेदन, छिद्=काटना, क्रि० स० बेधना, पारकरना, धसाना, चुभाना, नाथना।

प्रा०छेनी स्त्री०रुखानी,टांकी, छेदनी।

सं० छेमण्ड-पु० मुरहा, माता पिता रहित बालक, यतीम, बेवारिस, अनाथ।

प्रा० छेरी-(सं०छागी,छो=काटना) स्त्री० बकरी।

प्रा० छेदा-(सं० छेदन, छिद्=काटना) पु० चिह्न, लकीर।

प्रा० छैल } छैला } पु० बांकाअकड़ैत चिकनिया।

प्रा०छैलाचिकनियां-बोल०बांका, छैला।

प्रा० छोकरा-पु० लड़का, बालक।

प्रा० छोकरी-स्त्री० लड़की, कन्या।

प्रा० छोटा-(सं० क्षुद्र) गु० लघु, लहुरा, कनिष्ठ ।

सं० छोटिका-(छुट+इका) स्त्री० उच्छाल, स्पर्श, छूना, अंगुष्ठ, अंगूठा, कोपीन, लँगोटा, कछौटा, कछौँट ।

प्रा० छोर-पु० अन्त, किनारा ।

सं० छोरण-(छुर+अन,छुर्=छेदना) पु० त्याग, पैना करना,कर्तन, काटना ।

सं० छोरंग-पु० नींबू, खट्टा, चूना, सफेदी सफेदा, करौंदा ।

प्रा० छोह-(सं० क्षोभ) पु० प्यार, स्नेह, मोह, प्रीति ।

प्रा० छोही-(छोभ) पु० प्रेमी, प्यारा, स्नेही, अनुरागी ।

प्रा० छौना-पु० जानवर का बच्चा ।

ज

सं० ज-(जन्=पैदा होना, वा जि=जीतना) पु० शिव, २ विष्णु, ३ जन्म, ४ माता पिता, उत्पत्ति, सुरमा, अंजन, शेष, राक्षस, जीव, शरीर आदि ।

प्रा० जक-पु० गाड़ाधन का रक्षक ।

प्रा० जकड़ना-क्रि० स० कसना, कसके बांधना, खींचना, बांधना, तानना ।

प्रा० जग-(सं० जगत्) पु० संसार, जगत्, दुनियां, जंगम, वायु ।

प्रा० जग-(सं० यज्ञ) पु० यज्ञ, बलि, २ उत्सव, पर्व ।

प्रा० जगजगाहट-स्त्री० चमक, चमकाहट, प्रकाश, उजलाई ।

प्रा० जगजागी-स्त्री० संसार में विदित हुई, दुनियां में जाहिरहुई ।

सं० जगत्-(गम्=जाना) पु० संसार जग, दुनियां ।

सं० जगती-(गम्=जाना) स्त्री० पृथ्वी, धरती, २ लोग ।

सं० जगदम्बा (जगत्=संसार, अम्बा=मा) स्त्री० जगमाता, महामाया, देवी, दुर्गा ।

सं० जगदाधार-(जगत्=संसार, आधार=आसरा) पु० अनन्तशेषजी, संसार, का आसरा, २ हवा, वायु ।

सं० जगदीश-(जगत्=संसार, ईश=स्वामी) पु० परमेश्वर, संसारका कर्ता, जगन्नाथ, विष्णु ।

प्रा० जगना-(सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठाना, सचेतहोना, जागना ।

सं०जगन्नाथ-(जगत्=संसार,नाथ=स्वामी) पु० विष्णु, जगदीश, जगत्पति, जगन्नाथ का मंदिर उड़ीसा में जगन्नाथपुरी में है जहां बहुत से यात्री जाया करते हैं ।

प्रा० जगमगा-गु० चमकीला, चमकदार, झलाझल ।

प्रा० जगमाता-(सं० जगन्माता जगत्=संसार, माता=मा) स्त्री० संसार की मा, जगदम्बा, देवी दुर्गा, सरस्वती ।

प्रा० जगह | जागह } स्त्री० ठौर, स्थान, ठिकाना ।

प्रा० जगहछोड़ना-बोल० कागज़ में कुछ जगह बिन लिखी रखना ।

प्रा० जगहसिरखरचना-बोल० मौके पर खर्च करना, यथोचित खर्चना, जहां चाहिये वहां खरचकरना।

प्रा० जगह सिर होना-बोल० किसी काम परहोना, ठीक होना, यथोचित होना, जैसा चाहिये वैसा होना ।

प्रा० जगाज्योति-(सं० जाग्रज्ज्योतिः) स्त्री० चमक, भड़क, जगजगाहट, बहुत अथवा बड़ी जोत ।

सं० जङ्गम-(गम्=जाना) गु०चलने वाला, जिसमें चलने की शक्तिहो २ पु० योगी जिनके सिर पर जटा होती है और छोटी घंटी को बजाया करते हैं और महादेव के भजन गाया करतेहैं । [झाड़ी ।

सं० जङ्गल-(गल्=गिरना)पु०,वन

प्रा० जङ्गली-(सं० जङ्गल) गु०वनैला, वनवासी ।

सं० जग्ध-(अद्=भोजन करना) र्म० पु० भुक्त, खायागया ।

सं० जग्धि-(अद्+ति) भा० पु० भोजन ।

सं० जघन-(जन+घन) पु०स्त्रियों के कटि का अग्रभाग, जंघा, करिहाँव, कटिदेश, ऊरुस्थल ।

सं०जघन्य-(जम+हन्य)र्म०पु०अधम, नीच, पिछला ।

सं० जघन्यज-पु०कनिष्ठ,शूद्र,अधम।

सं० जङ्घा-(हन्=टेढ़ा जाना, वा जन्=पैदा होना) स्त्री० जांघ, जानु, जानू ।

प्रा० जचना-क्रि० स० अटकलहोना नज़र में खटाना ।

प्रा० जचावट-(जांचना) भा०स्त्री० जांच, परख ।

प्रा० जंजाल-(सं० जनजाल, जन्=मनुष्य,जाल=फंदा) पु०उलझेड़ा, उलझाव, कलेश, झंझट,घबराहट, व्याकुलता, कठिनता ।

सं० जटा-(जट्=इकट्ठाकरना) स्त्री० बालों का जूड़ा, बिखरेबाल, मिले हुयेबाल, २ जड़, वृक्ष की जड़ ।

सं० जटाजूट-(जटा+जूट=जूड़ा) पु० जटाका जूड़ा, जटा का बंध ।

सं० जटाधारी-(जटा+धारी=रखने वाला, धृ=रखना) पु०शिव, जटा रखने वाला ।

सं०जटामांसी-(जटा,मन्=रखना)

स्त्री० एक औषध का नाम ।

सं० जटायु-(जटा और या=जाना, वा जट=बहुत, आयु=उमर जिसकी) पु० एक गीध का नाम जिसका वर्णन रामायण में है ।

सं० जटित-(जट्=मिलाना, जोड़ना) र्म० जड़ाऊ, जड़ा हुआ ।

सं० जटिल-(जटा) गु० जटावाला, जटाधारी, पु० सिंह, २ ब्रह्मचारी, ३ शिव ।

सं० जठर-(जन्=पैदा होना) पु० पेट, उदर, गर्भ, कोख, गु० कठोर, दृढ़, २ बूढ़ा ।

सं० जठराग्नि, जठरानल (जठर=पेट, अग्नि वा अनल=आग) स्त्री० पेट की आग जिससे खाना, पचता है, २ भूख, ३ पेट का रोग।

सं० जड़-(जल्=ढकना) पु० मूर्ख, सुस्त, ठंढा, अज्ञानी, निर्बोध, गावदी, भकुआ ।

प्रा० जड़-(सं० जटा, जट्=इकट्ठा करना) स्त्री० मूल, कारण, नेंव, ठहराव ।

प्रा० जड़ना-(सं० जटन, जट्=मिलाना) क्रि० स० मारना, झट कारना २ जोड़ना, लगाना, साटना । ३ नग बैठाना, खोद कर बनाना ।

प्रा० जड़ पेड़-स्त्री० मूल समेत पेड़ सब का सब ।

प्रा० जड़पेड़सेउखाड़ना-बोल० उखाड़ डालना, जड़ से खोद डालना, मूल समेत उखाड़ डालना ।

सं० जड़मति (जड़+मति) स्त्री० निर्बुद्धि, बेवकूफ ।

प्रा० जड़हन-पु० अगहनी धान ।

प्रा० जड़ाई-(जड़ाना) भा० स्त्री० जड़ाने का मोल, जड़ाने का काम ।

प्रा० जड़ाऊ-गु० जड़ित, जड़ा हुआ।

प्रा० जड़ित-(सं० जटित) र्म० पु० जड़ा हुआ । [जौहरी ।

प्रा० जड़िया-क० पु० जड़नेवाला,

प्रा० जड़ी-(सं० जटा) स्त्री० औषधी की बेल की जड़ ।

प्रा० जड़ीबूटी-स्त्री० दवाई, लकड़ी, बेली ।

प्रा० जतन-(सं० यत्न) पु० उपाय, उद्योग, परिश्रम, मिहनत, २ इलाज ।

प्रा० जताना-(सं० यत्=यतन करना) क्रि० स० चिताना, बुझाना, बताना, बतलाना चेतना, सुध करना, २ प्रकट करना ।

प्रा० जती-(सं० यति) पु० जितेंद्रिय, संन्यासी, भिखारी, योगी ।

सं० जतुक-पु० लाख, हींग ।

प्रा० जथा-(सं० यथा) क्रि० वि० जैसे जिसप्रकार से ।

प्रा० जत्था-(सं० यूथ) पु० मंडली, दल

समूह, समाज, टोली, झुंड ।

प्रा० जत्थाबाँधना-बोल० झुण्ड बनाना, गोल बांधना ।

सं० जन-(जन्=पैदाहोना)पु० मनुष्य, लोग, आदमी, मनुष्य जाति व्यक्ति, २ दुष्ट वा नीच मनुष्य ।

सं०जनक-(जन=पैदाकरना)क०पु० बाप, पिता, २ मिथिला के राजा और सीताके बाप का नाम ।

सं० जनकतनया, जनकसुता (जनक=एक राजाका नाम, तनया वा सुता=बेटी) स्त्री० सीता, जानकी ।

सं०जनकपुर-(जनक=एक राजा का नाम, पुर=शहर) पु० तिरहुतमें एक शहर है जो राजा जनक की राजधानी था । [नक का ।

प्रा० जनकौरा-(सं० जनक) पु०ज-

सं० जनता-स्त्री० जनसमूह, मनुष्य समूह ।

प्रा० जनना-(सं०जनन,जन्=पैदा होना) क्रि० अ० जन्म होना पैदा होना ।

सं० जननी-(जन्=पैदाहोना) स्त्री० मा, मैया, माता, महतारी ।

सं०जनपद-(जन+पद)पु०देश,ग्राम, लोक, जाति, क़ौम, जनस्थान ।

सं०जनप्रवाद-पु०किंवदन्ती, अफ़वाह, बदगोई, मज़म्मत, शुहरत, खबर, कलह ।

सं० जननीय-(जन्+अनीय)कर्म० संतान, उपजायागया, पैदा किया हुआ ।

सं०जनमेजय-(जन=संसार,एज=चमकना, वा जन्=दुष्ट लोग,एज=कंपाना)पु०राजापरीक्षितका बेटा

सं० जनयिता(जन्+इ+तृ,जन् पैदा करना) क० पु०पिता,जनक, बाप, जन्मदाता ।

सं०जनयित्री(जनयितृ+ई)क०स्त्री० माता, जननी, मा, महतारी ।

सं० जनलोक-(जन=मनुष्य, लोक=जगह) पु० सातलोकों में का एकलोक जहां धर्मात्मा मनुष्य मरने के पीछे रहते हैं ।

प्रा०जनवासा-(सं०जन्यवास,जन्य=दुलहेके मित्रआदि, वास=जगह)पु० बरातियों के उतरने की जगह ।

सं० जनाश्रय-(जन=मनुष्य,आश्रय=अवलंब) पु० विश्रामस्थान, टिकासरा, २ अधिकार, मन्त्री ।

सं० जनश्रुति-(जन=मनुष्य,श्रुति=सुनी हुई)स्त्री० खबर समाचार,किंवदन्ती, संदेशा, अफ़वाह ।

प्रा० जनाना(जनना) क्रि० स० पैदा करना, जन्माना, २ (जानना) चिताना, जताना, चेताना,बुझाना।

प्रा० जानब-(जनाना) भा०पु० सैन संकेत, लखान, चेताव, सूचना।

फ़ा० जनाब-अत्रभवान्, उच्चपद, उच्चस्थान ।

सं० जनार्दन-(जन्=दुष्टलोग, अर्द=पीड़ा देना, मारना, वा जन मनुष्यों से, अर्द जांचा जाना अर्थात् जिससे मनुष्य जांचते हैं) पु० विष्णु, भगवान्, नारायण ।

प्रा० जनि
जिन } क्रि० वि० मत, नहीं ।

सं० जनि-(जन्+इ) भा० स्त्री० जन्म, पैदाइश, उत्पत्ति ।

सं० जनित-(जन्=पैदा होना) भू० पु० पैदा हुआ, उत्पन्न, भया, जन्मा ।

सं० जनुस्-पु० उत्पत्ति, पैदाइश, स्त्री० जनु, उत्पत्ति, जनन ।

प्रा० जनेऊ-(सं० यज्ञोपवीत) पु० सूत का तार जिसको तीन वर्णके लोग गले में पहनते हैं, उपवीत, यज्ञोपवीत-२ जनेऊ जैसा चिह्न जो हीरे आदि रत्नों में होता है ।

प्रा० जनेत-(सं० जन्य) पु० बराती, स्त्री० बरात ।

प्रा० जञ्जाल-पु० झगड़ा, बखेड़ा, सांसारिक कार्यों का समूह ।

प्रा० जन्ता-(सं० यंत्र) पु० तार खींचने का औज़ार ।

सं० जन्तु-(जन्=पैदा होना) पु० जीवधारी, प्राणी, जीव, जानवर, पशु, देहधारी, देही ।

प्रा० जन्त्र- (सं० यन्त्र) पु० कल २ बाजा, ३ गंडा, तावीज़, जन्तर, टोटका ।

सं० जन्म-(जन्=पैदा होना) पु० उत्पत्ति, पैदा होना, पैदाइश ।

सं० जन्मद-(जन्म+द=देनेवाला, दा=देना) पु० जन्मदाता, बाप, पिता ।

सं० जन्मदिन-(जन्म+दिन) पु० पैदा होने का दिन, बरस गांठ, बरसवांदिन, सालगिरह ।

सं० जन्मपत्री-(जन्म+पत्री) स्त्री० लग्न कुंडली, जन्मपत्र, जायचा ।

सं० जन्मभूमि-(जन्म+भूमि) स्त्री० अपना देश, उत्पत्तिस्थान, वतन ।

सं० जन्मान्तर-(जन्म=पैदाइश, अन्तर और) पु० दूसराजन्म, नया जन्म, पुनर्जन्म, फिर जन्मना ।

सं० जन्मान्ध-(जन्म+अन्ध) गु० जन्म का अन्धा, सूरदास ।

सं० जन्माष्टमी-(जन्म+अष्टमी) स्त्री० श्री कृष्णका जन्म दिन भादों बदी ८ ।

सं० जन्मोत्सव-(जन्म+उत्सव) पु० जन्मदिन का उत्सव, २ जन्माष्टमी के दिनका उत्सव ।

सं० जन्य-(जन्=पैदा करना) भू० पु० संग्राम, निन्दितवाद तलाव कौलीन, हट्ट, उत्पाद्य सेवक भृत्य मित्र, ज्ञाति, बाप, २ दुलहे के मित्र और साथी आदि ।

सं०जप—(जप्=जपना) पु०परमेश्वर का नाम लेना, माला फेरना, मंत्र पाठ।

प्रा० जपत—(सं०जपित, जप्=जपना) कर्म० जपता हुआ, माला फेरता हुआ।

सं० जपमाला—(जप+माला)पु० सुमिरनी, जप करने की माला, माला।

प्रा० जब, जद—(सं० यदा, यद्=जो) क्रि० वि० जिस समय, जिस काल में।

प्रा० जबतक, जबतलक, जबतोड़ी—क्रि० वि० जबलग, जबलों, जिस समय तक।

प्रा० जबतब—बोल० कभीकभी।

प्रा० जबजब—बोल० जब कभी।

प्रा० जबनतब—बोल० कभी न कभीं, सदा।

प्रा०जबड़ा-पु०जभा,चौहड़,जभड़ा।

प्रा० जमकना—क्रि० अ० ठहरना, निभना।

प्रा० जम—(सं० यम)पु० यमराज, काल, मौत।

प्रा०जमदूत-(सं०यमदूत)पु०मौतकेदूत।

प्रा० जमदीया-(सं० यमदीपक) पु० जो दिया कातिक बदी १३ को जम के नाम से जलाते हैं।

प्रा० जमघट-(यम=रोकना, घट=शरीर, जहां बहुत भीड़ से आदमी चलने से रुक जाते हैं) पु० मंडली, भीड़ भाड़, झुंड।

प्रा० जमधर—(सं०यमधार,यम=मौत, धार=तीखीनोक) पु० कटार।

प्रा०जमना—(सं०जन्=पैदाहोना) क्रि० अ० उगना, उपजना, पनपना, बढ़ना, २ दृढ़ होना, गाढ़ा होजाना, ठोस हो जाना (जैसे पाला अथवा घी) ३ इकट्ठा होना,४ठीकबैठना, लगना, सटना।

प्रा० जमहाई—(सं० जृम्भा, जृम्भ्=जम्हाना) स्त्री०आलस में आकर मुंह खोलना, आलस्य, सुस्ती।

प्रा०जमहाना-(सं०जृम्भ्=जमहाना) क्रि०अ०मुंहखोलना,जमहाईलेना।

प्रा०जमाई, जंवाई—(सं० जामाता) पु० दामाद, बेटी का पति।

प्रा० जमालगोटा—पु० एक दवा का नाम, दतुइनिया।

प्रा०जमुना, जमन, जमना—(सं०यमुना) स्त्री० एक नदी का नाम।

सं० जम्बु, जम्बू—(जमू=खाना)पु०जामन।

सं० जम्बुक } (जम्=खाना) पु०
जम्बूक } गीदड़, सियाल, शृगाल ।

सं० जम्बुद्वीप } (जम्बु वा जम्बू
जम्बूद्वीप } जामन, द्वीपखंड, पु० सात द्वीपों में का पहला द्वीप, जिस में नौ खंड हैं उसका यह भरतखंड अथवा हिंदुस्थान एक खंड है, द्वीप शब्द को देखो)

सं०जय—(जि=जीतना) भा०स्त्री० जीत, विजय ।

सं०जयजयकार-बोलबाला,फ़तेह ।

सं०जयपताका—(जय + पताका) स्त्री० जीतकाझंडा,फ़तेहकानिशान ।

सं० जयपत्र-पु० जीतनेका पत्र अश्वमेध यज्ञ,दस्तूरुलूअमल,प्रोग्राम ।

सं० जयन्त—(जि=जीतना)पु०इन्द्र का बेटा ।

सं० जयमाल—(जय=जीत, माल =माला) स्त्री० जीत की माला, स्वयंवरमें लड़की जिसको पसन्द करके उसके गले में जो माला डालती है वह भी जयमाल कहलाती है । [ला, विजयी, जयवान् ।

सं० जयी—(जय)क०पु०जीतनेवा-

प्रा० जर—(सं०ज्वर)स्त्री०तप,ताप, ज्वर, २ (जड) जड़, मूल ।

सं० जरठ—(जॄ=बूढ़ा होना) गु० बूढ़ा, वृद्ध, पुराना, २ कठोर, कठिन, क्रूर ।

सं० जरत }
जरी } क०पु०बूढ़ा, वृद्ध ।

सं० जरती-स्त्री० बुढ़िया, वृद्धा ।

प्रा० जरनी (जलना) स्त्री० जलन, चिंता, फिकर ।

सं० जरा—(जॄ=बूढ़ा होना) स्त्री० बुढ़ापा, वृद्धावस्था, २ एकराक्षसी का नाम ।

सं० जरायुज—(जरायु + ज) क० पु० पिण्डज, मनुष्यादि ।

सं० जरासन्ध—(जरा एकराक्षसी का नाम, सन्ध=जोड़ा हुआ) पु० मगध देश का प्रसिद्ध राजा जो कंस का ससुर श्रीकृष्ण का वैरी था। कहते हैं कि जब वह जन्मा था तब उसके शरीर की दो फांकें थीं जिन को जरा नाम राक्षसी ने जोड़ा और उस ने यह वर दिया कि जबतक इसके जोड़ न फटेंगे यह किसी से न मरेगा परइसी तरह से भीम ने उसको चीरडाला ।

अ० जरीब—स्त्री० खेत नापने की डोरी जो ६० गज अथवा २० गट्ठे की होती है ।

सं० जर्जर—(जॄ=पुराना होना) गु० पुराना, जीर्ण, निर्बल, पु० इन्द्रका

झंडा, शैवाल, सिवार, इन्द्र धनुष।

सं० जल-(जल्=ढकना) पु० पानी।

सं० जलक-पु० बराटिका, कौड़ी, शुक्तिका, सूती, शंख, घोंघा।

सं० जलकरङ्क-पु० शंख, घोंघा, बराटिका, नारियलका फल दूध-युक्त, सिवार, काई।

सं० जलकाक-पु० गोताखोर, बतक, पनडुब्बी।

सं० जलकुक्कुट-(जल=पानी, कुक्कुट =मुर्गा) पु० जलमुर्गा, मुर्गाबी।

सं० जलकूपी-स्त्री० तड़ाग, हौज़।

सं० जलगुल्म-पु० जल भौंर, कछुआ, बर्फ़, हिम, पाला।

सं० जलक्रीड़ा-(जल+क्रीड़ा) स्त्री० पानी में खेल करना।

सं० जलचर-(जल=पानी, चर= चलनेवाला, चर्=चलना) पु० जल का जीव मकर, मछली, ग्राह आदि।

सं० जलचरकेतु-(जलचर=मकर केतु=झंडा, अर्थात् जिसके झंडेपर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव, मदन, मकरध्वज।

सं० जलज-(जल=पानी, ज=पैदा होनेवाला, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल, पंकज, २ मछली, ३ शङ्ख, ४ चन्द्रमा, ५ मोती।

सं० जलजात-(जल=पानी, जात पैदा हुआ, जन्=पैदा होना) पु० कँवल, कमल।

सं० जलत्र-(जल+त्र, त्र=रक्षा करना) छत्र, छाता, नौका, नाव।

प्रा० जलथल-(सं० जलस्थल) पु० आधी धरती पानी से ढकीहुई और आधी सूखी, दलदल।

सं० जलद-(जल=पानी, द=देनेवाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घन, घटा, वारिद, मोथा घास, कलश, घड़ा, गु० पानी देनेवाला।

सं० जलधर-(जल=पानी, धर= रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बादल २ समंदर, ३ एकप्रकारका घास, गु० पानी को रखनेवाला।

सं० जलधारा-(जल=पानी, धारा =धार) स्त्री० झरना, प्रवाह, सोता, स्रोत, पानी का गिरना।

सं० जलधि-(जल=पानी, धा=रखना) पु० समंदर।

प्रा० जलन-(सं० ज्वलन) स्त्री० जलना, तपन, २ तप ३ रिस, क्रोध, कुढ़न।

सं० जलनिर्गम-पु० मोरी, पानी का निकास।

प्रा० जलना-(सं० ज्वलन, ज्वल् =जलना) क्रि० अ० बलना, दहना, सुलगना, भड़कना, आंचल-

गना, २ क्रोध करना, कोपकरना, कुढ़ना ।

प्रा॰ जलउठना-बोल॰ भड़कउठना, जलजाना ।

प्रा॰ जलबुझना-बोल॰ राख हो जाना ।

प्रा॰ जलेपरनोनलगाना-बोल॰ दुखिया मनुष्य को फिर सताना ।

सं॰ जलनिधि-(जल=पानी, निधि=खज़ाना) पु॰ समंदर, सागर ।

सं॰ जलनीली-स्त्री॰ काई, सिवार ।

प्रा॰ जलन्दर, जलन्धर (सं॰ जलोदर, जल=पानी, उदर =पेट) पु॰ पेटमें पानी, का इकट्ठा होना, एक प्रकार का पेटका रोग, २ दैत्य विशेष, ३ जलाशय, कूपादि ।

सं॰ जलपति-(जल=पानी, पति =राजा) पु॰ बरुण देवता, २ समंदर ।

सं॰ जलपान-(जल=पानी, पान= पीना पु॰ कलेवा, कलेऊ, जलखाना ।

सं॰ जलयान-(जल=पानी, यान =सवारी) पु॰ नाव, नौका, जहाज ।

सं॰ जलराशि-(जल=पानी, राशि =ढेर) पु॰ समुद्र ।

सं॰ जलरुह (जल=पानी, रुह्= उगना) पु॰ कँवल ।

सं॰ जलबाण-(जल=पानी, बाण= तीर) पु॰ पानी तीर ।

सं॰ जलबिन्दु—पु॰ पानी का बूंद ।

सं॰ जलविहङ्ग—पु॰ जलपक्षी ।

सं॰ जलशायिन-(जल+शायिन, शी=सोना) क॰ पु॰ बिष्णु, जलचर ।

सं॰ जलाकर—(जल+आकर) पु॰ सोत, झरना ।

सं॰ जलाञ्चल—(जल+अंचल) पु॰ झरना, नाला, सोता ।

सं॰ जलाशय—(जल=पानी, आशय =जगह) पु॰ तालाब, झील, सरोवर, समंदर ।

प्रा॰ जलेबी—स्त्री॰ एक प्रकार की मिठाई ।

सं॰ जलौका—(जल=पानी, ओक= वास) स्त्री॰ जोंक, जलिका, जलुका ।

सं॰ जल्प—(जल्प=वृथा बकना) वृथाबकवाद, झूठाझगड़ा, वाद ।

सं॰ जल्पक—(जल्प+अक) क॰ पु॰ बावदूक, बाचाल, फ़ज़ूलगो, गप्पी, बकवादी ।

सं॰ जल्पना—(सं॰ जल्पन, जल्प्= बकना) क्रि॰ अ॰ बकना, बोलना, वृथा बकवाद करना, झूठा, झगड़ा करना ।

सं॰ जल्पित—(जल्प्, वृथाबकना) कर्म॰ पु॰ बकतेहुये, बकवाद करते हु ।

प्रा॰ जव } (सं॰ यव) पु॰ एक अ-
जौ } नाज का नाम ।

सं॰जवनिका—(जु=जाना, जिसमें) स्त्री॰ परदा, क़नात, काई ।

प्रा॰जवान-(सं॰युवन्, यु=मिलना) पु॰ तरुण, सोलह बरसकी उमरका ।

प्रा॰जवार- पु॰ समंदर की बाढ़, २ एक प्रकार का अनाज ।

प्रा॰ जवारभाटा—पु॰ समुद्र का उतार चढ़ाव ।

प्रा॰जवासा-(सं॰यवास, यु=मिलना) पु॰ एक प्रकार की घास जिसकी गर्मी के दिनों में टट्टी बनाई जाती हैं और इसपर बरसात का पानी गिरने से सूख जाता है ।

प्रा॰जस—(सं॰ यश) पु॰ कीरति, नामवरी ।

प्रा॰जस-क्रि॰वि॰जैसे, जिसप्रकारसे ।

प्रा॰ जसोदा } (सं॰यशोदा) स्त्री॰
जसुमति } नन्दजीकी स्त्री, श्री कृष्ण की दूसरी मा ।

प्रा॰ जस्त } पु॰ रांगा, एक प्रकार
जस्ता } की धातु ।

सं॰जहक—(ज+हक, हाक=छोड़ना) पु॰ समय, बालक केंचुल गु॰ त्यागी, छोड़नेवाला ।

प्रा॰ जहँ } (सं॰यत्र) क्रि॰वि॰जिस
जहां } जगह ।

प्रा॰जहांतहां—बोल॰ हर एक जगह, सब ठौर ।

प्रा॰जहांकातहा—बोल॰ जहां था वहीं, उसी जगह । [जगह ।

प्रा॰ जहांजहां—बोल॰ जिस जिस

प्रा॰ जहांकहीं—बोल॰ चाहे जहां, किसी जगह ।

प्रा॰जहांतहांफिरना—बोल॰ भटकना, इधर उधर फिरना ।

सं॰जह्नु-पु॰ चन्द्रवंशियोंमेंएकराजर्षि का नाम जो गंगाको उतरने के समय पीगया था (पुराणोंके अनुसार) ।

सं॰जह्नुतनया—(जह्नु+तनया=बेटी) स्त्री॰ गंगा, कहते हैं कि जब जह्नु राजा तप करतेथे तब गंगाकी धारा से व्याकुल हुए तो गंगा को पी गये फिर देवताओं के कहने से पीछे पेट से निकाल दी इसलिये गंगाको जह्नुकी बेटी कहते हैं ।

प्रा॰जाई-(सं॰जाता, जन्=जन्मना) स्त्री॰ बेटी, लड़की, जनी, गु॰ पैदा हुई, २ (सं॰ जाती) चमेली ।

प्रा॰जांघ-(सं॰जङ्घा) स्त्री॰रान, जंघा ।

प्रा॰जांघिया—(जांघ) पु॰ कछनी ।

प्रा॰ जांचना—क्रि॰ स॰ परखना, अटकलना, कसना ।

प्रा॰जांता—(सं॰ यंत्र) स्त्री॰चक्की, पाट, पेषणी ।

प्रा०जाकड़—पु० बन्धक, धरोहर, कोई चीज शर्त पर लेना।

प्रा० जागना—(सं० जागरण, जागृ=जागना) क्रि० अ० नींद से उठना, सचेत होना।

सं० जागर, जागरण—(जागृ=जागना भा० पु० रतजगा, जगौती रात को जागकर परमेश्वर का ध्यान करना।

सं० जागरित, जागरिता, जागरी, जागरूक, जाग्रत—क० पु० जगैया, निद्रोत्थित, सचेत, बेदार।

सं०जाङ्गल-पु०गौरवापक्षी, गरगौटा।

प्रा०जाचक-(सं०याचक)पु०मांगनेवाला, भिखारी, याचनेवाला।

प्रा०जाचना—(सं० याचन) क्रि० स० मांगना, चाहना।

प्रा०जाजम—स्त्री० शतरंजी, दरी, बिछौना।

प्रा०जाट—पु० हिंदुओं में एकजाति।

प्रा०जाड़ा—(सं०जड़, जल्=ढकना) पु० सर्दी, ठंढ, शीतकाल।

सं०जात-(जन्=पैदा होना) गु० जन्मा हुआ, पैदाहुआ, उत्पन्न।

प्रा०जात—(सं० जाति) स्त्री०जाति, वंश, कुल, वर्ण, गोत, २ प्रकार, भेद, गण, वर्ग।

सं०जातक—(जन्=पैदा होना) पु० बेटा, २ बृहज्जातक आदि ज्योतिष् के ग्रन्थ, ३ जातकर्म।

सं० जातकर्म—(जात=जन्म, कर्म=काम)पु०जन्मकेसमयकी एकरीति।

प्रा०जातपांत—(सं० जातिपंक्ति) स्त्री० वंशावली, वंश, उत्पत्ति, पीढ़ी।

सं०जातरूप—पु० सोना, चांदी।

सं०जाति—(जन्=पैदा होना स्त्री० जात, वर्ण, गोत्र, वंश, २ उत्पत्ति।

सं०जातकर्म-पु०नांदीमुखश्राद्धादि।

सं०जाती—(जन्=पैदा होना) स्त्री० चमेली, जावित्री।

सं०जातीफल—पु० जायफल।

सं०जातुधान—(जातु=कभी, धान=पास, अर्थात् जो समय पाकर मनुष्यों के पास आजाता है) पु० राक्षस, असुर।

प्रा० जात्रा—(सं० यात्रा) स्त्री० तीरथकोजाना, देशाटन, सफर, कूच।

प्रा०जात्री—(सं० यात्री) पु०यात्रा करनेवाला, तीरथ को जानेवाला, मुसाफिर।

फ़ा० जान—रूह, जीव, आत्मा।

सं०जानकी—(जनक राजाका नाम) स्त्री० जनक राजाकी बेटी, सीता, वैदेही, श्रीरामचन्द्रकी पत्नी।

प्रा॰जानना-(सं॰ज्ञान,ज्ञा=जानना) क्रि॰ सं॰ समझना, बूझना, पहचानना, जानबूझ के, बोल॰ मन से, जीसे, समझ बूझ कर ।

प्रा॰ जाना-(सं॰ यान,या=जाना) क्रि॰ अ॰ गमन करना, चलना, बीतना, पहुँचना, जारी रहना, चला जाना ।

प्रा॰ जातारहना-बोल॰खोयाजाना,चलाजाना,अदृश्यहोना,अलोप होजाना, मरजाना, चंपत होना, बिलाय जाना ।

प्रा॰ जानेदेना-बोल॰ छोड़देना, क्षमाकरना,कुछध्यान नहीं करना ।

सं॰ जानु-(जन्=पैदा होना) पु॰ घुटना, टखना, टेंबना, ऊरू, जानू ।

सं॰ जाप-(जप्=जपना) कृ॰पु॰जप रटना, माला फेरना, मंत्र जपना ।

सं॰जापक-(जप्=जपना) कृ॰पु॰ जप करनेवाला, जपनेवाला ।

प्रा॰जाम-(सं॰याम)स्त्री॰पहर,दिन रात का आठवां भाग, तीन घण्टा ।

प्रा॰जामन-(सं॰जम्बु,जम्=खाना) पु॰एकपेड़ और उसके फलका नाम।

सं॰ जामाता-(जाया=पत्नी, मा= आदर करना) पु॰ जमाई, बेटी का पति, दामाद ।

[रात, रात्रि ।

प्रा॰ जामिनी-(सं॰यामिनी)स्त्री॰

प्रा॰ जाम्बवन्त-(सं॰ जाम्बुवन्त, जाम्बु=नापन, वत्=वाला) पु॰ रीछों का राजा जो श्रीरामचन्द्र का मित्र और श्रीकृष्णका ससुरथा ।

सं॰ जाम्बूनद-पु॰ सुवर्ण, स्त्री॰ जाया, विवाहिता स्त्री ।

प्रा॰ जायफल-(सं॰ जातिफल) पु॰ एकतरह का गर्म मसाला ।

प्रा॰ जाय-क्रि॰ वि॰ वृथा ।

सं॰ जाया-(जन्=पैदा होना)स्त्री॰ भार्या, पत्नी, ब्याही हुई स्त्री ।

सं॰जायानुजीवी-(जाया + अनुजीवी) पु॰ नट, वेश्यापति, भडुआ, बकपक्षी ।

सं॰ जायापती-दंपती, स्त्री पुरुष ।

सं॰ जार-(जृ=दुबला होना, अर्थात् स्त्री के सच्चे पतिका प्यार घटानेवाला) पु॰ यार, दूसरा पति, उपपति ।

सं॰ जारज-(जार=यार, जन्=पैदा होना) पु॰ जार से पैदा हुआ लड़का, हरामी बेटा ।

प्रा॰ जारना-(सं॰ ज्वलन) क्रि॰ स॰ जलाना, सुलगाना, भड़काना, आंच लगाना ।

सं॰ जाल-(जल्=ढकना, घेरना) स्त्री॰ फंदा, पाश, २ जालीदार खिड़की, झरोखा, ३ माया इन्द्रजाल, जादू, ४ समूह ।

सं॰जालक-(जाल + अक)कृ॰पु॰ फ़रेबी, मक्कार, २ मछली का जाल

स्त्री० ३ जाली लोट कपड़ा, ४ शिलाजीत, ५ जोंक, ६ राँड़, रंडा, ७ झिलम, बखतर, ८ व्याध, बहेलिया, मल्लाह। [मथनी, रयी।
सं० जालगणिका—स्त्री० मथेनी,
प्रा० जाला—(सं० जाल, जल्=ढकना) पु० मकड़ी का फांदा २ मोतियाबिंद, आंख की बीमारी।
प्रा० जाली—(सं० जाल) स्त्री० एक तरहका कपड़ा, २ झंझरी, जालीदार खिड़की, झरोखा।
सं० जाल्म—पु० जार, धूर्त, पामर, अधम, क्रूर, ढीठ।
प्रा० जावक—(सं० यावक, यु=मिलना) पु० महावर, अलता।
प्रा० जावित्री, **जायपत्री** } (सं० जातीपत्री) स्त्री० एक प्रकार का गर्म मसाला।
प्रा० जासु—(सं० यस्य) सर्वना० जिस का, जिस से॥
प्रा० जाहि—सर्वना० जिस को।
सं० जाह्नवी—(जह्नु एक राजर्षिका नाम) स्त्री० गंगा, भागीरथी, (जह्नुतनया देखो)।
सं० जिगमिषा (गम्=जाना) भा० स्त्री० गमनेच्छा, जानेका इरादा।
सं० जिगीषा—(जि=जीतना) भा० स्त्री० जीतने की इच्छा, जय की इच्छा, हिंसका।
सं० जिघत्सा—(अद्=भक्षणकरना) भा० स्त्री० भोजनेच्छा, खाने का इरादा।
सं० जिघत्सु—(अद्=खाना) क० पु० बुभुक्षु, भोजन करनेकी इच्छा करनेवाला।
सं० जिघांसा—(हन्=मारना) भा० स्त्री० मारने की इच्छा करना।
सं० जिघांसु—(हन्=मारना) क० पु० मारने की इच्छा करनेवाला।
सं० जिज्ञासा—(ज्ञा=जानना) भा० स्त्री० जाननेकी इच्छा, पूछना, प्रश्न।
सं० जिज्ञासु—क० पु० पूछनेवाला।
प्रा० जित—(सं० यत्र) क्रि० वि० जहां, जिधर, २ जीतागया, हाराहुआ।
सं० जितेन्द्रिय—(जित=जीतली वा वश करली, इंद्रिय=इंद्रियां, जिस ने) गु० इन्द्रियजित्, जिसने इन्द्रियों को वश में कर लिया हो, ऋषि, मुनि, यती, संन्यासी।
सं० जिन—(जि=जीतना) पु० बुद्ध, जैनियों का देवता, जैनमत में २४ जिन हुए बतलाते हैं।
फ़ा० जिन्स—जात, क़ौम।
प्रा० जिमाना—(सं० जेमन, जिम्=खाना) क्रि० स० खिलाना। [प्रकार।
प्रा० जिमि—क्रि० वि० जैसे, जिस

प्रा० जिय
जियरा } (सं० जीव) पु० जीव, प्राण, आत्मा, रूह ।

प्रा० जियाना (सं० जीवन) क्रि० स० जिलाना, प्राणदेना, २ पालना, पोषना।

प्रा० जिहिं—सर्वना० जिनको, जिस को, जिसके, जो ।

सं० जिह्वा—(लिह्=स्वाद लेना) स्त्री० रसज्ञानइन्द्री, जीभ, रसना ।

प्रा० जी (सं० जीव) पु० जीव, प्राण, आत्मा, जिय, २ मन, चित्त ।

सं० जिह्वल—क० पु० चटोरा, आस्वादक, जिभोर ।

प्रा० जीउठाना—बोल० मन खींच लेना, किसीसे मित्राई छोड़देना ।

प्रा० जीबुराकरना—बोल० जीमिचलाना, वमन करना, या किया चाहना, रद्द किया चाहना ।

प्रा० जीबढ़ाना—बोल० मनमें किसी चीजकी चाह पैदा होना, जी में उत्साह होना, हौसिला होना ।

प्रा० जीबिखरना—बोल० अचेतहोना, मूर्च्छित होना, मूर्च्छा आना ।

प्रा० जीभरजाना—बोल० सन्तोष होना, मन तृप्त होजाना, आसूदा होना, अघाजाना ।

प्रा० जीआजाना—बोल० किसी चीज पर अचानक मन लग जाना, किसी से प्रसन्न होना ।

प्रा० जीभरआना—बोल० मन में दयाका उपजना, दया हर्ष अथवा शोच से मुँहसे बोल न निकलना ।

प्रा० जीबहलाना—बोल० मनबहलाना ।

प्रा० जीपाना—बोल० किसीके स्वभाव को जानना ।

प्रा० जीपानीकरना—बोल० सताना, दुखदेना, खिझाना, पीड़ादेना ।

प्रा० जीपरखेलना—बोल० अपने को जोखिम में डालना, जी देने पर उद्यत होना ।

प्रा० जीपसीजना
जीपिघलना } बोल० दया आना, मोह आना ।

प्रा० जीपकड़ाजाना—बोल० शोच में होना, उदास होना ।

प्रा० जीफटजाना—बोल० दिलटूट जाना, निराश होना ।

प्रा० जीफिरजाना—बोल० किसी चीज़को नहीं चाहना, सन्तुष्टहोना, तृप्तहोना, किसी चीज से अघाजाना ।

प्रा० जीजलना—बोल० मनमें दुखपाना, कुढ़ना ।

प्रा० जीजलाना—बोल० सहाय करना, कृपा करना, आप दुख सहकर दूसरेका उपकार करना, २ सताना खिजाना, दिक दुखाना, कलपाना ।

प्रा० जीचाहना—बोल० किसी ची-

जकी इच्छा करना, दिललल चाना, मनमें किसी की चाह पैदा होना।

प्रा० जीछिपाना, जीचुराना—बोल० किसी कामको सुस्ती से करना, असावधानी करना।

प्रा० जीचलाना-बोल० किसी कामको वीरता से करना।

प्रा० जीचलना—बोल० चाहना, इच्छा करना। [बचाना।

प्रा० जीदान—बोल० बचाना, मरनेसे

प्रा० जीदानकरना—बोल० किसी के प्राण बचाना, बड़े दोषको क्षमा करना, जान बख्श देना।

प्रा० जीधड़कना— बोल० डर से अथवा शोच से दिल धुकड़ पुकड़ करना, दिल कांपना।

प्रा० जीडूबजाना—बोल० अचेत होना, मूर्च्छा आना, जी बिखरना, ग़शआना, बेहोश होना।

प्रा० जीरखना-बोल० झटपट प्रसन्न होजाना, प्रसन्नकरना, दिल खुशकरना।

प्रा० जीसे उतर जाना—बोल० नहीं चाहना, दिलसे गिरना।

प्रा० जीसे मारना—बोल० मारडालना, जानसे मारडालना।

प्रा० जीकरना, जीहोना—बोल० चाहना, किसी चीज की चाह मनमें पैदा होना।

प्रा० जीखोलकेकुछकरना-बोल० किसी काम को चाह से अथवा प्रसन्नता से करना।

प्रा० जीपरआना—बोल० मुश्किल पड़ना, जी क्लेश में होना।

प्रा० जीघटजाना—बोल० किसी चीज से मन हट जाना, घिनाना, अवज्ञा करना, उदास होना।

प्रा० जीलगना—बोल० किसी से प्यार करना, किसीकी चाह होना।

प्रा० जीलगाना—बोल० किसी चीज़ पर मन लगाना, किसी की चाह मन में पैदा होना।

प्रा० जीलेना—बोल० किसीके मन की बातको जानना, २ मारडालना।

प्रा० जीमारना—बोल० किसी की इच्छा को तोड़ना, निराशकरना, अप्रसन्न करना।

प्रा० जीमिलाना—बोल० किसीसे मित्राई करना, मुहब्बत बढ़ाना।

प्रा० जीमेंआना-बोल० कोई बात सूझना, याद पड़ना।

प्रा० जीमेंजलजाना—बोल० डाह से दुख पाना।

प्रा० जीमेंजीआना—बोल० सुख पाना, चैन होना, प्रसन्न होना।

प्रा० जीमेंघरकरना—बोल० मन भाना, किसीको बहुत चाहना।

प्रा० जीनिकलना—बोल० मरना,

२ बेकल होना, ३ बहुत डरना ।

प्रा० जीहारना-बोल० हिम्मत हारना, घबराना, साहस नहीं रखना, निराश होना ।

प्रा० जीहटजाना-बोल० मन हट-जाना, जी घट जाना ।

प्रा० जी-अव्यय० हां, २ साहिब आप ।

प्रा० जीत (सं० जित, जि=जीतना) स्त्री० विजय, जय, फ़तह ।

प्रा० जीतना-(सं० जि=जीतना) क्रि० स० जयकरना, पराजय करना, हराना ।

प्रा० जीतब-(सं० जीवन वा जीवितव्य) पु० जीना, जीवन, ज़िंदगी ।

प्रा० जीता-(जीना) गु० जीता हुआ, चलता, चैतन्य, २ अधिक, ऊपर ।

प्रा० जीतेजी-बोल० जबतक जीता है ।

प्रा० जीना-(सं० जीवन) क्रि० अ० जीता रहना ।

प्रा० जीभ-(सं० जिह्वा) स्त्री० जिह्वा रसना, ज़बान ।

प्रा० जीभबढ़ाना-बोल० बातें बनाना, बकबक करना, निंदा करना ।

प्रा० जीभपकड़ना-बोल० चुप होना वा करना, २ किसी की बात काटना, ३ छोटे२ दोष निकालना ।

प्रा० जीभचाटना-बोल० बड़ी लालसा करना, जी ललचाना, बहुत चाहना ।

प्रा० जीभनिकालना-बोल० बहुत ही बहुत थकजाना या प्यासा होना, हाँफना ।

प्रा० जीभी-(जीभ) स्त्री० जीभ साफ़ करने की चीज़ ।

जीमना } (सं० जेमन, जिमृ=
जेवना } खाना) क्रि० स० खाना, भोजन करना ।

प्रा० जीमूत-पु० मेघ, २ पर्वत, ३ मोथा, ४ दण्डकारण्य, ५ शेष ६ धूम, ७ इन्द्री ।

प्रा० जीरा-(सं० जीर, ज्या=पुराना होना) पु० एक मसाले का नाम ।

सं० जीर्ण-(जृ=बूढ़ा होना, पुराना होना) पु० बूढ़ा आदमी, गु० पुराना मुर्झायाहुआ, पचाहुआ ।

सं० जीर्णोद्धार-(जीर्ण+उद्धार) मरम्मत, लेसपोत ।

प्रा० जील-स्त्री० गाने में ऊंचा स्वर तीखी राग ।

सं० जीव-(जीव्=जीना) पु० प्राण जी, आत्मा, २ जीवधारी जन्तु, जानवर, ३ जीविका ।

सं०जीवक–(जीव्+अक) क०पु० सेवक, किंकर, कृपण ।

सं० जीवन–पु० जीना, जीतव, २ जीविका, वृत्ति, ३ पानी ४ बेटा, पुत्र ।

सं० जीवनचर्य्या– जीवनवृत्तान्त, हाल, सवानह उम्री ।

सं०जीविका–स्त्री०जीने का उपाय, आजीविका, वृत्ति, निवाह, रोजी ।

सं० जीवित } गु०जीताहुआ, जीता, जीवी } पु० जीना, जीवन, वर्तमान ।

प्रा० जीह } (सं० जिह्वा) स्त्री० जीहा } जीभ, रसना ।

प्रा०जुआरी } (सं०द्यूतकारी) क० जुवारी } पु०जूआखेलनेवाला ।

प्रा०जुग (सं० युग) पु० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि ये चार, जुग कहलाते हैं, समय, २ जोड़ा ।

प्रा०जुगानजुग–(सं० युगानुयुगः युग,+अनु+युग) बोल० कई युग, कई बरस, बहुत बरसतक ।

प्रा० जुगजुग–बोल० सदा, नित, सर्वदा, हमेशह ।

प्रा० जुगत–(सं०युक्ति) स्त्री० चतुराइ, निपुणता, बनावट, हिकमत ।

प्रा०जुगनी–स्त्री०चमकनेवालाकीड़ा ।

प्रा० जुगल–(सं० युगल) गु० दो, जोड़ा ।

प्रा० जुगवना-क्रि०स० देखना, यत्न करना, खबरलेना, रखना, रक्षाकरना ।

प्रा० जुगालना } क्रि० अ० उगाजुगालीकरना } लना, पागुराना, राउथ करना । [रोमंथ ।

प्रा० जुगाली–स्त्री० पागुर, उगाल,

सं० जुगुप्सा- (गुप्=निन्दाकरना) भा० स्त्री० निन्दा, बुराई, असूया ।

सं० जुगुप्सित–स्पं० पु० निन्दित, बदनाम ।

प्रा० जुझाऊ–(सं० युद्धीय, लड़ाई का) गु० लड़ाई का,–जुझाऊबाजा, लड़ाई का बाजा ।

प्रा० जुझार–(सं० योद्धा) क०पु० लड़ाका, वीर, भट, लड़नेवाला बहादुर ।

प्रा० जुटना-(सं०युक्त, युज्=मिलना) क्रि० अ० भिड़ना, मिलना, लड़ने, को सामने होना ।

प्रा०जुड़ना–(सं०जुड्=जुड़ना) क्रि० अ० मिलना, सटना ।

प्रा० जुड़ाना } क्रि० स० छाती जुराना } ठंढी करना, ठंढा होना, २ मिलाना, जोड़ना ।

प्रा० जुन्हरी–स्त्री०ज्वार, एक प्रकार का अनाज । [अनाज ।

प्रा० जुवार–स्त्री० एक प्रकार का

प्रा० जुहार—पु० सलाम, रामराम, पालागन, दण्डवत्, नमस्कार ।

प्रा० जूआ—(सं० द्यूत) स्त्री० पांसा खेलना, दांव लगाना ।

प्रा० जूआ, जूवा—(सं० युग) पु० एक लकड़ी की चीज़ जो बैलों के गले में बांधते हैं, जूआट ।

प्रा० जूं—स्त्री० चिल्लड़, ढील, चीलहड़ ।

प्रा० जूझना—(सं० युध्=लड़ना) क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, २ लड़ाई में मरना ।

प्रा० जूझमरना—बोल० लड़ाई में लड़ के मरना ।

सं० जुष्ट—(जुष्=सेवाकरना) म्म० पु० जूंठा, सेवित, सेवा किया गया ।

सं० जूट—(जट्=बांधना) पु० केशों का बंध, जटाका जूड़ा, २ समूह ।

प्रा० जूड़ा—(सं० जूट) पु० बंधे हुए बाल, २ (जड़) ठंढ ।

सं० जुड़ित, जुड़िया—(जुड्+इत) म्म० पु० मिलित, तौअम, दो लड़के जुड़े हुए ।

प्रा० जूड़ी—(सं० जड़=जाड़ा) स्त्री० ज्वर, शीतज्वर, कंपज्वर, जाड़ा, लरज़ा ।

प्रा० जूता, जूती—पनही, पगरखी, जोड़ा, चर्मपादुका ।

प्रा० जूहा—(सं० यूथ) पु० समूह, झुंड ।

प्रा० जूही, जुही—(सं० यूथी, यु=मिलना) स्त्री० एक फूलका नाम ।

सं० जृम्भ, जृम्भा, जृम्भण—जृम्भ = जम्हाना, भा० स्त्री० जम्हाई, आलस्य ।

प्रा० जेट—स्त्री० ढेर, ढेरी, समूह, परत ।

प्रा० जेठ—(सं० ज्येष्ठ) पु० पतिका बड़ा भाई, २ एक महीने का नाम ।

प्रा० जेठा—(सं० ज्येष्ठ) गु० बड़ा, पहलौठा, २ पु० कुसुम का बहुत अच्छा और गाढ़ा रंग ।

प्रा० जेठानी, जिठानी—(जेठ) स्त्री० जेठ की स्त्री ।

प्रा० जेठीमधु—(सं० यष्टीमधु यष्टी=तांत, मधु=शहद) स्त्री० मुलहठी, एक दवाई ।

प्रा० जेठौत—(जेठ) पु० जेठका बेटा ।

प्रा० जेब—स्त्री० खलीता, पाकट ।

प्रा० जेबकतरा—पु० उचक्का, जेब कतरनेवाला ।

सं० जेता—(जि=जीतना) क० पु० विजयी, जीतनेवाला, फ़तह ।

सं० जेमन—(जिम्=खाना) भा० पु० भोजन, खाना, भोज्यपदार्थ, खाने की वस्तु ।

प्रा० जेवड़ी, जेवरी—स्त्री० रस्सी, डोरी ।

प्रा० जेहर—पु० स्त्रियों के पहनने का एक गहना ।

प्रा० जै—गु० जितना।

प्रा० जै—(सं० जय) स्त्री० जीत, विजय, जय, फ़तेह।

प्रा० जैजैकार—(सं० जयकार) पु० आनन्द, उत्सव, हर्ष, जीत, विजय, जय, बोलबाला।

प्रा० जैजैकारकरना—बोल० जय का शब्द करना।

सं० जैन—(जिन अर्हत,बुध) पु० जिनधर्मको माननेवाला, बौद्धमती।

प्रा० जैनी—(सं० जैन) रू० पु० जैन मतकामाननेवाला, श्रावक, सरावक।

प्रा० जैसा—(सं० यादृश, यत्=जो, दृश्=देखना) क्रि० वि० जिस तरह, जिस प्रकार।

प्रा० जैसाचाहिये—बोल० यथोचित, ठीक।

प्रा० जैसाकातैसा—बोल० ठीक, जैसा चाहिये, ज्यों का त्यों।

प्रा० जैहैं—(व्रजभाषा) क्रि० अ० जायगा, जावेगा, जावेंगे। [जब।

प्रा० जों—क्रि० वि० जैसे, जिसतरह,

प्रा० जोंतों }
जोंतोंकरके } बोल० किसी तरहसे।

प्रा० जोंकातों—बोल० जैसा का तैसा, जैसाथा वैसाही, ठीक वैसाही।

प्रा० जोंक—(सं० जलौका) स्त्री० जल का कीड़ा, जलौका।

प्रा० जोंहीं—क्रि० वि० जभी, तुरंत।

प्रा० जोखना—क्रि० स० तौलना, नापना।

प्रा० जोखिम }
जोखों } स्त्री० बीमा, २ डर, चिंता, शङ्का कठिन काम।

प्रा० जोखिमउठाना—बोल० अपने तईं चिंता में डालना, कठिन काम के करने का साहस करना।

प्रा० जोट }
जोटा } (सं० जोड़, जुड्=मिलाना) पु० जोड़ी, साथी, सम, बराबरी के, गु० बराबर।

सं० जोड़—(जड्=बांधना, मिलाना) पु० मेल, मिलाव, इकट्ठा, मीज़ान, टोटल, २ गांठ, संधि।

प्रा० जोड़देना—बोल० गिनना, हिसाब करना, मीज़ान देना, ठीक करना, जोड़ना।

प्रा० जोड़तोड़—बोल० बनावट, बंधान, हिकमत, जुगत, २ गांठ।

प्रा० जोड़जाड़—बोल० बचत, बचाव, थोड़ा थोड़ाकरके इकट्ठा करना।

प्रा० जोड़ना }
जोरना } (स० जुड्=मिलाना) क्रि० स० मिलाना, इकट्ठा करना, २ गांठना, थेगली लगाना, पैवन्द लगाना, ३ गिनना, हिसाब करना, मीज़ान देना, जोड़ देना, ४ बनाना, लगाना, चिपटाना, साटना, पीछे लगा देना।

प्रा० जोड़ा (सं० जुड्=जोड़ना) पु०

दो मनुष्य अथवा दो चीज़, युग्म, २ जूता, ३ कपड़े का जोड़ा।

प्रा० जोतना—(सं० योजन, युज् =मिलाना) क्रि० स० जुआमें लगाना, हल जोतना, चासना।

प्रा० जोति } जोत } (सं० ज्योति) स्त्री० चमक, उजाला, प्रकाश, किरन, तेज, दीप्ति, रोशनी, दीपक का प्रकाश, २ दृष्टि, दीठ।

प्रा० जोतिस्वरूप—(सं० ज्योतिः स्वरूप) गु० आप से प्रकाशित, दीप्तिमान्, प्रकाशरूप, परमेश्वर का गुण वा विशेषण।

प्रा० जोतिष—(सं० ज्योतिष्) पु० ग्रह नक्षत्र आदि जानने का शास्त्र।

प्रा० जोतिषी } जोतषी } (सं० ज्योतिषिक) क० पु० जोतिष विद्या जाननेवाला, जोषी, गणक, दैवज्ञ, नजूमी।

प्रा० जोती—स्त्री० तराजू के पलड़े की रस्सी।

प्रा० जोधा—(सं० योधा) पु० लड़ाका, बीर, बहादुर, भट, जुझार।

प्रा० जोना } जोवना } क्रि० स० देखना, चितवना, ताकना।

प्रा० जोबन (सं० यौवन) पु० जवानी, तरुणाई।

प्रा० जोय } जोरू } (सं० जाया) स्त्री० पत्नी, भार्या, स्त्री, लुगाई।

प्रा० जोरी } जोड़ी } (सं० युज्=मिलना) स्त्री० जोड़ा, युगल, युग्म- दो।

सं० जोषित् } जोषिता } (जुष्=प्रसन्न करना, तृप्त करना) स्त्री० नारी, लुगाई।

प्रा० जोषी } जोसी } (सं० ज्योतिषी) पु० ज्योतिषी, ब्राह्मणोंकी एकजाति।

प्रा० जोहना—क्रि० स० बाट देखना, बाट निहारना, अपेक्षा करना, देखना, खोजना, ढूंढना।

प्रा० जोही—गु० खोजी, ढुंढैया, मुतलाशी।

प्रा० जौलौं } जौलग } क्रि० वि० जबतक।

प्रा० जौ—(सं० यव) पु० जव एक प्रकार का अनाज।

प्रा० जौन—(सं० यद् वा यः जो) सर्वना० जो, जिस।

प्रा० जौनार } जेवनार } (सं० जेमन) स्त्री० भोजन, भोज, खाना, उत्सव, अपने भाई बंध अथवा मित्रों को खिलाना।

सं० ज्ञात—(ज्ञा=जानना) म्र्म० पु० जाना हुआ, समझा हुआ, जाना गया, विदित।

सं० ज्ञाता—(ज्ञा=जानना) क० पु० जनैया, वाकिफ़।

सं० ज्ञाति—(ज्ञा=जानना) पु० पिता, बाप, २ सम्बन्धी, जातभाई ।

सं० ज्ञान—(ज्ञा=जानना) पु० जानना, बोध, बुद्धि, समझ, विज्ञता ।

सं० ज्ञानवान्, ज्ञानी (ज्ञान) गु० बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान्, विज्ञ, विचारवान् ।

सं० ज्ञानवापी—ज्ञान, वापी=बावली) स्त्री० एक बावली का नाम जो बनारस में विश्वेश्वर के मन्दिर में है ।

सं० ज्ञानेन्द्रिय—(ज्ञान+इन्द्रिय) स्त्री० इन्द्रियां जिनसे देखने, सुनने, सूंघने, स्वाद लेने और छूने आदि का ज्ञान होताहै अर्थात् आंख, कान, नाक, जीभ, त्वचा, अर्थात् शरीर पर का चमड़ा अन्तःकरण, मन ।

सं० ज्ञापक—(ज्ञप्=जनाना) क० पु० जतलानेवाला, बतलानेवाला, आज्ञादेनेवाला ।

सं० ज्ञापन-(ज्ञप्+अन, ज्ञप्=जनाना) भा० पु० जनाना, विदित करना, २ निदेश, हुक्म ।

सं० ज्ञापित, ज्ञाप्य, ज्ञेय कर्म० पु० जानाहुआ, जानने योग्य ।

सं० ज्या— (ज्या=पुरानाहोना, वा बूढ़ा होना) स्त्री० मा, माता, २ पृथ्वी, धरती, ३ धनुष का चिल्ला ।

सं० ज्येष्ठ—(वृद्ध, यहां वृद्ध को ज्या आदेश होजाता है) गु० बड़ा प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, जेठा, पहलौठा ।

सं० ज्येष्ठा—(ज्या=बूढ़ा वा बड़ा वा पुराना होना) स्त्री० अठारहवां नक्षत्र, २ बिचली अंगुली, ३ गंगा ।

सं० ज्येष्ठ—(ज्येष्ठा) पु० जेठ का महीना जिसकी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होता है और पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहताहै ।

प्रा० ज्यों—क्रि० वि० जैसे ।

प्रा० ज्योंकात्यों—बोल० ठीक, वैसाही, ठीक २ ।

सं० ज्योतिः(द्युत=चमकना) भा० स्त्री० जोत, उजाला, प्रकाश, चमक, दीप्ति, प्रभा ।

सं० ज्योतिश्शास्त्र (ज्योतिस्+शास्त्र) पु० ग्रह नक्षत्र आदि की चाल जानने का शास्त्र, ज्योतिष्, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि जानने का शास्त्र, पंचाङ्गशास्त्र ।

सं० ज्योतिर्विद्—(ज्योतिः+विद्, विद्=जानना) क० पु० ज्योतिसी, नजूमी ।

सं० ज्योतिष—(ज्योतिः) पु० ज्योतिष शास्त्र, ज्योतिश्शास्त्र ।

सं० ज्योत्स्ना—(द्युत्=चमकना) स्त्री० चांदनी, चन्द्रिका, चांदकी किरण ।

सं० ज्वर—(ज्वर्=बीमार होना) पु० तप, ताप, ज्वर ।

सं० ज्वराग्नि (ज्वर+अग्नि) पु० तप की गरमी ।

सं० ज्वलन—(ज्वल्=जलना, चमकना) भा० स्त्री० जलन, तपन, दाह-२ आग ।

सं० ज्वलित—(ज्वल्=चमकना) कृ० पु० प्रकाशित, जलता हुआ ।

प्रा० ज्वार—स्त्री० एक प्रकार का अनाज ।

सं० ज्वाला—(ज्वल्=चमकना) स्त्री० आंच, लौं, लपट, लूका, चमक ।

सं० ज्वालामुखी (ज्वाला=आग का लूका, मुख=मुँह) स्त्री० वह जगह जहां से आग निकलती है, आग का पहाड़, २ देवी, अम्बिका, दुर्गा ।

झ

सं० झ—पु० बृहस्पति, २ इन्द्र, ३ शब्द ध्वनि, ४ नैपथ्य, ५ झंकोर, ६ मिलाप, ७ स्थिति ।

सं० झङ्कार—(झम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० झंझनाहट, झंझना होने का शब्द ।

प्रा० झंखना—क्रि० अ० बड़बड़ाना, चड़चड़ाना, टैं टैं करना, बकना, २ पछताना, बिलपना ।

प्रा० झंखाड़—पु० बिनपत्तेका पेड़ ।

प्रा० झंगा } पु० अंगा, कुरता, ऊ-
झगा } पर पहननेका कपड़ा ।

प्रा० झंझट—पु० घबराहट, झगड़ा, रगड़ा ।

प्रा० झंझनाना—(सं० झणत्कार, झणत=ऐसा शब्द, कृ=करना) क्रि० अ० ठनठनाना, बाजना ।

प्रा० झंझरी—स्त्री० जाली, झरोखा ।

प्रा० झंडा—पु० निशान, ध्वजा, पताका, फरहरा ।

प्रा० झंय }
झंव } स्त्री० मूर्च्छा ।

प्रा० झक—स्त्री० कोप, क्रोध, रिस, सनक, २ लहर ।

प्रा० झकमारना—बोल० वृथा काम करना, निरर्थक काम करना, यह बोल० दूसरे की हलकाई जताने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० झकझोरी—स्त्री० छीनाछीनी, झपटा झपटी, खैंचा खैंची, लूट पाट ।

प्रा० झकाझक—गु० झलाझल, जगमग, २ सुथरा, साफ़ ।

प्रा० झकोरना—क्रि० स० हिलाना, कंपाना, झकोरादेना, झोका देना ।

प्रा० झकड़—(सं० झंकार) पु० आंधी, चौवाई, तूफ़ान, हवा का बौंडल ।

प्रा० झकी—गु० वृथा बकवाद करनेवाला, बकी, प्रलापी, लहरी, तरंगी ।

प्रा० झखना—क्रि० अ० बड़बड़ाना, ठींकना, बकना ।

प्रा० झगड़ना—क्रि० अ० लड़ना, लड़ाई करना, बखेड़ा करना, बाद विवाद करना, कलह करना ।

प्रा० झगड़ा—पु० लड़ाई, रगड़ा, बखेड़ा, विवाद ।

प्रा० झगड़ालू—(झगड़ना)क्र० पु० लड़नेवाला, लड़ाक, लड़ाईखोर, झगड़ेल, झगड़ा करनेवाला ।

प्रा० झगुला—पु० बालक के पहनने का कुरता, चोला ।

प्रा० झझू—पु० लंबेबाल ।

सं० झञ्झा—स्त्री० वायु, वर्षाऋतु, झकोरा, झाँझ ।

सं० झंझानिल—(झंझ+अनिल) पु० वर्षाऋतु, ग्रीष्मका वायु, झकोरा ।

प्रा० झंझट—पु० बखेड़ा, झगड़ा ।

प्रा० झट—(सं० झटिति, झट=उलझना, मिलना) क्रि० वि० तुरन्त, शीघ्र, उसीदम, जल्दी ।

प्रा० झटसे } बोल० तुरन्त, शीघ्र,
झटपट } उसी दम, जल्दी, शीघ्रता से ।

प्रा० झटकना—क्रि० स० खैंच लेना, खसोटना, क्रि० अ० दुबला होना, २ हिलना ।

प्रा० झटका—पु० झटके से मारने का शब्द, २ खिंचाव, खींच, गु० झटके से मारा हुआ ।

झटिति—अव्य० शीघ्र, जल्दी ।

प्रा० झड़—स्त्री० झड़ी, २ आंच, ३ एक तरह का ताला ।

प्रा० झड़ना—क्रि० अ० गिरना (जैसे पेड़से फल अथवा पत्ते) टपकना, चूना, २ बाजना (जैसे नौबत) ।

प्रा० झड़पना—क्रि० अ० लड़ना, चिल्लाना, झपटा झपटी करना, झड़पा झड़पी करना ।

प्रा० झड़बेर पु० } (झाड़झाड़ी
झड़बेरी स्त्री० } सं० बदरीबेर)
बेर की झाड़ी, बेर का पेड़ ।

प्रा० झड़ी—स्त्री० लगातार मेह बरसना, बराबर बरसते रहना ।

प्रा० झप—क्रि० वि० झट, तुरन्त ।

प्रा० झपसे—बोल० झटपट, झटसे,

प्रा० झपकना—क्रि० स० झलना, पंखा झलना, क्रि० अ० लपकना, झपटना, २ पलक मारना, उंघाना ।

प्रा० झपकी—स्त्री० झपट, लपक, २ उंघाई, पलकमारना, पलक लगाना ।

प्रा० झपट—भा० स्त्री० छीन खसो-

ट, खैंचा खैंची, २ लपक, उछल ।

प्रा० झपटलेना—बोल० छीनलेना।

प्रा० झपट्टा—बोल० धावा, चढाव, लपक, ३ छीन, खसोट ।

प्रा० झपट्टामारना—बोल० झपट लेना, छीनलेना ।

प्रा० झपाझपी—स्त्री० उतावली, हड़बड़ी ।

प्रा० झपास—स्त्री० फूही, फुहार, झीसी, झड़ी ।

प्रा० झब्बा—पु० फूंदा, लटकन, गुच्छा ।

सं० झम—(झम्=खाना) क० पु० भोक्ता, खानेवाला, भोजन ।

प्रा० झमझम } झमाझम } क्रि० वि० लगातार ।

प्रा० झमझमाना—क्रि० अ० चमकना, झलकना ।

प्रा० झमरझमर—क्रि० वि० बूंद बूंद से ।

प्रा० झर—स्त्री० झड़ी, मेह का लगातार बरसना, २ आंच, लूका ।

प्रा० झरना—(सं० झरण) पु० सोता, चश्मा, २ झरनी, कर्छनी, क्रि० अ० चूना, टपकना, बहना, जारी होना, २ गिरना (जैसे फल पत्ते आदि) ।

प्रा० झरोखा—पु० जाली, खिरकी मोखा, दरीची ।

सं० झर्झरा—स्त्री० वेश्या, पतुरिया ।

सं० झर्झरी—स्त्री० खंजरी, डफुली ।

प्रा० झल—(सं० ज्वल) स्त्री० ज्वाला, २ क्रोध ।

प्रा० झलक—स्त्री० चमक, उजाला, जगमगाहट ।

प्रा० झलकना—(सं० ज्वलन क्रि० अ० चमकना ।

प्रा० झलकी—स्त्री० चमक, दमक, कटाक्ष ।

प्रा० झलझलाना—(सं० ज्वलन) क्रि० अ० चमकना, झलझल करना, २ क्रोध करना, टीसना ।

प्रा० झलझलाहट—स्त्री० चमक, झलक ।

प्रा० झलना—क्रि० अ० झपकना, पंखा चलाना वा हांकना ।

प्रा० झलाझल—(सं० ज्वलन) गु० चमकीला, जगमगा ।

सं० झष—(झष्=मारना) पु० मच्छ, मकरमच्छ, बड़ीमछली, पाठीन ।

सं० झषकेतु—(झष = मकरमच्छ, केतु=झंडा अर्थात् जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है) पु० कामदेव ।

प्रा० झांकना—क्रि० स० छिपकर देखना, ढाकना, निहारना, कनखी से देखना ।

प्रा० झांख—पु० बारहसिंगा, हरिन।

प्रा० झांझ—(सं० झर्झ, झर्झ=शब्द करना) पु० मंजीरा, एक तरह का बाजा, २ क्रोध, गुस्सा, चिड़चिड़ाहट।

प्रा० झांपना—क्रि० स० ढकना, बंद करना, तोपना, ढापलेना।

प्रा० झांवली—स्त्री० चोंचला, हाव भाव, नखरा।

प्रा० झाऊ—(सं० झावु, झ=ऐसा शब्द, वा लेजाना, बहना) पु० एक वृक्ष का नाम।

प्रा० झाग—पु० फेन, गाज।

प्रा० झाखा—पु० झखना, रोना, [खीझना।

प्रा० झाझा—पु० गांजा भंग नशेकी चीज़।

प्रा० झाड़—पु० झाड़ी, कंटेलावन, २ एक प्रकार की आतिशबाजी, ३ बत्तियों का झाड़, पंजशाखा, ४ जुल्लाव, ५ लगातार मेह, झाड़ी।

प्रा० झाड़बांधना—बोल० लगातार मेह बरसना।

प्रा० झाड़झंखाड़—बोल० कटीली और सूखी झाड़ी।

प्रा० झाड़खण्ड—(झाड़=झाड़ी, सं० खण्ड=टुकड़ा) पु० वन, जङ्गल, बैजनाथ महादेव का वन।

प्रा० झाड़न—(झाड़ना) स्त्री० बुहारना, कूड़ा कचरा, कुर्कुट, २ असबाब पोंछने का मोटा कपड़ा।

प्रा० झाड़ना—क्रि० स० बुहारना, झाड़ू लगाना, २ कूंची मारना या कूंची से कपड़ा साफ़करना, साफ़करना, ३ चकमक से आग झाड़ना।

प्रा० झाड़पछाड़करदेखना—बोल० जांचना, परखना, खूबदेखना।

प्रा० झाड़नाफूंकना—बोल० भूत उतारना, मंत्र पढ़ना, टोटका करना।

प्रा० झाड़डालना } बोल० साफ़
झाड़देना } करडालना बुहारडालना।

प्रा० झाड़झटक—बोल० झाड़ना बुहारना।

प्रा० झाड़झूड़—बोल० झाड़न, बुहारन, झाड़, झटक, २ ऊपरी पैदा, दस्तूरी, ३ जंगल, झाड़ी।

प्रा० झाड़न्त—क्रि० वि० सबकेसब, संपूर्ण रूप से।

प्रा० झाड़ा—पु० दस्त, मलका त्याग।

प्रा० झाड़े झपटे जाना—बोल० पाखानेजाना, झाड़े फिरना।

प्रा० झाड़ाझपटालेना—बोल० ढूंढ़ना, खोजना, तलाशी लेना।

प्रा० झाड़ादेना—बोल० तलाशीदेना।

फ़ा० झाड़ूकश—(झाड़ू= बुहारी,

फ़ा० कश=खींचना, भंगी, मिहतर, हलालखोर ।

प्रा० झावा—पु० तेल नापने का बरतन, २ मुर्गी बंद करनेका टापा ।

प्रा० झारी—(सं० झर) स्त्री० सुराही जिसकी नाली लंबी होती है और उसके एक टोंटी लगी रहती है ।

प्रा० झारी—पु० सब, समूह ।

प्रा० झाल—स्त्री० बड़ाटोकरा, २ तेज़ी, ३ धातु के टूटे बरतन को जोड़ना ।

प्रा० झालना—क्रि० स० ओपना, घोटना, २ जोड़ना ।

प्रा० झालर—स्त्री० किनारा, सूत या रेशमकी जाली ।

प्रा० झालरा—(सं० झर) पु० पानी का बड़ा कुंड, झरना ।

प्रा० झिझकना—क्रि० अ० चौंकना, भड़कना, डर उठना ।

प्रा० झिड़कना—क्रि० स० धमकाना, डराना, घुरकना, डाटना ।

प्रा० झिड़की—(झिड़कना) स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़क ।

प्रा० झिनझिनी—स्त्री० सनसनाहट, झनझनाहट, सनसनी जो हाथ पैर सो जाते हैं तब मालूम होती है ।

प्रा० झिलम—पु० लोहे की कुरती, कवच, बख़्तर ।

प्रा० झिलमिली—स्त्री० दरवाजे की झँझरी, झिलमिल, जाली ।

प्रा० झिल्ली—स्त्री पतला चमड़ा झिंगुरी ।

प्रा० झींकना } झींखना } क्रि० अ० पछतावा करना, रोना, हाय हाय करना । [मछली ।

प्रा० झींगा—स्त्री० एक तरह की

प्रा० झींगुर—पु० एक प्रकार का कीड़ा ।

प्रा० झीन } झीना } (सं० क्षीण) पु० पतला, पतील ।

प्रा० झील—स्त्री० सरोवर, सरवर, जलाशय ।

प्रा० झीसी—स्त्री० फूही, फुहार, झपास, झड़ी ।

प्रा० झुकना—क्रि० अ० नवना, निहुरना, नीचासिर करना, ऊंघना, प्रणाम करना, सलाम करना, नीचे लटक आना (जैसे वृक्षकी डाली) २ क्रोध करना, क्रोधितहोना, चिढ़ना, जैसे "झुकी रानि अरहू अरगानी" (रामायण) ।

प्रा० झुंझलाना—क्रि० चिड़चिड़ा होना, चिढ़ना, खिसियाना, झटपट क्रोधित होजाना, क्रोध करना, क्रोधित होना ।

प्रा० झुटलाना } (झूठ) क्रि०स०
झुठलाना } झूठाकरना, झूठा
कलङ्क लगाना, झूठा ठहराना ।

प्रा० झुठालना—(झूठ) क्रि०स० झूठाकर दिखाना, झूठा ठहराना, २ उच्छिष्ट करना, कुछ खाके छोड़ देना । [खाना ।

प्रा० मुँहझुठालना—बोल० कुछ

प्रा० मुँहामुँहझुठालना—बोल० किसीको उसके मुँहपर वा सामने झूठा ठहराना ।

प्रा०झुंड-पु० समूह, भीड़भाड़, दल, यूथ, ठट्ठ, २ पेड़ों की कुंज ।

प्रा० झुनझुना-पु० बालकों का एक खिलौना ।

प्रा० झुनझुनी-स्त्री० घुँघरू, नूपुर ।

प्रा० झुमका } पु० ढेंढी, कर्णमूल,
झूमका } २ फूलों का वा फलों का गुच्छा, ३ एक फल का नाम । [कुम्हलाना, २ झरना ।

प्रा० झुरना-क्रि० अ० मुरझाना,

प्रा० झुरी-स्त्री० चुनत, सकोड़ ।

प्रा० झुलसना (सं०ज्वल्=जलाना) क्रि० अ० जलना, झुलसना ।

प्रा० झुलाना—क्रि० स० डोलाना, हिलाना, झूला देना, २ लटकाना ।

प्रा० झूंझल-स्त्री० चिड़चिड़ाहट, खुन्स ।

प्रा० झूठ } (सं०जुष्ट.जुष्=तृप्तहोना)
जूठ } गु० झूठा, स्त्री० उच्छिष्ट, खाने के पीछे बचा खाना ।

प्रा० झूठ-स्त्री० मिथ्या, असत्य ।

प्रा० झूठमूठ-बोल० झूठ, अशुद्ध, मिथ्या ।

प्रा० झूठा-(झूठ) गु० झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, २ झूठा खाना, खाने के पीछे बचा हुआ खाना । [खाना ।

प्रा० झूठाझाठा—बोल० झूठा

प्रा० झूमना-क्रि० अ० हिलना, लहरना, २ ऊंघना, सिरको ऊंचा नीचा घुमाना, ३ बादलों का घिर आना ।

प्रा० झूमझूम-बोल० बादलों का उमंडना ।

प्रा० झूरना-(सं०चूर्णन) क्रि०स० कूटना, चूर चूर करना, पीसना, २ पेड़ से फल हिलाना, क्रि० अ० ३ झुरना, किसी की याद में शोच करना, कलपना, पछताना ।

प्रा० झूल-स्त्री० चौपायों के शरीर पर ओढ़ाने का कपड़ा, झोला ।

प्रा० झूलना-(सं० दोलन, दुल्=झूलना) क्रि०अ०डोलना, हिलाना, लटकना, पु० एक तरह की कविता ।

प्रा० झूला-(सं० दोला, दुल्=झूलना) पु० हिंडोला, पालना, डो-

ला, एक रस्सी जिसपर झूलतेहैं।

प्रा० झूसी-पु०फूही, फुहार, झीसी, २ इलाहाबादके सामने एक शहर जिसको पहले प्रतिष्ठानपुर कहते थे और चंद्रवंशियोंकी राजधानीथा।

प्रा० झोंक—स्त्री० ढकल, झूलने में ढकेलना, २ हवाका झोंका।

प्रा० झोंकदेना—बोल० आग में पुवालडालना, जलाना, जलादेना, २ धूलि फेंकना वा डालना, ३ फेंक देना, किसीको जोखिममें डालना।

प्रा० झोंकना—क्रि० स० डालना, फेंकना, घुसेड़ना, चूल्हे में ईंधन डालना।

प्रा० झोंटा—(सं०जटा) पु० सिरके पिछले बाल, चोटी, २ हिंडोले का झोंका।

प्रा० झोंकादेना—बोल० किसीका सिर अथवा सिर के बाल पकड़ कर जोरसे हिलाना।

प्रा० झोंपड़ा-पु० } मढ़ी, कुटी,
झोंपड़ी-स्त्री० } मढ़िया।

प्रा० झोंरा—पु० फल का गुच्छा।

प्रा० झोंका—पु० झकोरा, हवा की झोंक, ठोकर, ठेस।

प्रा० झोठा } (सं० उच्छिष्ट) पु०
झूठा } खाने के पीछे बचा हुआ खाना।

प्रा० झोला—पु०अर्द्धांग, लकवा, २ थैला।

प्रा० झोली—स्त्री० कोथली थैली।

प्रा० झौंरा—पु०गेहूंवरण, सांवला।

प्रा० झौड़-पु०झगड़ा, बखेड़ा, टंटा।

ट

सं० ट—पु०वामन, शब्द, ध्वनि, चन्द्रमा, गान, रुद्र, अंकुश, वृद्धावस्था।

प्रा० टंकना—क्रि०अ० सिया जाना, लगाया जाना, लटकना, लगना।

प्रा० टंगना—क्रि० अ० लटकना।

प्रा० टंगड़ा } (टङ्का, टकि=बांधना) स्त्री० पिंडली।
टंगरी }

गोड़, पैर का एकभाग।

प्रा०टंटा—पु०झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा, रगड़ा।

प्रा० टक—स्त्री०स्वभाव, २ताक, दृष्टि।

प्रा० टकबांधना—बोल० ताकना, घूरना।

प्रा० टकलगाना—बोल० बाट देखना।

प्रा०टकटकी-स्त्री०, ताक, घूर, यकटक।

प्रा० टकटकीबांधना—बोल० ताकना, घूरना, एक टक देखना।

प्रा० टकराना—(टक्कर) क्रि० स० टक्कर खिलाना, टक्कर देना।

प्रा० टकसाल—(सं० टङ्कशाला, टङ्क=सिक्का, शाला=जगह) स्त्री०

मुद्रालय, वह जगह जहां सिक्का तैयार होता है।

प्रा० टकसालकाखोटा—बोल० शिक्षा अथवा उपदेश में बिगड़ा हुआ।

प्रा० टकसालचढ़ना—बोल० शिक्षा पाना, उपदेशपाना, सिखायाजाना।

प्रा० टकसालबाहर—सं० अनपढ़, कुपढ़, अनघड़, २ खोटा, खराब।

प्रा० टका—(सं० टङ्क=सिक्का) पु० दो पैसा।

प्रा० टकुआ, टकुवा—(सं० तर्कु, कृत्=काटना) पु० तकला, तकुवा, फिर्री।

प्रा० टकोर—स्त्री० ढोल का शब्द, धुनि, थाप, चुमकार।

प्रा० टक्कर—स्त्री० धक्का, ठोकर, ठेलाठेली, रेला, ढकेल, झोक, ठेस।

प्रा० टक्करखाना—बोल० ठोकर खाना, किसी चीज़ से भिड़जाना, २ दुःखमें गिरना, नुकसानउठाना।

प्रा० टक्करमारना—बोल० धक्का लगाना, ठोकर मारना, ढकेलना, रेलना, पटकना, ठेस मारना।

प्रा० टखना—पु० ठेवना, गुल्फ, घूटी।

सं० टङ्क—(टकि=बांधना) स्त्री० टांक, चारमाशे का तौल, २ टांकी, छेनी, पत्थर काटने का औज़ार, ३ तलवार, ४ क्रोध, ५ अहंकार, ६ सुहागा, ७ खुरपी।

सं० टंककशाला—(टङ्कक=टकशा, शाला=मकान) स्त्री० टकशाल, रुपये बनाने का घर।

सं० टंक—पु० खनित्र, खंता, खुरपा, फरुहा, टांकी, तलवारका मियान।

सं० टंकार—(टम्=ऐसा शब्द, कृ=करना) पु० धनुष् के चिल्लेका शब्द, २ अचंभा, ३ नामवरी।

प्रा० टटका—गु० नया, ताज़ा, तुरंत का। [घेरा, मेड़।

प्रा० टटड़ी—स्त्री० चांदी, टांट, २

प्रा० टटपूंजिया—गु० थोड़ी पूंजी वाला, दिवालिया। [घोड़ी।

प्रा० टटवानी—(टट्टू) स्त्री० छोटी

प्रा० टटोलना—क्रि० स० टोवाटोई करना, टोना, छूने से ढूंढना (जैसे अंधे लोग ढूंढ़ते हैं)। [झांप।

प्रा० टट्टर—पु० बड़ी टट्टी, टट्टा,

प्रा० टट्टी—स्त्री० टटिया, चटाई का बनाहुआ छोटा टट्टर, ओट, आड़, (टट्टी खसखस की और फूस आदि की भी बनती है)—शिकार की टट्टी की ओट बैठना=छिप के करना, घात में बैठना।

प्रा० टट्टू—पु० टांगन, पहाड़ी घोड़ा।

प्रा० टपकना—टूट पड़ना, गिर पड़ना, चूना।

प्रा० टपका—पु० पानी का बूंद, २ पके फल का गिरना।

प्रा० टपना-क्रि० स० नांघना, फांदना, कूदना ।

प्रा० टपाना-क्रि० स० नँघवाना, कुदवाना ।

प्रा० टप्पा-पु० डाक का घर, डाकखाना, २ एकप्रकार का गीत अथवा रागिणी, ३ गेंद अथवा गोली का उछालना, ४ कूद, उछाल ।

प्रा० टप्पाखाना—बोल० गोली अथवा गेंदका उछलताहुआजाना ।

प्रा० टरना } **टलना** } (सं० टल्=व्याकुल होना वा घबराना) क्रि० अ० हटना, सरकना, चंपत होना, चलेजाना, दबकरहना, लौटपौट जाना, अस्तव्यस्त होना ।

प्रा० टर्रा—गु० मगरा, दुष्ट, २ बकी, ३ जोरावर ।

प्रा० टर्राना—क्रि० स० टेंटें करना, बकबक करना, चिड़चिड़ाना ।

सं० टलन—(टल्=घबराना) भा० पु० चंचलहोना, शोक, उलटा पलट ।

प्रा० टसक—स्त्री० टीस, पीड़ा, कहराना ।

प्रा० टसकना—क्रि० अ० हिलना, चलना, सरकना, उकसना, २ कहराना । [डाली ।

प्रा० टहनी—स्त्री० डाली, छोटी

प्रा० टहल } **टहलटकोर** } स्त्री० घर का काम काज, सेवा, नौकरी, दास का काम । [सेवा करना ।

प्रा० टहलटकोर करना—बोल०

प्रा० टहलना—क्रि० अ० फिरना, चलना, हवा खानेको बाहरजाना ।

प्रा० टहलनी } **टहलवी** } (टहल) स्त्री० घर का काम काज करनेवाली, दासी ।

प्रा० टहलुवा (टहल) पु० घर का काम काज करने वाला, दास, सेवक, नौकर, चाकर ।

प्रा० टांक—(सं० टङ्क) स्त्री० चार माशे का तोल, २ एक तरह की सुई, ३ सीवन ।

प्रा० टांकना—क्रि० स० सीना, टांका मारना, तुरपना ।

प्रा० टांका-पु० सीवन, टांक, जोड़ना ।

प्रा० टांके लगाना—बोल० सीना, जोड़ना ।

प्रा० टांकी—(सं० टङ्क) स्त्री० रुखानी, छेनी, २ नासूर, फोड़ा, खर्बूजे का चौकोर टुकड़ा जो उसको अच्छा बुरा देखने के लिये काटा जाताहै ।

प्रा० टांग—(सं० टङ्गा) स्त्री० टंगड़ी, पिंडली, गोड़ ।

प्रा० टांगन—पु० पहाड़ी घोड़े की एकजात ।

प्रा० टांगना-क्रि० स० लटकाना।

प्रा० टांट-स्त्री० चांदी, टटड़ी, सिर का बिचला भाग।

प्रा० टांडा-पु० खेप, बनजारे की चीज वस्तु।

अं० टाउनहाल=सभास्थान, मजलिस, दरबार।

प्रा० टाट-पु० सन का कपड़ा, अजाड़। [आड़।

प्रा० टाटी-स्त्री० टट्टी, टटिया, झाप,

प्रा० टाप-स्त्री० घोड़े के अगले पैर का आहट, चलने में घोड़े के खुर का शब्द, २ मछली पकड़ने के लिये बांस का बना हुआ ढांचा।

प्रा० टापू-पु० धरती का वह टुकड़ा जो चारों ओर पानी से घिरा हो, उपद्वीप।

प्रा० टारना } (टलना) क्रि०
टालना } सं० हटाना, सरकाना, दूरकरना, २ बहाना करना, देरी करना, ढील करना।

प्रा० टालटोल } बोल० बहाना,
टालमटोल } छल, ढीलढाल, चकरमकर, घोल घुमाव, लपेट सपेट, बनावट।

प्रा० टाल-पु० बहाना, टाल टोल, टालमटोल, २ स्त्री० ढेर (अनाज वा लकड़ी आदि का) तूदा, अंबार, अटाल, सूखी घास का गंज।

प्रा० टाला-पु० टालमटोल, घोल घुमाव, बनावट, लपेट सपेट, २ ढेर, तूदा, गंज, टाल।

प्रा० टालाबाला बताना—बोल० टालना, घोलघुमाव करना, टालमटाल बताना, टालटोल करना।

प्रा० टिकटिकी—स्त्री० छिपकी, छिपकली।

प्रा० टिकठी-स्त्री० तिपाई, तिखूंटी।

प्रा० टिकना—क्रि० अ० रहना, ठहरना, बसना, मुक़ामकरना।

प्रा० टिकली—पु० बेंदी, बिन्दु, २ पतली रोटी। [ठहराना।

प्रा० टिकाना—क्रि० स० रखना,

प्रा० टिकिया—स्त्री० कोयले की गोल गोल टिकली, २ पतली और छोटी रोटी।

प्रा० टिक्कड़-पु० मोटी रोटी।

प्रा० टिटीहरी-(सं० टिट्टिभ) स्त्री० एक पखेरू का नाम।

सं० टिट्टिभ—(टिट्टि ऐसा शब्द, भाष्=बोलना)पु० टिटीहरी, एक पखेरू का नाम।

प्रा० टिड्डा—पु० फनगा, पतंगा।

प्रा० टिड्डी-स्त्री० शलभ, अनाज को नाश करनेवाला कीड़ा।

प्रा० टिप्पन } (टिप्=फेंकना) स्त्री०
सं० टिप्पनी } टीका, विवरण,

व्याख्या, अर्थ, टिप्पनी, शरह ।

प्रा० **टिहरा**-पु० पुरा, पुरवा, छोटी बस्ती ।

प्रा० **टीक**-स्त्री० गलेका एक गहना।

सं० **टीका**-(टीक्=जाना) स्त्री० शरह, टिप्पनी, विवरण, कठिन शब्दोंके अर्थ और गूढ़अभिप्रायको अच्छी तरह से समझाना ।

प्रा० **टीका**-(सं० तिलक) पु० तिलक, ललाट पर चन्दन केशर आदिका चिह्न, २ स्त्रियों के ललाट पर पहननेका एक सुवर्णका गहना, ३ ब्याहमें दुलहिन के घरसे जो भेंट जाती है ४ गोटी का खुदवाना, छापा ।

प्रा० **टीकाभेजना**-बोल० ब्याह के शुरूअ में दुलहिन के घर से दुलहे के घरमें वस्त्रया नारियलआदि भेंट भेजना ।

प्रा० **टीकालेना**-बोल० ब्याह की भेंटको लेना वा ग्रहण करना वा स्वीकार करना ।

प्रा० **टीडी**-स्त्री० टिड्डी, शलभ ।

प्रा० **टीप**-स्त्री० टिपनी, बोहरे का तमस्सुक जिसमें मूल और ब्याज के रुपयोंके पलटे फसलपर अनाज आदि जिन्स देनेको लिख देते हैं, २ गाने में राग को ऊंची लेजाना । ३ जल्दी में कोई बात लिखलेना या अटका लेना वा टांक लेना, ४ दबाव, दबाइट । [पहाड़ी ।

प्रा० **टीला**-पु० मेड़, ऊंची धरती,

प्रा० **टीस**-स्त्री० पीड़ा, टपक, व्यथा, धड़क । [होना ।

प्रा० **टीसमारना**-बोल० पीड़ा

प्रा० **टुक**-(सं० स्तोक, ष्टुच्=प्रसन्न होना) गु० थोड़ा, कम, अल्प, ज़रा, ज़रासा ।

प्रा० **टुकड़ा** } **टूक** } (सं० स्तोक, ष्टुच्=प्रसन्न होना) पु० खंड, भाग, हिस्सा, चिट, अंश, परमाणु ।

प्रा० **टुच्चा**-पु० पोच, ओछा, बेहूदा, वाही।

प्रा० **टुंड**-गु० टूठा, काटाहुआ अंग ।

प्रा० **टुंडी** } **टूंडी** } (सं० तुन्दि, तुद्=पीड़ा देना) स्त्री० नाभि, तोंदी, गु० बिन हाथ की ।

प्रा० **टुंडियांकसना** } **टुंडियांचढ़ाना** } **टुंडियांबांधना** } बोल० पीठ पीछे हाथों को बांधना, मुसके बांधना ।

प्रा० **टुसकना**-क्रि० अ० रोना, बिलखना, सुसकना ।

प्रा० **टूट**-(टूटना, सं० त्रुटि) स्त्री० टूटन, फूटन, खंडन, २ टोटा, कमी, हानि, नुकसान, ३ कोई बात जो

पुस्तक के लिखने में भूल से छूट जाती है और हाशिये पर पीछे से लिखी जाती है।

प्रा० टूटना—(सं० त्रोटन, त्रुट्=काटना) क्रि० अ० टुकड़ा होना, फूटना, फटना, २ चढ़ना, चढ़ाई करना, धावा करना।

प्रा० टूटा—(टूटना) गु० टूटाहुआ, फूटा हुआ, पु० टोटा, कमी, हानि, नुकसान, घटी।

प्रा० टूटाफूटा—बोल० टुकड़े २ खंडहर।

प्रा० टूसी—स्त्री० कली, कोंपल।

प्रा० टेंट—पु० करील का फल, कपासका फल; कपासका फल, आंख की फुल्ली।

प्रा० टेंटुवा—पु० सांसी, नरेटी, नरी।

प्रा० टेंटें—पु० चेंचें, किलकिलाहट।

प्रा० टेक—भा० स्त्री० थूनी, टिकाव। सहारा, अवलम्ब, टेंकन, खम्भा, रोक, २ प्रण, प्रतिज्ञा, हठ, संकल्प।

प्रा० टेंकी—गु० प्रतिज्ञापालक, बात, का पूरा करनेवाला, बातका धनी।

प्रा० टेकरा—पु० टीला, ऊंचीधरती।

प्रा० टेढ़ा—गु० वक्र, बांका, तिरछा, अकड़ा, बेंड़ा।

प्रा० टेढ़ाकरना—बोल० झुकाना, बांका करना, तिरछा करना।

प्रा० टेढ़ाबेड़ा—बोल० टेढा, बांका, कुटिल।

प्रा० टेम—स्त्री० बत्तीकीजलन वा फूल।

प्रा० टेर—गु० लय, स्वर, तान, ताल, राग, २ पुकार, हांक, फ़र्याद पुकार।

प्रा० टेरना—क्रि० स० पुकारना, ललकारना, बुलाना, हांकमारना, अलापना।

प्रा० टेव—स्त्री० चाल चलन, रीति, बात, स्वभाव, आदत, चाट, चसका।

प्रा० टेवकी—स्त्री० थूनी, खंभा, टेक, टेकन।

प्रा० टेवना } टेना } क्रि० स० तीखा करना, चोखा करना, बाढ़देना, धार लगाना, पैनाना।

प्रा० टेवा—पु० जन्मपत्री, २ टेव, स्वभाव, चाट, चसका।

प्रा० टेसू—पु० पलाश का फूल, टेसू, २ एक प्रकार का खेल।

प्रा० टेहला—पु० व्याहकी एकरीति।

प्रा० टोवाटोई—स्त्री० टटोलना, ढूंढ।

प्रा० टोंटा—पु० पटाखा, मुर्रा, बांस की गांठ, ३ कारतूस, गु० जिसका हाथ टूटा हुआ हो।

प्रा० टोंटी—स्त्री० नली, नल।

प्रा० टोक—(टोकना) स्त्री० रोक, रुकाव, अटकाव, २ बुरीदृष्टि, नजर, दीठ।

प्रा० टोकना—क्रि० स० रोकना, २ पूछना, ३ डाह करना, ४ बुरी

नज़र से देखना, दीठ लगाना ।

प्रा० टोकरा–पु० डला, खांचा, बड़ी, टोकरी, छटवा, पलड़ा ।

प्रा० टोकरी–स्त्री० डलिया, पलड़ी, खचिया ।

प्रा० टोटका–पु० मंत्र यंत्र, गंडा, तावीज, टोना, मोहन, लटका, वशीकरण ।

प्रा० टोटा–पु० घटी, घाटा, कमी, नुक़सान, २ टोंटा, कारतूस ।

प्रा० टोड़ी–स्त्री० एकरागिणीकानाम।

प्रा० टोना–पु० मोहन, टोटका, जादू, सेहर, लटका, क्रि० स० टटोलना ।

प्रा० टोनाटानी, टोनाटामन } बोल० मन्त्र, यंत्र, टोना, टोटका ।

प्रा० टोप–पु० बड़ी टोपी, २ टांका, सीवन ।

प्रा० टोपा–पु० टोप, शिरका ढकना । [का ढकना ।

प्रा० टोपी–स्त्री० छोटा टोप, शिर

प्रा० टोल–पु०, टोली–स्त्री० } थोक, झुण्ड, जत्था, सभा, ठट्ठ।

प्रा० टोला–पु० महल्ला, खंड, शहर का एक हिस्सा ।

अं० ट्यम्परेन्स–सुसायटी=ट्यम्प–रेन्स=पवित्र, परहेजगार, सुसायटी=समूह, जमाअत । [विश्वास ।

अं० ट्रष्टी–विश्वस्त, मुअतमिद, जात

अं० ट्राई–कोशिश, उद्योग, परिश्रम, चेष्टा ।

अं० ट्रेडएसोसियेशन–सौदागरों की कमेटी ।

प्रा० ट्रैन्सलेटर–पु० मुतरज्जिम, अनुवादक, उल्था करनेवाला ।

ठ

सं० ठ–पु० शिव, २ चंद्रबिम्ब, ३ मंडल, ४ शून्य, ५ महाध्वनि, ६ मूर्ति, ७ जनसमूह । [शब्द ।

प्रा० ठकठक–पु० कठिन काम, २

प्रा० ठकठकाना–क्रि० स० ठोंकना, खट २ करना, कूटना, मारना ।

प्रा० ठकुर–(सं० ठकुर) पु० ठाकुर शब्द को देखो ।

प्रा० ठकुराई–(सं० ठकुरता) भा० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, स्वामीपन, बड़प्पन ।

प्रा० ठग–पु० ठगनेवाला, बटमार, चोर, दगाबाज बहकानेवाला, छली, कपटी ।

प्रा० ठगबाजी, ठगविद्या } स्त्री० बोल० ठगाई, कपट, छल, माया ।

प्रा० ठगलाना–बोल० ठगना, छलना, धोखा देना, बहका के लेलेना ।

प्रा० ठगलेना–बोल० छलना, धोखा देना, छल से लेना ।

प्रा० ठगई–(ठग) भा० स्त्री० ठगाई, ठग का काम, छल, धोखा ।

प्रा० ठगना-क्रि० स० छलना, भुलावादेना, धोखादेना, बहकाना ।

प्रा० ठगाई-(ठग)भा०स्त्री० ठगई, छल, धोखा ।

प्रा० ठगौरी-(ठग) स्त्री० ठगाई, भुलावा, माया, छल, धोखा ।

प्रा० ठट्ठ } पु० भीड़भाड़, झुण्ड,
ठठ } मंडली, समूह ।

प्रा० ठट्ठा-पु० हँसी, ठठोली, खिल्ली, चुहल ।

प्रा० ठट्ठाकरना-बोल० हँसीकरना, ठठोलीकरना, हँसना, उपहासकरना, मसखरापन ।

प्रा० ठट्ठेबाज़-बोल० गु० ठठोल, हँसोड़, रसिक, मसखरा ।

प्रा० ठट्ठेबाज़ी-बोल० स्त्री० ठट्ठा करना, हँसोड़पन, खेल, दिल्लगी ।

प्रा० ठट्ठामारना-बोल० हँसीकरना ठठोलीकरना, हँसना, उपहास करना ।

प्रा० ठठरी-स्त्री० ठट्ठर, ठाठ, २ रथी, ३ ढांचा, पांजर, अस्थि,पंजर, हड्डियों का ढांचा, बहुत दुबला मनुष्य ।

प्रा० ठठकना-क्रि० अ० रुकना, ठहरना, हटना, खड़ा, रहजाना, अचंभे में खड़ा रहजाना, झझकना, हिचकना, चिहुँकना ।

प्रा० ठठाना-क्रि० स० मारना, पीटना, कूटना, २ दुख में अपना सिर पीटना, ३ अपने को दुख में डालना ।

प्रा० ठठेरा-पु० कसेरा, भर्तिया ।

प्रा० ठठोर } गु० हँसोड़, रसिक,
ठठोल } ठट्ठेबाज़ ।

प्रा० ठठोली-स्त्री० ठट्ठा, हँसी, खिल्ली, हांसी । [शीतकाल ।

प्रा० ठण्ढ-स्त्री० जाड़ा, सर्दी, शीत,

प्रा० ठण्ढक-स्त्री० ठंढाई, शीतलता ।

प्रा० ठण्ढा-गु० शीतल, सर्द ।

प्रा० कलेजाठण्ढाकरना-बोल० प्रसन्न होना, अपने मित्र अथवा बेटा आदि को देखने से आनंद में होना, २ बदला लेने से मन प्रसन्न होना ।

प्रा० ठण्ढा करना-बोल० शीतल करना, सर्द करना, २ बुझाना, बुताना (जैसे आग) ३ शांत करना, स्थिर करना, धीरज देना, दिलासा देना ।

प्रा० ठण्ढापरना-बोल० कमहोना, घटना (जैसे क्रोध, पौरुष, चंचलाहट का) ।

प्रा० ठण्ढाहोना-बोल० सर्द होना, शीतल होना, २ बुझना, बुतना, ३ शांत होना, धीरज धरना, स्थिर होना ।

ठण्ढाई—स्त्री० ठंढी औषध, (जैसे सौंफ कासनी आदि) २ भंग, ३ सर्दी, शीतलता।

प्रा०ठण्ढीसांसभरना—बोल० हाय मारना, आह भरना, लंबी सांस लेना।

प्रा० ठनकना—क्रि० अ० टीसना, टीस मारना, शिर में दर्द होना, २ झनकना, झंझनाना, ठनठनाना।

प्रा० ठनठनाना—क्रि० अ० झनझनाना, झनकना, ठनकना।

प्रा०ठनाक—पु० झनकार, झनझनाहट, ठनकार।

प्रा० ठप्पा—पु० छापने की चीज़, छापा, मोहर।

प्रा० ठरक, ठरर—पु० खर्राटा, घुर्रा।

प्रा० ठरिया—पु० एक तरहका मिट्टी का हुक्का।

प्रा० ठवनि—स्त्री० चाल।

प्रा० ठसक—स्त्री० भड़क, छैलपन, अहंकार, धूमधाम।

प्रा० ठस्सा—पु० सांचा, ढांचा, २ अहंकार, घमंड।

प्रा० ठहरना—(सं० ष्ठा=ठहरना) क्रि० अ० टिकना, रहना, बसना, खड़ा रहना, रुकना, अटकना, उतरना, डराकरना, ठिकानाहोना, निर्णय होना, निश्चित होना, सिद्ध होना, पक्का होना, दृढ़ होना, निपटना।

प्रा० ठहराना-(ठहरना) क्रि० स० टिकाना, रखना, खड़ा करना, रोकना, अटकाना, उतारना, डेरा देना, निर्णय करना, सिद्ध करना, ठिकाना करना, पक्का करना, निपटाना, दृढ़ करना, निश्चित करना, नियत करना, ठानना, विचारना, लगाना।

प्रा० ठहराव—(ठहरना) भा० पु० टिकाव, स्थापन, निर्णय, निश्चय।

प्रा० ठां, ठांव, ठाम—(सं० स्थान) पु० स्त्री० ठौर, जगह, ठिकाना, स्थान, स्थल।

प्रा० ठांसना, ठासना—क्रि० स० दबा दबा के भरना, घुसेड़ना, ठूसना, दबाना।

प्रा० ठाकुर—(सं० ठकुर देवता की मूर्त्ति और प्रतिष्ठित पदवी) पु० देवता, ईश्वर, २ देवता की मूर्त्ति, ३ स्वामी, मालिक, प्रधान, प्रभु, नाथ, नायक, मुखिया (राजपूतों में) ४ जमीनदार, ५ नाई।

प्रा०ठाकुरद्वारा—(सं० ठकुरद्वार) पु० मन्दिर, देवालय, देवस्थान।

प्रा०ठाकुरवाड़ी—(सं० ठकुरवाटी) स्त्री० मन्दिर, देवालय, ठाकुरद्वारा।

प्रा० ठाठ—पु० ठटरी, २ तैयारी,

रचना, धूमधाम, साज, भड़क, तजल्ली, शान, हशमत, ३ भीड़ भाड़, झुंड, समूह, बहुतात।

प्रा॰ ठाढ़ा—गु॰ खड़ा, सीधा।

प्रा॰ ठाढ़ारहना—क्रि॰ अ॰ खड़ा रहना।

प्रा॰ ठानना—क्रि॰ स॰ ठहराना, मन में पक्का करना, बिचारना, निश्चय करना।

प्रा॰ ठानी—स्त्री॰ ठहराई, विचारी, निश्चय की। [खाली।

प्रा॰ ठाला—गु॰ बेकार, बिन काम,

प्रा॰ ठाहर, ठाहरु (सं॰ स्थान) स्त्री॰ ठौर, जगह, जागह, ठां, ठांव, स्थान। [टुकड़ा।

प्रा॰ ठिकरा—पु॰ घड़े वा मटकी का

प्रा॰ ठिकाना-(सं॰ स्थान) पु॰ जगह, बास, स्थान, ठौर, जागह, २ पता, ३ सीमा, हद।

प्रा॰ ठिकानाढूंढ़ना—बोल॰ बासा ढूंढना, काम ढूंढना।

प्रा॰ ठिकानेलगना—बोल॰ मारा जाना, मरना, २ पूराहोना।

प्रा॰ ठिकानेलगाना—बोल॰ मार डालना, २ पूराकरना, खपाना।

प्रा॰ ठिंगना—गु॰ नाटा, छोटा, बामना, पस्तक़द।

प्रा॰ ठिठकना, ठिठकजाना, ठिठकरहना—क्रि॰ अ॰ अचंभे में होना थोड़ी देर ठहर जाना।

प्रा॰ ठिठरना—क्रि॰ अ॰ जमना, जड़ना, अकड़ना।

प्रा॰ ठिनकना—क्रि॰ अ॰ सिसकना, सिसकी भरना, धीरे धीरे रोना।

प्रा॰ ठिलिया—स्त्री॰ गगरी, छोटा घड़ा।

प्रा॰ ठीक—गु॰ पूरा, बराबर, सही, शुद्ध, खरा, साफ़, योग्य, उचित, सच, यथार्थ, जैसा चाहिये।

प्रा॰ ठीकआना—बोल॰ मिलना, बराबर होना, बराबर आजाना।

प्रा॰ ठीककरना—बोल॰ सही करना, निश्चय करना, २ मारना।

प्रा॰ ठीकठाक—बोल॰ सही, शुद्ध, सच, ठीकठाक।

प्रा॰ ठीकठाककरना—बोल॰ सही करना, जांचना, निश्चयकरना।

प्रा॰ ठीकरा—पु॰ मिट्टी के फूटे बरतन का टुकड़ा।

प्रा॰ ठीका—पु॰ भाड़ा, ठहराया हुआ मोल, २ इजारा, मुक़ाता, मुस्ताजिरी, कटकना, चुकौता, लिखापढ़ी।

प्रा॰ ठुड्डी—स्त्री॰ ठोढ़ी, चिबुक, २ भूंजा अनाज।

प्रा० ठुमकना-क्रि० अ० अच्छी चाल चलना, ऐंठकर चलना ।

प्रा० ठुसकना-क्रि० अ० धीरे २ रोना ।

प्रा० ठूंठ-पु० ठुंडा, बिन पत्तेकीडाल, २ कटाहुआ हाथ ।

प्रा० ठेउना, ठेवना-पु० घुटना ।

प्रा० ठेंगा-पु० लाठी, लट्ठ, २ अंगूठा।

प्रा० ठेंगाबाजना-बोल० लाठी चलना, २ बिगड़ना ।

प्रा० ठेंठी-स्त्री० कानका मैल, २ डट्टा, ठेपी, ३ घुटने तककी धोती ।

प्रा० ठेक-स्त्री० टेकनी, टेक, सहारा, अवलंब, २ नाज का भरा हुआ बोरा ।

प्रा० ठेकाधिकारी-क० पु० मुस्ताजिर, मुकातादार ।

प्रा० ठेठ-गु० निकेवल, खालिस, असल, साफ़, बेमेल, ठीक, निपट, २ झगड़ालू ।

प्रा० ठेपी-स्त्री० ठेंठी, डट्टा, डाट ।

प्रा० ठेपीमुहँमेंदेना-बोल० चुप रहना, अवाक् होना ।

प्रा० ठेलना-क्रि० स० ढकेलना, रेलना, धक्का देना, झोंकना ।

प्रा० ठेला-पु० धक्का, ढकेल, झोंक, माल लादने की गाड़ी ।

प्रा० ठेलाठेली-बोल० धक्कमधक्का, रेलपेल ।

प्रा० ठेंस-स्त्री० ठोकर, चोट, चपेट ।

प्रा० ठेंसना-क्रि० स० छेदना, बेधना, २ ठोकरदेना, ठोकराना, ३ ठांसना ।

प्रा० ठोंकना, ठोकना-क्रि० स० मारना, गड़ना, गाड़ना, २ थपथपाना, पीटना, (जैसे ढोलक आदि बाजे को) ।

प्रा० ठोकदेना-बोल० गाड़ देना, गढ़ देना, पीटना ।

प्रा० पीठठोंकना-बोल० पीठ थपथपाना (जब किसी को सराहते अथवा उसकी हिम्मत बढ़ाते हैं) ।

प्रा० ठोंठ-(सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) चोंच, ठोर ।

प्रा० ठोकर-स्त्री० पैरकी मार, लात ।

प्रा० ठोकरखाना-बोल० गिर पड़ना, लुढकना, २ भूलना, चूकना, ३ घटी सहना ।

प्रा० ठोकरलगना-बोल० पैर में चोट लगना ।

प्रा० ठोढ़ी-स्त्री० ठुड्डी, चिबुक ।

प्रा० ठोर-(सं० त्रोटि, त्रुट्=काटना) स्त्री० चोंच, ठोंठ ।

प्रा० ठोस-पोलानहीं, घना, कठोर, कड़ा, दृढ, भारी, पोढ़ा, गाढ़ा ।

प्रा० ठोसना-क्रि० स० ठांसना, दबा

दबा के भरना, दबाना, भरना।
प्रा० ठोसा-पु० ठेंगा, अंगुठा दिखलाना। [ना, स्थान।
प्रा० ठौर स्त्री० जगह, ठांव, ठिका-
प्रा० ठौररहना-बोल० खेत रहना, माराजाना, मररहना।

ड

सं० ड-पु० शिव, २ डर, ३ शब्द, ४ बाड़वाग्नि।
प्रा० डकराना-क्रि० अ० कूक मारके रोना [उद्गार
प्रा० डकार-स्त्री० डेकार, ढकार,
प्रा० डकरना-क्रि०अ० डकारलेना, २ रांभना, हूंकारना, गर्जना, भोंकारना, ३ पचाजाना।
प्रा० डकारजाना } बोल० उड़ा
डकारबैठना } जाना, खाजाना, पचाजाना, पचाबैठना।
प्रा० डकारलेना-बोल० डकारना, ढकार लेना।
प्रा० डकैत-पु० डाकू, बटपार, लुटेरा, चोर।
प्रा० डकैती-स्त्री० डाका, बटपारा, लूट, चोरी।
प्रा० डकौत } पु० एकजाति के
डकौतिया } लोग जो ब्राह्मण से ग्वालिनके पैदा हुए औरये लोग शनैश्चर का दान लेतेहैं और ज्योतिषविद्या में पके होते हैं।
प्रा० डग-स्त्री० फाल, पद, लंबी चाल।
प्रा० डगना-क्रि० हिलना।
प्रा० डगमगाना-क्रि० अ० लड़खड़ाना, डगडगाना, हिलना, डोलना, कांपना।
प्रा० डगर-पु० रस्ता, राह, मार्ग, पैंड़ा, पथ, सड़क।
प्रा० डगरना-क्रि० अ० यात्राकरना, रस्ते चलना, घूमना।
प्रा० डगरा-पु० सूप, बांसका बना हुआ बरतन।
प्रा० डङ्क (सं०दंश,दंश्=काटना वा डंक मारना) पु० चभक, बिच्छूका दांत जिसमें जहर भरा रहता है।
प्रा० डङ्कमारना-बोल० काटना, (बिच्छू बिर्नी आदिका)।
प्रा० डङ्का-(सं०ढका,ढक ऐसा शब्द कै=शब्द करना) पु०नक्कारा बजाने का डंडा, २ धौंसा, नक्कारा बड़ा ढोल।
सं० डङ्गर-पु० भूसा,खीरा,धूर्त,खल, सेवक, प्रक्षेप, स्त्री० ककरी।
प्रा० डटना-क्रि०अ०थमना, रुकना, जमजाना।
प्रा० डट्टा-पु० ठेंठी, ठेपी, डाट।

प्रा० डढ़मुंडा—(सं० दाढ़ीमुण्डित) गु० डाढ़ी मुंडा, बिन डाढ़ी का।

प्रा० डढ़ियल—(सं०दाढ़ी) गु० लंम्बी दाढ़ीवाला।

प्रा० डण्ड—(सं० दण्ड) पु० भुजा एक तरहकी कसरत अथवा व्यायाम जिसमें हाथों को धरती पर टेक कर नीचे को इसतरह से झुकना होता है कि छाती से जमीन छुइ जाय,—डंडपेल=डंड पेलनेवाला, डंड करनेवाला।

प्रा० डण्डा—(सं०दण्ड) पु० सोंटा, लट्ठ, छड़ी, झंडे की लकड़ी।

प्रा० डण्डिया—पु० स्त्रियोंका एक प्रकार का कपड़ा, स्त्रियों के ओढ़ने का दुपट्टा वा ओढ़नी।

प्रा० डण्डी—(सं०दण्डी) स्त्री० डंडा, बेंट, पकड़ने की लकड़ी, २ तराजू का डण्डा अथवा धारण, ३ लकीर, पु० संन्यासी जो अपने हाथ में दण्ड रखते हैं—पगडण्डी=पदचिह्न, चोरराह, लीक, गुप्तराह।

प्रा० डण्डीर—स्त्री० धारी, लीक, लकीर।

प्रा० डपटना—क्रि० अ० पुकारना, सर्टना, डांटना, झिड़कना, घुड़कना।

प्रा० डफ—(फा०दफ़) स्त्री० खंजरी।

प्रा० डफाली—(डफ) गु० एक प्रकार के मुसलमान फ़कीर जो डफ बजा कर भीख मांगा करते हैं।

प्रा० डबगर—पु० चमड़ा कमाने वाला, दब्बाग़।

प्रा० डबडबाना—क्रि० स० आंखों में आंसू भर लाना।

प्रा० आंखेंडबडबाना } बोल० रोनी सूरत बनाना।
आंसूडबडबाना }

प्रा० डबरा—पु० गँदले पानी का छोटा तालाब, डाबर, ताल।

प्रा० डबोना—क्रि० स० डुबाना, गोता खिलाना, डुबकी देना, बोरना, २ उजाड़ना, बरबाद करना।

प्रा० डब्बा—पु० बड़ी डिबिया, २ कुप्पा। [पु० एक प्रकारका बाजा।

सं० डमरू-(डमू=ऐसाशब्द, ऋ=जाना)

सं० डयन—(डी=आकाश में उड़ना) भा० पु० उड़ना, आकाशगमन।

प्रा० डर (सं० दर, दृ=डरना) पु० भय, त्रास, शंका, आतंक, दबदबा।

प्रा० डरना } (सं० दृ=डरना) क्रि० अ० भय खाना।
डरपना }

प्रा० डरपोकना—(डर) गु० कायर, भीरु, डरवैया, डरनेवाला।

प्रा० डराऊ—(डर) गु० भयानक, भयावना, डरावना।

प्रा० डराना } (डरना) क्रि० स०
डरावना } भय दिखाना, त्रास
दिखाना, गु० भयानक, भयावना, डराऊ।

प्रा० डलवा—पु० टोकरा, छटवा, झबई।

प्रा० डला—पु० ढेला, ईंटा, लौंदा, २ टोकरा, बड़ी दौरी।

प्रा० डलिया—स्त्री० टोकरी, दौरी।

प्रा० डली—पु० टुकड़ा, खंड, टूक। (चीनी मिसरी अथवा मांस का)

प्रा० डसना—(सं० दंशन, दंश्=काटना) क्रि० स० सांप का काटना, डङ्क मारना, चभकना।

प्रा० डहकाना—क्रि० स० बहकाना, निराश करना, बिगारना, धोखा देना, ठगना।

प्रा० डहडहा—गु० खिलाहुआ, हरा भरा, फूला हुआ, प्रफुल्लित, प्रसन्न, हर्षित।

प्रा० डहडहाना—क्रि० अ० खिलना, फूलना, बिकसना।

प्रा० डाग—स्त्री० लाठी, २ पहाड़ की ऊंची चोटी, ३ डगर, पगडंडी, रास्ता, ४ टहनी, डाली।

प्रा० डांगर—गु० दुबला, पतला, पु० दुबला पशु, २ मूली वा सरसों का पत्ता वा फूल।

प्रा० डांटना—क्रि० स० डपटना, धमकाना, घुड़कना, झिड़कना, ताड़ना।

प्रा० डांठी—स्त्री० डण्ठा, डाली, डांठ, डण्डी।

प्रा० डांड—(सं० दंड) पु० दंड, वाग्दण्ड, धिग्दण्ड, जुर्माना या धनदंड, पलटा, बदला, सजा २ नाव खेने का बांस, बल्ली, ३ रीढ़, पीठ की हड्डी, ४ लकड़ी, लाठी, डण्डा।

प्रा० डांड़भरना—बोल० जुर्माना देना, दंड देना।

प्रा० डांड़लेना—बोल० दंड लेना, जुर्माना लेना। [बदला लेना।

प्रा० डांड़ना—क्रि० स० दंड देना,

प्रा० डांवरू—पु० बाघ का बच्चा।

प्रा० डांवाडोल (सं० धावनदोलन) गु० इधर उधर भटकना, तीन तेरह, वासहीन, डगमग।

प्रा० डांस—(सं० दंश) पु० बड़ी मक्खी, मच्छड़, २ डंक, हूल।

प्रा० डाक—स्त्री० टप्पा, चिट्ठी, डालने की जगह, २ घोड़े की अथवा पालकी की चौकी, ३ लगातार वमन करना।

प्रा० डाका—पु० लुटेरोंकाधावा, छापा।

प्रा० डाकापड़ना—बोल० लुटजाना, लूटाजाना, चोरी होना।

प्रा० डाकापड़ना } बो० लूटना,
डाकाडालना } राह मारना,
डाका देना } जोर से छीन

लेना, मार लेना । [प्रेतनी ।

सं० डाकिनी—स्त्री० डाइन, चुड़ैल,

प्रा० डाकिया—पु० डाकू, २ डाक दौड़ाहा, डाकवाला, चिट्ठीरसां ।

प्रा० डाकी—गु० खाऊ, पेटू, बहुत खानेवाला [रा, चोर ।

प्रा० डाकू—पु० डकैत, बटपार, लुटे-

प्रा० डाट—(डाटना) स्त्री० धमकी, घुरकी, झिड़की, डपट ।

प्रा० डाटना—क्रि० स० डपटना, घुड़कना, धमकाना ।

प्रा० डाढ़—(सं० दाढा वा दंष्ट्रा, दा-वा दंश=काटना) स्त्री० दाढ़, पीसने के दांत, पिछले बड़े दांत ।

प्रा० डाढ़ा—क्रि० अ० जलाना, मुँह-काला होना ।

प्रा० डाढ़ी—(सं० दाढ़ी वा दाढ़िका अर्थात् डाढ़ के पास) स्त्री० ठुड्डी पर का बाल, श्मश्रु, रीश । [कुशा ।

प्रा० डाब—(सं० दर्भ) पु० डाभ,

प्रा० डाब—पु० तलवार का परतला, २ कच्चा नारियल ।

प्रा० डाबर- गोल तालाब, डबरा, गड़हा, गु० गँदला, मैला ।

प्रा० डाभ—(सं० दर्भ) पु० डाब, कुशा, २ सं० दाव, जंगल, बन ।

प्रा० डायन—(सं० डाकिनी) स्त्री० डाकिन, चुड़ैल ।

अं० डायरी-स्त्री० दिनचर्य्या, रोज-नामचा, रोजनामा । [शाखा ।

प्रा० डार—स्त्री० डाल, डाली, टहनी,

प्रा० डार- (सं० धारा) स्त्री० कतार, पांत, पंक्ति ।

प्रा० डारकीडार—बोल० झुंड का झुंड, जत्था, दल, टोली, समूह ।

प्रा० डारना } क्रि० स० फेंकना,
डालना } झोंकना, चलाना, उड़ेलना, उझलना, भीतर फेंकना, रखदेना, धर देना, जल्दी से गिरा देना, घुसेड़ना । [शाखा ।

प्रा० डाल-स्त्री० डाली, डार, टहनी,

प्रा० एकडाल-बोल० एकमेलका ।

प्रा० डाली- पु० फल आदिकी भेंट, २ फलों की टोकरी, ३ डाल, टहनी शाखा ।

प्रा० डासना—क्रि० स० बिछाना ।

प्रा० डासी-स्त्री० बिछाई ।

प्रा० डाह—(सं० दाह=जलन) स्त्री० लाग, बैर, जलन, द्रोह, द्वेष, कुनस, गांठ, ईर्षा, हसद, रश्क ।

प्रा० डाहना-(सं० दाहन=जलना) क्रि० अ० डाह रखना, डाह से जलना, दुःख देना, २ क्रि० स० धातु को गलाना, वा पिघलाना, धातु को धिकाना वा गर्म करना ।

अं० डिक्शिनरी—अभिधान, कोष, लुग़त ।

प्रा० डिगना—क्रि० अ० हिलना, डगमगाना, थरथराना, कांपना,

२ हटना, टलना ।

सं० डिण्डिम—(डिण्डि ऐसाशब्द, मि=फेंकना अर्थात् करना या निकालना) डमरू, ढोल, डुगडुगी, मनादी, २ एक पेड़ का नाम ।

अं० डिपार्टम्यण्ट—पु० मुहकमा, सरिश्ता, विभाग, प्रकरण ।

अं० डिस्ट्रिक्टबोर्ड—(डिस्ट्रिक्ट=ज़िला वा खण्ड, बोर्ड=कमेटी) ज़िला की कमेटी, खण्डसभा ।

प्रा० डिबिया—स्त्री० छोटा डिब्बा, डिब्बी ।

प्रा० डिब्बा-पु० बड़ी डिबिया, डब्बा ।

सं० डिभ—पु० संग्राम, पाखण्ड, पाखण्डी, प्रलय ।

सं० डिम—संग्राम, प्रलय ।

सं० डिम्ब—पु० पाखण्ड, डाका, लूट पाट, बे हथियार की लड़ाई, अण्ड, फुफ्फुस, रेड़वृक्ष ।

प्रा० डिम्भ—पु० पाखण्ड, जवान पशु, शिशु, बालक, मूर्ख, अनारी, अज्ञान ।

अं० डिमीअफ़िशल— आधासरकारी और आधानिजकालेख जिस में आधा महसूल देना पड़ता है ।

अं० डिस्ट्रिक्ट-ज़िला, खण्ड, विभाग ।

प्रा० डींग-स्त्री० बड़ाई, घमंड, शेख़ी, अहंकार, अभिमान, दर्प ।

प्रा० डींगमारना—बोल० शेख़ी करना, घमंड करना, बड़ाई करना ।

प्रा० डीठ—(सं० दृष्टि) स्त्री० ताक, दीठ, नजर, दृष्टि, देखना ।

प्रा० डीठबन्दी-बोल० जादूसे नजर बन्द होजाना, नजरबन्दी, इन्द्रजाल, नटमाया ।

सं० डीन—भा० पु० पक्षी की गति, उड़ान ।

प्रा० डील-पु० शरीर, देह, २ डौल ।

प्रा० डुबकी—स्त्री० चुभकी, गोता, डूब, जल में पैठना ।

प्रा० डुबाना } डुबोना } क्रि० स० डबोना, ग़ोता खिलाना, डुबकी देना, २ उजाड़ना ।

प्रा० डुमरी } डूमर } (सं० उडुम्बर) पु० गूलर का वृक्ष ।

प्रा० डुरियाना—(सं० डोर) क्रि० स० बाग डोर, हाथ में लेकर घोड़े को खाली लेचलना ।

प्रा० डुलाना } डोलाना } (सं० दोलन, दुल=झुलाना) क्रि० स० हिलाना, झुलाना ।

प्रा० डूबना—क्रि० अ० डुबकी मारना, ग़ोताखाना, २ बोरना, बूड़ना, पानी में मग्न होना, ३ अस्त होना, बैठ जाना, ४ उजड़ना, बरबाद होना, नष्ट होना, ५ लय होजाना, मग्न हो जाना, लग जाना (जैसे किसी काम अथवा पढ़ने आदि में)

दिल डूबना, बोल० मूर्च्छित होना, अचेत होना।

प्रा० डेढ़-गु० एक और आधा।

प्रा० डेढ़पाव-गु० पाव और आध पाव, छः छटांक।

प्रा० डेढ़पावा-पु० डेढ़ पावका तौल।

प्रा० डेढ़गत-पु० एक तरहका नाच।

प्रा० डेरा-पु० वासा, घर, २ तम्बू, खीमा, गु० भेंगा, टेढ़ा देखनेवाला।

प्रा० डेवढ़ा-गु० डेढ़गुना।

प्रा० डेवढ़ी } स्त्री० उसारा
डेहुड़ी } दालान, डेवढ़ीदार =द्वारपाल।

प्रा० डैन—(सं० डयन, डी=उड़ना) पु० पांख, पंख, पखेरू का पर।

प्रा० डोंगा-पु० उडुप, प्लव, छोटी नाव, २ कठरा।

प्रा० डोंगी—स्त्री० छोटीनाव २ कठरछी।

प्रा० डोंडी—स्त्री० ढँढोरा, मनादी।

प्रा० डोकरा-पु० बुड्ढा, बूढ़ा।

प्रा० डोकरी—स्त्री० बुढ़िया।

प्रा० डोब—(डूबना) पु० डूब, गोता, डुबकी, कपड़ेको रङ्ग में डुबाना।

प्रा० डोबदेना- बोल० कपड़ेको रङ्ग में डुबोना।

प्रा० डोम-पु० एक नीच जाति, २ मुसलमान जातिके लोग जिन की स्त्रियां केवल स्त्रियोंहीके साम्हने गाती और नाचती हैं और मर्द गवैये और बजन्त्री होते हैं।

प्रा० डोमड़ा—पु० डोम, अत्यन्त नीच जात।

प्रा० डोमनी-स्त्री० डोमकी स्त्री।

प्रा० डोर-स्त्री० रस्सी, डोरी, जेवड़ी, सूतली।

प्रा० डोरा-पु० तागा, धागा, तार सूत, लीक, लकीर, २ तलवार की धार—आंख का डोरा=आंख में लोहूकी लाल २ लकीर या चिह्न।

प्रा० डोरिया-पु० एकतरहका कपड़ा।

प्रा० डोरी-स्त्री० रस्सी, डोर, जेवड़ी, सूतली।

प्रा० डोल—पु० पानी निकालने का लोहे या चमड़े का बरतन। [डोल।

प्रा० डोलची-स्त्री० चमड़ेका छोटा

प्रा० डोलना—(सं० दोलन, दुल्= डोलना) क्रि०अ० हिलना, झूलना, २ फिरना, भटकना।

प्रा० डोला-(सं० दोल, दुल्=झूल ना) पु० एक तरह की पालकी २ नीचेघरानेकी रानी जो बड़ेराजा को ब्याही जाती है और इस रानी का दर्जा बराबर घराने की रानियों से नीचा होता है।

प्रा० डोलादेना—बोल० शूद्रलोगोंकी जब बेटी रांड होजाती है तब वे अपनी जाति में बेटीको दूसरे पति

को दे देते हैं उसे डोलादेना कहते हैं, लड़की ब्याह देना ।

प्रा० डोली—(सं० दोला) स्त्री० चौपाला, दोला, स्त्रियोंकी पालकी ।

प्रा० डौढ़ी—स्त्री० डेवढ़ी, उसारा, २ गु० डेढ़गुनी, ३ गाने में ऊंचास्वर ।

प्रा० डौल—पु० प्रकार, रीति, ढब, भांति, रूप, आकार ।

ढ

सं० ढ—पु० बड़ा ढोल, २ ध्वनि ।

प्रा० ढंग—पु० चलन, रीति, प्रकार, डौल, चाल, लक्षण ।

प्रा० ढंढोरा—(सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ् =खोजना) पु० डौंडी, मनादी ।

प्रा० ढक—पु० तौल विशेष, बटखरा, बँट ।

प्रा० ढकना—क्रि० स० ढांपना, ढपना, तोपना, मूँदना, बन्दकरना, २ छिपाना, ३ बचाना, ४ मढ़ना, ५ छाना, पु० ढकनी, ढकनेकी चीज ।

प्रा० ढकनी—स्त्री० चपनी, ढकने, की चीज, सरपोश ।

प्रा० ढकार—स्त्री० डकार ।

प्रा० ढकेल-पु० रेल, ठेल, पेल, धक्का । [रेलना, पेलना ।

प्रा० ढकेलना-क्रि० स० ठेलना,

प्रा० ढकेलू-क० पु० ढकेलनेवाला, पेलनेवाला, हटा देनेवाला ।

प्रा० ढक्का-पु० बड़ा ढोल, डंका ।

प्रा० ढड़कौवा—पु० जंगली कौवा ।

प्रा० ढड़वा-पु० मैना की जाति का पखेरू । [मनादी ।

प्रा० ढणढोरा-पु० डुगडुगी, डौंडी,

प्रा० ढनमनाना-क्रि० अ० लुढ़कना, गिरना, डगमगाना, कांपना ।

प्रा० ढपढपाना-क्रि० स० ढोलको पीटना (जैसे लड़के करते हैं)

प्रा० ढपना-क्रि० अ० ढक जाना, छिपना, लुकना, पु० ढकना, ढकने की चीज ।

प्रा० ढब—पु० डौल, चाल, रीति, रूप, बनावट, हथौड़ी ।

प्रा० ढबरा-गु० गँदला, मैला, कीचड़ ।

प्रा० ढबुआ-पु० पैसा, ताम्रमुद्रा ।

प्रा० ढलकना-क्रि० अ० ढुलकना, बहजाना, ढगरना, छलकना ।

प्रा० ढलना-क्रि० अ० सांचे में पिघलना (जैसे धातु) २ ढलकना, छलकना, लोटना, लुढ़कना, ढगरना, ३ झुकना, नवना—दिन ढलना, बोल० दिन घटना, दिनका बीतना ।

प्रा० ढलतीफिरतीछांव—बोल० संसार के कामों की बदलने योग या अस्थिर दशा, संसार के कामों में एरा फेरी ।

प्रा० ढलमलाना—क्रि० अ० डगमगाना, काँपना ।

प्रा० ढलाना—क्रि० स० सांचे में ढालना, २ बहाना ।

प्रा० ढलैत—(ढाल) पु० ढालतलवार बांधनेवाला, गोड़इत ।

प्रा० ढवाना—क्रि० स० गिरवाना, ढहाना, खसवाना, उजड़वाना, गिरा देना, जड़से उखाड़डालना ।

प्रा० ढाई—(सं० सार्द्धद्वय) गु० अढ़ाई दो और आधा ।

प्रा० ढांकना—क्रि० स० ढांपना, ढकना, छिपाना, बंद करदेना ।

प्रा० ढांग—स्त्री० कंदला, शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी ।

प्रा० ढांचा-पु० सांचा, डौल, घर, ठाठ ।

प्रा० ढांपना—क्रि० स० ढांकना, बंद करना, छिपाना, लुकाना ।

प्रा० ढाक—पु० पलाशवृक्ष, तेज, प्रताप, शुहरत, शुहरा ।

प्रा० ढाटा—पु० दुपट्टा जो डाढ़ी और कानोंपर बाँधाजाता है, बड़ी पगड़ी जो मारवाड़ और उदयपुर आदि राजपूतानेके लोग बांधा करते हैं ।

प्रा० ढाड़स } ढाढ़स } ढारस } (सं० दार्ढ्य, दृढ़, कठोर या स्थिर) स्त्री० मनकी दृढ़ता, साहस, भरोसा, दिलासा, धैर्य, धीरज, शूरमापन, हिम्मत ।

प्रा० ढाढ़सदेना—बोल० दिलासा देना, हिम्मत बँधाना ।

प्रा० ढाढ़सबँधाना—बोल० भरोसा देना, साहसदेना, धीरजदेना, हियाव रखना ।

प्रा० ढाढ़िन—स्त्री० ढाढी की स्त्री ।

प्रा० ढाढ़ी—पु० गाने बजानेवाला, बजंत्री, कलावत, क़व्वाल ।

प्रा० ढाना } ढहना } क्रि० स० गिराना, उजाड़ना, नेव से उखाड़ डालना ।

प्रा० ढाबर—गु० मैला । [लती ।

प्रा० ढाबा—पु० जाल, ओरी, ओ-

प्रा० ढाल—पु० फरी, २ उतार, ढलाव, झुकाव ।

प्रा० ढालना—क्रि० स० सांचे में उतारना, धातुको सांचे में पिघलाना, २ बहाना, ३ बिगाड़ना ।

प्रा० ढालवाँ—गु० उतारू, ढालू । ढाला हुआ, सांचे में ढाला हुआ (जैसे धातु) [२ बिगाड़ू ।

प्रा० ढालू—गु० उतारू, ढालवां,

प्रा० ढाहा—पु० नदी का ऊंचा किनारा, करारा ।

प्रा० ढिग—(सं० दिक्=दिशा) स्त्री० तरफ़, ओर, दिशा, क्रि० वि० पास, समीप, नगीच, निकट ।

प्रा० ढिठाई—(सं० धृष्टता) स्त्री० मगराई, मचलाई, गुस्ताखी, चंचलता, निर्लज्जता, साहस, प्रगल्भता ।

प्रा० ढिमढिमी—स्त्री० डमरू, खंजरी ।

प्रा० ढीठ } (सं० धृष्ट) गु० मगरा,
ढीठा } मचला, साहसी, निर्लज्ज, मिलाजुला, बीर, निडर, प्रगल्भ, गुस्ताख़।

प्रा० ढील—स्त्री० ढिलाई, २ आस्कत, सुस्ती, अचेती, ३ देरी, देर, बिलम्ब।

प्रा० ढीला—गु० बेकसा हुआ, छुटा, शिथिल, २ धीमा, आलसी, सुस्त, अचेत, मंद।

प्रा० ढीहा—पु० टीला, डूंगर, खंडल, पहाड़ी।

प्रा० ढुलना—क्रि० अ० ढलना, गिरना, बहना, लुढ़कना।

प्रा० ढूंढ़ना—(सं० ढुण्ढन, ढुण्ढ=खोजना) क्रि० स० खोजना, हेरना, तलाश करना।

प्रा० ढूंढ़नाढांढ़ना } बोल० खो-
ढूंढ़ढांढ़करना } जना, हेरना, तलाशकरना, ढूंढ़ना, जुस्तजूकरना।

प्रा० ढूंढ़िया-पु० जैनियोंका भिखारी।

प्रा० ढूकना—बंधकरना, २ पास आना, ३ पैठना।

प्रा० ढूसर—पु० हिंदुओं में एक जाति, वैश्यों की।

प्रा० ढेऊ—स्त्री० लहर, तरंग।

प्रा० ढेकली—स्त्री० ढेंकुवा, पानी निकालने की कल, बलविद्या में यह एक प्रकार की डंडी है जिस में जो लम्बी लकड़ी उस को सहारा देती है वह तो टेक है और जो पानी का डोल निकाला जाता वह बोझ है और जो दूसरी ओर जो ज़मीन का अथवा पत्थर का बोझ है वही ज़ोर है।

प्रा० ढेंका—पु० कूटनेकी कल।

प्रा० ढेंढ़ी—स्त्री० पोस्त का फूल २ कर्णफूल, स्त्रियों के कानमें पहनने का एक गहना।

प्रा० ढेक—पु० सारस पक्षी।

प्रा० ढेढ़—पु० चमार, २ कौवा।

प्रा० ढेंढ़ी—स्त्री० एक कान का गहना।

प्रा० ढेर—पु० राशि, ढेरी, अटाला, संचय, इकट्ठा किया हुआ, समूह, गु० बहुत।

प्रा० ढेरी—स्त्री० राशि, ढेर।

प्रा० ढेला—पु० पिण्डा, लोंदा, मिट्टी का टुकड़ा।

प्रा० ढेलाचौथ—स्त्री० भादों सुदी ४ जिस दिन हिन्दूलोग एक दूसरे के घर में पत्थर फेंकते हैं और जो कोई गाली देता है तो उस को अच्छा सगुन मानते हैं।

प्रा० ढैया—पु० अढैया, अढाई सेर का तोल।

प्रा० ढोंचा—गु० साढ़ेचार।

प्रा० ढोकना— क्रि० स० पीना, घूटना, निगलना।

प्रा० ढोका -पु० पत्थर का टुकड़ा, २ पांच की गिन्ती जो कंडे मोल लेने में बोलते हैं।

प्रा० ढोटा -पु० लड़का, बालक।

प्रा० ढोना - क्रि० स० लेजाना, बहना।

प्रा० ढोर -पु० गाय, गोरू, भैंस आदि चौपाये, पशु।

प्रा० ढोल -एक बाजा, दमामा।

प्रा० ढोलक } ढोलकी } स्त्री० छोटा ढोल।

प्रा० ढोलकिया -पु० ढोल बजाने वाला।

प्रा० ढोला -पु० हिंदुओं में एक प्रसिद्ध प्रेमी का नाम, २ लड़का।

प्रा० ढोली -पु० ढोल बजानेवाला, २ दोसौ पान की आंटी।

प्रा० ढौंचा -पु० साढेचार।

सं० ण (णख=जाना) पु० बिंदुदेव, भूषण, गुणरहित, निर्णय, ज्ञान, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अस्त्र, उपाय, विद्वान्, जलस्थान, निर्वाण, त्रिगुणाकर।

त

सं० त -(तक्=सहना, वा हँसना) पु० चोर, २ म्लेच्छ, ३ पूंछ, ४ रत्न, ५ पुण्य, ६ अनृत, ७ तीव्र, ८ कुटिल, ९ तैरना, १० पुण्य।

प्रा० तईं -(सं० स्थान) क्रि० वि० तक, तलक, लग, लौं, पर्यन्त, २ को।

प्रा० तई -स्त्री० एक प्रकार की लोहे की कड़ाही।

प्रा० तक -क्रि० वि० तलक, लौं, तईं, पर्यन्त, पु० लकड़ी या भूसा तौलने की तराजू।

प्रा० तकना -क्रि० स० ताक लगाना, देखाकरना, टकटक देखना, चितवना।

प्रा० तकान -पु० हिलाव, थकाव।

प्रा० तकला -(सं० तर्कु, कृत्=काटना) पु० टकुवा, फिरकी, कतुवा, सूत कातने का यंत्र।

सं० तक्र -(तक्=सहना, वा तञ्च=जाना) पु० छांछ, मट्ठा, मही जिस में चौथा हिस्सा पानी मिला हो।

सं० तक्ष -(तक्ष्=काटना व पतला करना) भा० पु० आच्छादन, कर्त्तन, काटना, चर्म्म, चित्रा नक्षत्र।

सं० तक्षक -(तक्ष्=काटना, वा पतला करना) कृ० पु० लकड़ी काटने वाला, बढ़ई, २ पाताल का बड़ा सांप, ३ विश्वकर्मा, ४ सूत्रधार, ५ एक वृत्तका नाम।

सं० तक्षशिला -स्त्री० एक शहरका नाम जो पंजाबमें था जिसको यूनानी अपनेइतिहासमें लिखाहै,

भरतके पुत्रकी राजधानी।

प्रा० तखरी-स्त्री०तुला,तखड़ी,तराजू।

सं० तगर-पु० मरुआवृक्ष, सुगंधित काठ।

प्रा० तंगा-पु० दो पैसे, टका।

प्रा० तज-(सं०त्वच्) पु० तेजपातका वृक्ष अथवा उसकी छाल।

प्रा० तजना } त्यजना } (सं०त्यज्=छोड़ना) क्रि० स० छोड़ना, त्यागना, त्याग करना, छोड़देना।

सं० तज्ज्ञ-(तद्+ज्ञ,ज्ञा=जानना) तत्त्वज्ञाता, पण्डित।

अ० तजरुबत भा० तजरुबा, आज़-मायश, विचार, अनुमान, अनुभव, यथार्थज्ञान।

सं० तट-(तट्=ऊंचा होना) पु० तीर, किनारा, कड़ारा, २ निकट, पास।

सं० तटस्थ-(तट्=तीर,स्था=ठहरना) गु० तीर पर ठहरनेवाला, तीर पर के, तीरवासी, २ उदासीन।

सं० तटनी-क० स्त्री० नदी, नहर।

सं० तटी-क० पु० कूल, किनारा, तटवाला।

प्रा० तड़-पु० पक्ष, दल, धड़ा, मार-ना, जथा, टोली, २ तड़ ऐसा शब्द।

प्रा० तड़कना-क्रि० अ० फटना, फूटना, टूटना, चटकना, दड़कना।

प्रा० तड़का-पु० भोर, बिहान, प्र-भात, प्रातःकाल, भिनुसार, पोह, सबेरा।

प्रा० तड़के-क्रि० वि० सबेरे, भोर के समय, पोह फटे।

प्रा० तड़फ-स्त्री० बेकली, व्याकुल-ता, धड़क, घबराहट, निढालपन, धड़धड़ाहट।

प्रा०तड़फड़ाना-क्रि० अ० धड़कना छटपटाना, व्याकुल होना, घबरा जाना, धकधकाना, तड़फना, तड़पना।

प्रा० तड़फड़ाहट-स्त्री० धुकधुकी, धड़क।

प्रा०तड़फना } तड़पना } क्रि०अ० छटपटाना, घबराना, व्याकुल होना, धकधकाना २ कुदकना, उ-छलना, ३ किसी चीज के लिये बहुत बेकल होना, किसी चीज को बहुतही बहुत चाहना।

प्रा० तड़ाका-पु० आहट, आवाज़ मारने का शब्द।

प्रा०तड़ाग-(तड्=पीटना,वा चमक-ना) पु० तलाव, तालाब, सरवर, सरोवर, पोखरा, जलाशय।

सं० तड़ित्-(तड्=भिड़ाना, एक बादल को दूसरे बादल से) स्त्री० बिजली, दामिनी, विद्युत्, बर्क़।

सं० तण्डक-(तड्+अक, तड्=भिड़ाना) क० पु० मायावी, पाख-ण्डी, २ समग्र, ३ खंजन अर्थात् भार-द्वाज पक्षी, खडरैंचा, खडैंचा, ४ धन्नी, कड़ी, ५ गृह।

सं०तड़िद्वान्-क० पु०मेघ, बादल।

सं०तड़ितसमाचार-(तड़ित्=तारब र्क्री, समाचार=हाल)पु० तारबर्क्री के समाचार, तार द्वारा वृत्तान्त।

सं०तण्डुल-(तड्=पीटना वा कूटना) र्म० पु० चांवल, कूटा हुआ धान।

सं० तत्काल-(तत्=वह, काल=समय) क्रि० वि० उसी दम, उसी समय, वही क्षण।

सं० तत्क्षण(तत्=वह, क्षण=समय) क्रि० वि० उसी पल में, उसी समय, तुरंत, तत्काल, उसी क्षण।

प्रा० तत्ता-(सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण, २ क्रोधी।

सं० तत्पर-(तत्=वह, पर=लगा हुआ) गु० किसी काम में लगा हुआ, उद्यमी, परिश्रमी।

सं० तत्र-(तत्=वह) क्रि०वि०वहां, तहां, उस जगह।

सं०तत्रभवान्=आंजनाब।

सं० तत्रभवती=आँजनाबा।

सं० तत्व } (तत्=वह,त्व भाव अर्थ
तत्त्व } में प्रत्यय, अर्थात् उस परमेश्वर का) पु० सार, मूल, यथार्थ, सत्य, आदिकारण, पंचभूत, (जैसे १ मिट्टी, २ पानी, ३ आग, ४ हवा, ५ आकाश) २ परमात्मा, ब्रह्म, ३ सारवस्तु, ४सांख्यशास्त्र में प्रकृति आदि पचीस पदार्थ।

सं० तत्त्वज्ञान-(तत्त्व=सच्चा, वा परमेश्वरका ज्ञान) पु० ब्रह्मज्ञान, यथार्थ ज्ञान, परमार्थ ज्ञान, परमेश्वर का ज्ञान।

सं०तत्त्वतः-अव्य० ठीक २, यथार्थ, हक़ीक़त में।

सं० तथा-(तत्=वह, था प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० उसप्रकारसे, वैसाही, उसी तरह से, वही, तैसा, तिसप्रकार।

सं०तथापि-(तथा=तैसे, अपि=भी) समुच्च० वा क्रि० वि० तौ भी, तब भी, तिसपर भी।

सं० तथास्तु-(तथा=तैसे, अस्तु=होवे, अस्=होना) समुच्च० क्रि० वि० वैसाही हो, हां।

सं० तथ्य-पु० सत्य, निष्कपट, मिथ्यारहित।

प्रा० तद-(सं० तदा) क्रि० वि० तब, उस समय, फिर, इसके पीछे, उस दशामें।

सं०तदनन्तर } (तत्=उसके, अ-
तदुपरान्त } नन्तर=पीछे) क्रि० वि० वा० समुच्च० उसके पीछे, तिसके पीछे।

सं० तदपि-(तत्+अपि) समुच्च० तब भी, तोभी।

सं० तदा, तदानीम् (तत्=वह) क्रि०वि० तब, तद, उस समय ।

सं० तद्धित-(तत्+हित) पु० उस का हित, दूसरे की भलाई, २ व्याकरण में नाम से नाम बनाये जाने को कहते हैं जैसे विष्णु से वैष्णव, शिव=शैव ।

प्रा० तभी-(सं०तदाहि) क्रि०वि० तभी ।

प्रा० तन-(सं०तनु) पु० शरीर, देह, काया, अंग, २ ओर, तरफ़ ।

प्रा० तनदेना--बोल० ध्यानदेना ।

प्रा०तनक-(सं०तनुक,तन्=फैलना) गु० थोड़ा, अल्प, छोटा, ज़रा ।

प्रा० तनना, तन्ना (सं०तन्=फैलना) क्रि० अ० फैलना, खिचना, विस्तार देना ।

सं० तनय-(तन्=फैलाना,वंश को) पु० बेटा, पुत्र, सन्तान, औलाद ।

सं०तनया-(तनय) स्त्री० बेटी,कन्या ।

प्रा० तनी (सं० तनया) स्त्री० बेटी ।

प्रा० तनी-स्त्री० अंगरखे का बन्द ।

सं० तनु, तनू (तन्=फैलाना) पु० शरीर, देह, तन, काया, अंग, २ गु० पतला, थोड़ा, अल्प, सूक्ष्म ।

सं० तनुज, तनूज (तनु=शरीर,जन्=पैदा होना) पु० बेटा, पुत्र ।

सं० तनुजा, तनुजाता, तनूजा (तनु=शरीर, जन्=पैदाहोना) स्त्री०बेटी, लड़की ।

सं०तनुत्र-(तनु=शरीर, त्रै=बचाना) पु० कवच, बख़्तर ।

सं० तनुरुह-(तनु=शरीर,रुह्=उगना) पु० बाल, केश ।

सं० तन्ति(तन्=फैलाना) पु० बुनने वाला, जुलाहा, तांती ।

सं०तन्तु-(तन्=फैलाना) पु० सूत, तागा, धागा, २ वंश, सन्तान ।

सं०तन्तुकीट-(तन्तु=तागा, कीट=कीड़ा) पु० रेशम का कीड़ा, पाट कीट ।

सं०तन्तुवाय (तन्तु=सूत,वे=फैलाना वा बुनना) पु० बुननेवाला, जुलाहा, तांती, कोरी ।

सं०तन्त्र-(तन्=फैलाना) पु० एक शास्त्र का नाम जिस में महादेव और पार्वती का संवाद है इसलिये तांत्रिक लोगों के येही दोनों मुख्य देवता हैं, इस शास्त्रके बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं जैसे रुद्रयामल तंत्र आदि । मंत्रशास्त्र, २ मंत्र, मंत्रयंत्र, टोना टोटका, ३ सिद्धान्त, प्रमाण, ४ प्रधान, ५ वश, आधीन, ६ अमल, काम ।

सं० तन्त्रि, तन्त्री स्त्री० निद्रा, नींद, उंघाई, ऊंघ ।

संं० तन्द्रा-(तन्द्रा=आलस करना, वा आलसी होना) स्त्री० आलस, थकावट, थकाई, श्रम, काहिली, सुस्ती ।

सं० तन्द्रालु-(तन्द्रा) गु० आलसी, सुस्त, निद्रालु ।

सं० तन्मात्र-पु० शब्द, २ रस, ३ रूप, ४ गंध ५ स्पर्श, उतनाही, जितनाही।

सं० तन्मय-पु० तद्रूप, अभेद, उसी रूप का ।

सं० तन्वी(तनु) कृ० स्त्री० जिस स्त्रीका शरीर पतलाहो, कृशांगी ।

सं० तप (तप्=तपना) पु० गर्मी, उष्णता, २ गर्मीकी ऋतु, ३ तपस्या, रियाजत ।

प्रा० तपत-(सं० तप्त) म्र्म० स्त्री० गर्मी, गु० तत्ता, गर्म, तपाहुआ ।

सं० तपन-(तप्=तपना) भा० पु० सूर्य, २ एक नरक का नाम, ३ गर्मी जलन, उष्णता, ४ ग्रीष्मऋतु, गर्मी की ऋतु ।

प्रा० तपना-(सं० तपन) क्रि० अ० गर्म होना, दहकना, २ भागवान् होना, तेजोवान् होना, ऐश्वर्यवान् होना ।

सं० तपस्या-(तपस्, तप्=तप करना) स्त्री० तप, योग, कायाको कष्टदेना, रियाजत ।

सं० तपस्वी-(तपस्विन्, तपस्, तप् =तप करना) गु० तपस्या करने-वाला, योगी, योग साधनेवाला, तापस, तपसी, रियाजी ।

प्रा० तपाना-(तपना) क्रि० स० गर्म करना, तत्ता करना, गर्माना ।

प्रा० तपी } तप्सी } (सं० तपस्वी) गु० तपस्या करनेवाला, तपस्वी, योगी ।

सं० तपोधन-(तपस्=तप, धन= दौलत, अर्थात् जिनके तपही धनहै) पु० तपस्वी, तपकरनेवाला, योगी, तप्सी ।

सं० तपोवन-(तपस्=तपस्या, वन =जङ्गल) पु० तपस्या करने का वन वह वन जिसमें योगी लोग तप करते हैं, २ एक तीर्थका नाम ।

सं० तप्त-(तप्=तपना) म्र्म० पु० गर्म, तपा हुआ, तत्ता, उष्ण, गर्मी अथवा पीड़ा अथवा शोचसे जलाहुआ ।

प्रा० तब-(सं० तदा) क्रि० वि० तिस समय, उस समय, तद्, फिर, इसके पीछे ।

सं० तम-(तम्=सताना व दुःखदेना) पु० तमोगुण, २ अंधेरा, अन्धकार, अज्ञान, ३ राहु, ४ अत्यन्त अर्थ में प्रत्यय, सिफ़त, कुलकाहर्फ़ ।

सं० तमः-(तम्=सताना व दुःख देना) पु० अन्धेरा, अन्धकार, २ तमोगुण, ३ पाप, ४ शोक, शोच, ५ राहु ।

प्रा० तमक-(सं०तमः) स्त्री० घमंड, अभिमान, २ क्रोध, गुस्से से मुँहलाल होजाना ।

प्रा० तमकना-क्रि० अ० गुस्से से मुँहलाल होजाना, खिसियाना, क्रोध करना ।

प्रा० तमतमाना क्रि० अ० लाल होना, झलझलाना, चमकना, मुँह लाल होजाना ।

सं० तमस-(तम्=सताना वा दुःख देना, वा अन्धेरा होना) पु० अन्धेरा, २ तमोगुण, ३ एक नरक का नाम, ४ राहु ।

सं० तमसा-(तम्=चाहना) स्त्री० एक नदीका नाम ।

सं० तमारि-(तम्=अँधेरा, अरि= वैरी) पु० सूर्य ।

सं० तमाल-(तम्=अँधेरा होना वा चाहना) पु० एक वृक्षका नाम जिस की पत्तियां काली होती हैं, २ चन्दन का टीका, ३ तमाखू, ४ मोरपंख ।

सं० तमि / तमी (तम=अँधेरा) स्त्री० रात, रात्री, रजनी ।

सं० तमीचर-(तमी=रात, चर= चलनेवाला, वा खानेवाला, चर= चलना, वा खाना) पु० राक्षस निशाचर ।

सं० तमोगुण-(तमस्=अँधेरा, गुण) पु० तीसरा गुण, तीन गुणों में का एक गुण, क्रोध, गजब, गुस्सा, मोह अज्ञान आदि ।

सं० तमोघ्न-(तमस्+हन्) हन्को घ्न आदेश होगया पु० सूर्य्य, २ चन्द्र, ३ अग्नि, ४ दीप, ५ गुरु, ६ ज्ञानी ।

प्रा० तम्बू-डेरा, पाल, रावटी, छोलदारी, कपड़कोठा ।

प्रा० तम्बूरा-अरबी तम्बूरह, पु० एक बाजेका नाम ।

प्रा० तम्बोली-(सं० ताम्बूली, ता, म्बूल=पान) क० पु० पानबेचनेवाला ।

प्रा० तर / तरे (सं० तल, तल्=ठहरना) क्रि० वि० नीचे, तले ।

सं० तर-गु० अधिक अर्थ में प्रत्यय, जैसे श्रेष्ठतर ।

प्रा० तरई-(सं० तारा) स्त्री० तारा, तरैया, नक्षत्र ।

प्रा० तरकना-क्रि० अ० कूदना ।

प्रा० तरकारी-स्त्री० भाजी, साग ।

सं० तरंग(तृ=पार होना) स्त्री० लहर, ढेऊ, हिलकोरा, २ उमंग, ललक, मौज ।

सं० तरङ्गिणी-(तरङ्ग) स्त्री० नदी ।

सं० तरङ्गी-(तरङ्ग) गु० लहरी, चंचल मन, उत्साहवाला, तरल ।

सं० तरण-(तृ=पार होना) पु० तैरना, पार होना, उद्धार, बचाव, २ डोंगा, नाव, ३ स्वर्ग, गु० पारहोने

वाला, तरनेवाला, मुक्तिपानेवाला ।

सं० तरणि—(तृ=पारहोना) पु० सूर्य, स्त्री० २ किरण, ३ नाव, नौका ।

प्रा० तरना—(सं० तरण) क्रि० अ० पार होना, २ मुक्तहोना, छुटकारा पाना, उद्धार होना ।

प्रा० तरफ़ना—क्रि० अ० तड़पना, व्याकुल होना ।

प्रा० तरबूज—(फ़ा० तरबूज़) पु० एक फल का नाम ।

सं० तरल—(तृ=पारहोना) गु० चंचल, तरंगी, अस्थिर, ओछा, पु० हार, २ हार के बीच की मणि । [गाछ ।

प्रा० तरव—(सं० तरु) पु० वृक्ष, पेड़,

प्रा० तरवर—(सं० तरुवर, तरु=पेड़, वर=बड़ा) पु० बड़ावृक्ष ।

प्रा० तरवरिया—(तरवार) कृ० पु० तलवार रखनेवाला, खड्गधारी, २ तलवार ।

प्रा० तरवार } तलवार } (सं० तरवारि, तर चाल (वैरियोंकी) तृ=पार होना, और वृ=रोकना, अर्थात् जो वैरियों की चालको रोकदेती है) स्त्री० खड्ग, खांडा ।

प्रा० तरसना—सं० तर्षण, तृष्=प्यासा होना) क्रि० अ० बहुत चाहना, जी लगा रहना, रटना ।

प्रा० तरईन—(सं० तारागण) पु० तारे, नक्षत्र ।

प्रा० तराई—स्त्री० दलदल, धरती, जलाभूमि, २ चौगान, चरनेकी जगह ।

सं० तरि } तरी } (तृ=पारहोना) स्त्री० नाव, डोंगी, नौका, तरणी ।

सं० तरु—(तृ=पार होना, अर्थात् जिसका लगानेवाला तरजाता है) पु० वृक्ष, पेड़, रूख, तरवर, गाछ, दरख़्त ।

सं० तरुण—(तृ=बीत जाना, या चलाजाना) गु० जवान, युवा ।

प्रा० तरुणाई—(सं० तरुणता) भा० स्त्री० जवानी, जोबन, यौवन ।

सं० तरुणी—(तरुण) स्त्री० जवान स्त्री, युवती ।

प्रा० तरेरना—क्रि० अ० घूरना, त्योरी चढ़ाना, आंख दिखाना ।

प्रा० तरैया—(सं० तारा) स्त्री० तारा, तारगण ।

सं० तर्क—(तर्क=तर्ककरना) स्त्री० वाद, विवाद, शास्त्रार्थ, न्याय संबन्धी बात चीत, शंका दलील, २ न्यायशास्त्र, ३ (न्यायशास्त्रमें) अनुमान, कल्पना ।

सं० तर्कवितर्क—स्त्री० शंका, संदेह ।

सं० तर्कविद्या—(तर्क+विद्या) स्त्री० न्यायशास्त्र ।

सं० तर्जक—(तर्ज+अक) कृ० पु० कूदनेवाला ।

सं० तर्जन-(सं० तर्ज्=धमकाना) पु० कोप, क्रोध, ताड़न, धमकी, गर्ज ।

प्रा० तर्जना-(सं० तर्जन) क्रि० स० क्रोध करना, कूदना, धमकाना ।

सं० तर्जनी-(तर्ज्=धमकाना, जिस से) स्त्री० दूसरी अंगुली, अंगूठे के पास की अंगुली ।

सं० तर्जित-(तर्ज्+इत) म्मं० पु० कूदा, धमकायागया ।

सं० तर्पण-(तृप्=तृप्त होना) पु० तृप्ति, संतोष, परिपूर्णता, २ पितरों को जल देना ।

सं० तर्पक-(तृप्+अक) क० पु० तृप्तिदेनेवाला, संतोष करनेवाला ।

सं० तर्पित-(तृप्+इत) म्मं० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, आसूदा ।

सं० तर्ष-(तृष्=प्यासा होना) स्त्री० प्यास, २ चाह, इच्छा, तृष्णा ।

प्रा० तर्स-स्त्री० दया, कृपा, करुणा ।

प्रा० तर्सखाना-बोल० दयाकरना ।

प्रा० तर्साना-(तरसना) क्रि० स० ललचाना, लुभाना ।

प्रा० तर्सों-क्रि० वि० परसों के आगे का दिन, आजसे पहला वा पिछला तीसरा दिन ।

प्रा० तल-(तल्=ठहरना) पु० तला, नीचा, नीचे का भाग, नीचे की जगह, थाह, २ तलवा, तला, तली ।

प्रा० तलघर-वि० पु० तहखाना, ताखाना ।

प्रा० तलछट-स्त्री० मैल, निचोड़, खूद, मल ।

प्रा० तलपना } तलफना } क्रि० अ० तलफना, छटपटाना, २ रोना, हाथ मारना ।

प्रा० तलमलाना-क्रि० अ० ललचाना, तरसना, २ कलपना, तड़फना ।

प्रा० तला-सं० तल पु० पेंदा, थाह, २ जूतेके नीचेका चमड़ा, तल्ला, तली ।

प्रा० तलाव-(सं० ताल और फा० तालाब) पु० तालाब, सरोवर, जलाशय ।

प्रा० तली-(सं० तल) स्त्री० तला, नीचा, पेंदा, २ जूते के नीचे का चमड़ा, ३ चूर्ण ।

प्रा० तलुवा } तलवा } (सं० तल) पु० पाँव का तला, पगतली ।

प्रा० तलुवाचाटना } तलुवेतलेहाथधरना } बोल० चापलूसी करना, लल्लोपत्तोकरना, खुशामद करना ।

प्रा० तले-(सं० तल) क्रि० वि० नीचे, उतर के, घट के ।

प्रा० तलेऊपर-बोल० नीचे ऊपर, उलट पुलट ।

सं० तल्प-पु० पलँग, शय्या, २ अट्टालिका, अटारी, ३ नारी, अबला ।

सं० तल्लिका-स्त्री० कुंजी, ताली, २ कूचिका, कूची, ३ तरुणी ।

सं० तव-सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तसर-पु० एकप्रकारका रेशम ।

सं० तस्कर-(तत्=वह, कृ=करना) क० पु० चोर, चोरी करनेवाला, चोट्टा ।

प्रा० तस्म-पु० चमोटा, चमोटी, तस्मा ।

प्रा० तस्मई-स्त्री० खीर ।

सं० तस्मै-सर्वना० तुम्हारे लिये ।

प्रा० तस्सू पु० इंच, एक प्रकार का नाप ।

प्रा० तहसनहस-पु० नाश, नष्ट तितर बितर, चौपट, उजाड़ ।

प्रा० तहां-(सं० तत्र) क्रि० वि० तिस जगह, वहां ।

प्रा० ता-सर्वना० उसको, उसे, तिसको ।

प्रा० तांगा-पु० एक तरह की गाड़ी ।

प्रा० तांत-(सं० तन्तु) स्त्री० चमड़े का तार, चमड़े की डोरी, बाजे का तार, २ तांती का यंत्र ।

प्रा० तांता-(सं० तंति, तन्=फैलाना) पु० पांत, श्रेणी, क़तार (जैसे घोड़े हाथी ऊंटों की) ।

प्रा० तांती-(सं० तन्ति) पु० जुलाहा, बुननेवाला, क़तार ।

प्रा० तांबा (सं० ताम्र) पु० एक धातु का नाम ।

प्रा० ताइत-(अरबी تعويذ तावीज़) पु० गंडा, यंत्र ।

प्रा० ताई-स्त्री० बापकेबड़ेभाईकीस्त्री ।

प्रा० ताऊ-पु० बापका बड़ा भाइ ।

प्रा० ताक (सं० तर्क) स्त्री० दृष्टि, दीठ, झांक, टकटकी ।

प्रा० ताकना-(ताक) क्रि० स० झांकना, घूरना, देखना ।

प्रा० ताग }
ताग़ा } पु० डोरा, सूत, धागा ।

प्रा० तागतोड़-पु० गोटा, किनारी ।

सं० ताटङ्क } (ताड़ वा ताटपीटना)
ताड़ङ्क } (तड्=पीटना और अङ्क, चिह्न) पु० ढेडी, कर्णभूषण, कान का गहना ढारैं ।

प्रा० ताड़-(सं० ताल) पु० ताल का वृक्ष, २ ताड़ना, स्त्री० पहचान ।

सं० ताड़का-(तड्=पीटना) स्त्री० एक राक्षसी का नाम ।

सं० ताडक-(तड्+अक) क० पु० पीटनेवाला, सज़ा देनेवाला, नाम दैत्यका, २ एक मंत्र ।

सं० ताड़न पु० } (तड्=पीटना)
ताड़ना स्त्री० } दंड, झिड़की, सज़ा, मार, डांट, धमकी ।

प्रा० ताड़ना-क्रि० स० जानना, पहँचानना ।

सं० ताड़नी-स्त्री० चाबुक, औंगी, पैना, कोड़ा ।

प्रा० ताड़ी-(ताड़) स्त्री० ताड़का

रस जिस में नशा होताहै, २ कटार की मूठ ।

सं० ताड़ित–(तड्+इत)र्म्म० पु० मारा गया, पीटा गया ।

सं० ताड्यमान–र्म्म० पु० मारने योग्य, पीटने लायक ।

सं० ताण्डव–(तण्ड एक ऋषि का नाम जिसने पहले पहल इसनाचको निकाला और सिखलाया, वा तडि =पीटना)पु० महादेव और उनके गणों का नाच, २ पुरुषोंका नाच, जैसे "पुंनृत्यंताण्डवंप्रोक्तं स्त्रीनृत्यंलास्य मुच्यते" उद्धतनृत्य, तृणविशेष ।

सं० तात–(तत्=फैलाना अपने वंश को वा बल को) पु० बाप, २ प्यारा, जैसे "तातप्रणामतातसनकहेहू" (रामायण) यहां पहले तात शब्द का अर्थ प्यारा और दूसरे तात शब्दका अर्थ बापहै, ३ प्यारका शब्द जो मा बाप अपने लड़के बालों के लिये और गुरु अपने शिष्योंके लिये बोलते हैं, जैसे "कहहुतातजननीबलिहारी" (रामायण) ४ भाई, ५ मित्र, सखा, गु० बड़ा, पूज्य, आर्य ।

प्रा० तात, ताता } (सं० तप्त) गु० गर्म, उष्ण ।

प्रा० तातनी–सर्वना० उसको ।

तातनो–सर्वना० उसका ।

प्रा० ताते, तातैं } सर्वना० उससे, तिससे ।

सं० तात्कालिक–(तत्काल) गु० उसी दमका, उसी समय का ।

सं० तात्पर्य–(तत्पर) पु० अभिप्राय, आशय, अर्थ, मतलब ।

सं० तादर्थ्य–पु० तिसके लिये, तिस के अर्थ, तिसवास्ते ।

सं० तादृश–(तत्=वह, दृश्=देखना) वैसाही, उसी के बराबर, उसी के समान, उसका सा ।

सं० तान–(तन्=फैलाना) स्त्री० राग का उच्चारण, स्वर, राग, ताल ।

प्रा० तानतोड़ना–बोल० टट्टा मारना, ताल पूरी करना ।

प्रा० ताना–(सं० तन्=फैलाना) पु० कपड़ा बुनने की कलपरसूतका फैलाना, ताना सूत, तानी ।

प्रा० ताना, तावना } (सं० तपन, वा तापन, तप्=तपाना) क्रि० स० गर्म करना, ताव देना, परखना ।

सं० तान्त्रिक–(तन्त्र) क० पु० तन्त्रशास्त्र का जाननेवाला, पंडित ।

प्रा० तान्ना–(सं० तनन, तन्=फैलाना) क्रि० स० फैलाना, खैंचना, कसना, तम्बू तानना, बोल० डेरा खड़ा करना ।

सं० ताप–(तप्=गर्म होना) पु० गर्मी, २ दुःख, पीड़ा, सन्ताप, ३ शोच, फिक्र, शोक, खेद, उदासी, स्त्री० तप, ज्वर, जर ।

सं॰ तापक-(तप्+अक) क॰पु॰दुः-खदायी, दुःखद, दुःखदाता ।

सं॰ तापित-(ताप्+इत) कर्म॰ पु॰ दुःखित, तापयुक्त । [तेहाल ।

प्रा॰ तापतिल्ली-स्त्री॰प्लीहा, पिलही,

प्रा॰ तापना-(सं॰ तापन, तप्=तपाना) क्रि॰ अ॰ गर्माना, देह सेकना, शरीर गर्म करना, जाड़े में आग के पास बैठकर देहको गर्माना, घाम खाना ।

सं॰ तापस-(तपस्=तप) पु॰तपसी, तपस्वी, तप करनेवाला, योगी ।

प्रा॰ तामड़ा-(सं॰ ताम्र) पु॰ तांबे जैसे रंगका एक हलकेमोलकारतन।

सं॰ तामरस-(तामर=पानी, सम्=सोना) पु॰ कमल, कँवल, २ तांबा ३ सोना ।

सं॰ तामस-(तमस्=तमोगुण, वा अंधेरा) गु॰ तमोगुणी, तामसी, क्रोध मोह आदि में लगा हुआ, पु॰ अंधेरा, २ तमोगुण, ३ दुष्ट, ४ अहंकार, क्रोध मोह आदि ।

प्रा॰ तामसी-(सं॰तामसिक) गु॰ क्रोधी, तमोगुणी, रिसकरनेवाला ।

प्रा॰ तामेश्वर-(सं॰ ताम्रेश्वर, ताम्र+ईश्वर)पु॰ तांबे की राख, ताम्र, बंग ।

सं॰ ताम्बूल-(तम्=चाहना) पु॰ पान, नागरबेल का पत्ता ।

सं॰ ताम्बूली } **ताम्बूलिक** } पु॰ तमोली, पान बेचनेवाला ।

सं॰ ताम्र-(तम्=चाहना)पु॰तांबा, २ लालरंग ।

सं॰ ताम्रकार } **ताम्रकुट्टक** } क॰पु॰ ठठेरा, तांबा पीटनेवाला ।

फ़ा॰ तार-पु॰ लोहे आदि धातु का खिंचाहुआ तागा जो सितारआदि बाजों में लगाया जाता है,-तार बांधना, बोल॰ किसी काम को लगातार जारी रखना,-तार टूटना, बोल॰ अलग होजाना, छूट जाना, किसीकामका बंद होजाना ।

सं॰ तारक-(तॄ=पारकरना, वा बचाना) क॰ पु॰ बचानेवाला, रक्षक, उद्धार करनेवाला, पु॰ एक राक्षसका नाम, २ एक प्रकार का मन्त्र, ३ तारा, सितारा, नक्षत्र, ४ आंखका तारा, पुतली, ५ नाविक ।

सं॰ तारण=(तॄ=पारकरना, बचाना) गु॰ पार करनेवाला, पु॰ उद्धार, पार करना, २ घरनई, बेड़ा ।

सं॰ तारणतरण-(तॄ=पार करना) गु॰ पार करनेवाला, और पार होनेवाला ।

प्रा॰ तारणा } **तारना** } (सं॰तारण) क्रि॰ स॰ पार करना, ब-

चाना, उद्धारकरना, मुक्ति देना, मुक्त करना।

सं० तारतम्य-भा० पु० फ़र्क़, अंतर, दर्जा बदर्जा।

प्रा० तारतोड़-पु० कारचोबी, बूटानिकालना, बूटेका काम, बूटेकारी।

सं० तारा-(तॄ=पार होना, अर्थात् जाना) पु० नक्षत्र, सितारा, २ आंख की पुतली, स्त्री० बालिवानर की स्त्री और अंगदकी मा, २ बृहस्पति की स्त्री, ३ देवी का नाम।

प्रा० तारेगिनना-बोल० नींद नहीं आना, नींद न पड़ना।

सं० तारिक-पु० उतराई, स्त्री० ताड़ी, तालरस।

सं० तार्किक-(तर्क) क० पु० नैयायिक, तर्कशास्त्री।

सं० ताल-(तलू=ठहरना, वा तड़=पीटना) पु० एकवृक्षका नाम, ताड़, खजूर, २ ताली बजाने का शब्द, ३ गानका परिमाण, ४ झांझ, मँजीरा ५ ताला, ६ तालाब ७ कुश्ती करने में भुजा पर हाथ मारने का शब्द।

प्रा० तालमारना } तालठोंकना } बोल० कुश्ती करने में भुजा को हाथ से ठोंकना। [नाम।

प्रा० तालमखाना-पु० एक पौधे का

तालवृन्त } तालवृन्तक } पु० पंखा, व्यजन, बेना, बादकश।

सं० तालव्य-(तालु) गु० जो तालु से बोले जायँ, जैसे इ ई च छ ज झ ञ य श।

प्रा० ताला-(सं० ताल) पु० बन्द करने की कल, कुलफ़, कुफ़्ल।

सं० तालांक-(ताल+अंक) पु० बलराम, २ महादेव, ३ नाचने वाला, ४ ताल का लक्षण, ५ आरा, ६ ग्रंथ।

प्रा० ताली-(सं० ताल) स्त्री० कुंजी, चाभी, २ हाथ बजाना, ३ एक प्रकार का ताड़ वृक्ष।

प्रा० तालीएकहाथसेबजाना-बोल० यह मुहावरा अनहोना जतलाने के लिये बोलाजाता है।

प्रा० तालीबजाना } तालीमारना } बोल० हाथ पर हाथ मारना, हाथ बजाना, २ धिक्कारना, धुतकारना, हूहूकरना।

सं० तालु-(तॄ=पार होना अर्थात् जहां से अक्षर निकलते हैं) पु० तालुवा, तालू।

प्रा० ताव-(सं० ताप, फ़ा० ताफ़) पु० ताप, गर्मी, २ क्रोध, कोप, तमक, ३ बल, ज़ोर, ४ चमक, तेज, प्रताप, ५ ऐंठ, मरोड़, बल, बट, अकड़, ६ काग़ज़ की परत, ७ जांच, परख, कस, ८ शीघ्रता, उतावली,

हड़बड़ी ।

प्रा०तावदेना—बोल० मरोड़ना, बटना, ऐंठना, २ मोछों पर हाथ फेरना, मोछें सँवारना, ३ गर्म करना (जैसे लोहे को) ।

प्रा०तावपेचखाना—बोल० गर्महोना, क्रोधितहोना, गुस्सा होना ।

सं०तावत्—(तव्=वह) क्रि० वि० उतना, इतना, यहां तक, यहां लों, तब तक ।

प्रा०तावना—सं० तपन, वा तापन, (तप्=तपाना) क्रि० स० गर्म करना, गर्माना, २ ताव देना, परखना, कसना, जांचना, ३ऐंठना, मरोड़ना ।

प्रा०ताश—पु० लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा०तास—पु० गंजफा, २ लप्पा, बादला, बूटेदार पट्टू ।

प्रा०तासु—(सं० तस्य) सर्वना० उसका, तिसका ।

प्रा०तासों—(सं० तस्मात्) सर्वना० उससे, तिससे ।

प्रा०ताहि—(सं० तम्) सर्वना० उसको, उसे, तिसको तिसे ।

प्रा०तिकोनिया—(सं० त्रिकोण) गु० तिखूंटा ।

सं०तिक्त—(तिज्=तीखाकरना) गु० तीता, कडुवा ।

प्रा०तिगुन—(सं० त्रिगुण, त्रि=तीन, गुण=गुना) गु० तिगुना, तीन गुना, तिहरा ।

सं०तिग्म—(तिज्+म) र्म० पु० तीक्ष्ण, पैना, तेज़ ।

प्रा०तिच्छन } (सं० तीक्ष्ण) गु०
तीछन } तीखा, तीता, कठोर, कड़ा ।

प्रा०तिजारी—(सं० तृतीय ज्वर, तृतीय=तीसरा, ज्वर=तप) स्त्री० जो तप एक दिन बीच में न आकर तीसरे दिन फिर आवे, अंतरिया, ज्वर ।

सं०तिजिल—(तिज्+इल्, तिज्=क्षमा करना) क० पु० चन्द्रमा ।

प्रा०तित—(सं० तत्र) क्रि० वि० वहां, तहां, तिधर । [क्षमी ।

सं०तितिक्षक—क० पु० सहनशील,

सं०तितिक्षा—(तिज्=सहना) भा० स्त्री० धीरज, क्षमा, सहनशीलता, धैर्य्य सहना ।

सं०तिथि—(अत्=जाना) स्त्री० हिंदी महीनों के दिन, हिंदी महीनों की तारीख ।

प्रा०तिनका—(सं० तृण)पु० खर, डांठी, घासका टुकड़ा ।

प्रा० तिनकादांतोंमेंलेना—बोल० आधीन होना, जी दान मांगना, जी की अमन मांगना ।

प्रा०तिबारा-(सं०त्रि=तीन, बार=दरवाज़ा) पु० तीनदरवाज़ेका मकान, कमरा, तिदरी, २(तीनबार) गु० तीनबार, तीनदफ़े।

सं०तिमिर-(तिम्=भिगोना, वा तम्=अँधेरा होना) पु० अंधेरा, अन्धकार, २ एक प्रकारका आंख का रोग।

प्रा०तिमी-स्त्री० बड़ी मछली।

प्रा०तिय-(सं० स्त्री) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा०तिरखा-(सं० तृषा) स्त्री० प्यास, पीने की चाह, पियास, २ तृष्णा, चाह।

प्रा०तिरछा } तिर्छा } (सं० तिर्यञ्च्, तिरस्=टेढ़ा, अंच्=जाना) गु० टेढ़ा, बांका, आड़ा।

प्रा०तिरछादेखना-बोल० कनआँखियों देखना, टेढ़ी आंखसे देखना, तिरछी चितवनसे देखना।

प्रा०तिरना-(सं०तरण) क्रि० अ० पैरना, हेलना, तैरना।

प्रा०तिरपन-(सं० त्रिपञ्चाशत्, त्रि=तीन, पञ्चाशत्=पचास) गु० तीन और पचास।

प्रा०तिरपोलिया-(त्रि=तीन, पोल=दरवाज़ा) पु० तीनदरवाज़ेका मकान, २ तिराहा।

प्रा०तिरसठ-(सं० त्रिषष्टि, त्रि=तीन, षष्टि=साठ) गु० तीन और साठ।

सं०तिरस्कार-(तिरस्=अवज्ञा, वा अनादर, कृ=करना) पु० अपमान, अवज्ञा, अनादर, निन्दा, घिन, धिक्कार। [बेइज़्ज़ती।

सं०तिरस्कृत-कर्म० पु० अपमानित।

सं०तिरस्क्रिया-(तिरस्+क्रिया) अनादर, त्याग।

प्रा०तिराना-(तिरना) क्रि० स० तैराना, पैराना, हेलाना।

प्रा०तिरानबे-(सं० त्रिनवति, त्रि=तीन, नवति=नब्बे) गु० नब्बे और तीन, ९३।

प्रा०तिरासी-(सं० त्र्यशीति, त्रि=तीन, अशीति=अस्सी) गु०अस्सी और तीन, ८३।

प्रा०तिरिया-(सं०स्त्री०) गु० नारी, लुगाई, स्त्री।

प्रा०तिरियाचरित्र-(सं० स्त्रीचरित्र) स्त्री० स्त्रियों के छल बल, स्त्रियों के फ़रेब।

सं०तिरोधान-पु० आच्छादन, गुप्त, अन्तर्द्धान।

सं०तिरोहित-(तिरस्=छिपा, धा=रखना) गु० छिपा हुआ, गुप्त, लुका हुआ।

प्रा०तिर्मिराना-क्रि० अ० चौंधि-

याना, २ लहकना, हिलना, फड़फड़ाना, ३ पानीपर तेलका तैरना।

सं॰तिर्य्यक्—गु॰टेढ़ा,तिरछा, कुटिल, पु॰ पशु, पक्षी।

प्रा॰तिर्हुत, तिरहुत, तिरहुति—(सं॰तीरमुक्ति) पु॰ एक जिलाका नाम जो सूबे बिहार में है और जिसका मुख्य नगर मुज़फ़्फ़रपुर है।

सं॰तिल—(तिल्=चिकना होना) पु॰ एक पौधा अथवा उसका बीज जिसका तेल निकलता है, २ देह में एक काला चिह्न।

सं॰तिलक—(तिल्=जाना) पु॰ टीका ललाट में चन्दन वा केशर वा रोली आदिका चिह्न, गु॰ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम, अग्रगण्य, जैसे "रघुकुलतिलकसदातुम उथपन थापन" अर्थात् रघुवंशियों में प्रधान वा श्रेष्ठ, (जानकीमंगल)

प्रा॰तिलकुट—(तिल, कुट=कूटाहुआ) पु॰ एकतरहकी मिठाई जिसमें तिल कूटकर मिलाते हैं।

प्रा॰तिलङ्गा—(सं॰तैलंग, करनाटक देश) पु॰तैलंगदेशकावासी,पहलेही पहल अंगरेजी सेना में तैलंग अर्थात् करनाटक देशके लोग भरती हुयेथे इसलिये अंगरेजी सेना के सब सिपाहियों को तिलङ्गे कहते हैं।

प्रा॰तिलंगी—स्त्री॰गुड्डी,पतंग, चंग।

प्रा॰तिलड़ा—(सं॰ त्रि, पा॰ लड़, लड़ी) पु॰ तीन लड़का हार।

प्रा॰तिलहा—(तैल) गु॰ तेलिया तेल सा चिकना।

प्रा॰तिलुवा—(तिल)पु॰तिलकेलड्डू।

प्रा॰तिल्ली-स्त्री॰पिलई, तापतिल्ली।

सं॰ तिलोत्तमा—स्त्री॰स्वर्गवेश्या।

सं॰तिलोदक—(पु॰तिल+उदक) तिल और जल तर्पण, पितरों का पानी।

सं॰तिलौदन—(तिल+ओदन) कृसरान्न अर्थात् खिचड़ी।

प्रा॰तिष (सं॰ तृष्) स्त्री॰ प्यास, पियास।

प्रा॰तिसरायत—(तीसरा) पु॰ तीसरा मनुष्य, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच,तिहायत।

प्रा॰तिहत्तर—(सं॰त्रिसप्तति, त्रि=तीन,सप्तति=सत्तर) गु॰ सत्तर और तीन, ७३।

प्रा॰तिहरा—(त्रीणि=तीन) पु॰ तिलड़ा, गु॰ तिगुना।

प्रा॰ तिहाई—(सं॰ तृतीय) स्त्री॰ तीसरा भाग।

प्रा॰तिहायत-(तीसरा) पु॰ तीसरा मनुष्य, तिसरायत, बिचवैया, मध्यस्थ, पंच।

प्रा० तिहारा-(सं० तव) सर्वना० तेरा, तुम्हारा ।

प्रा० तिहिं-सर्वना० उन्हों को ।

प्रा०तिहुँ, तिहूँ (सं० त्रि) गु० तीन ।

सं०तीक्ष्ण-(तिज्=तीखा होना) गु० तीखा, चोखा, पैना, तेज़, तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ उत्साही, फुर्तीला, चालाक, तेज़, ४ चतुर, प्रवीण, ५ क्रोधी ।

प्रा०तीखा-(सं०तीक्ष्ण) गु० चोखा, पैना, तेज़, तीक्ष्ण, तीव्र, २ तीता, कडुवा, ३ क्रोधी ।

प्रा०तीज-(सं० तृतीया) स्त्री० तीसरी तिथि ।

प्रा०तीत, तीता (सं० तिक्त) गु० चरपरा, कडुवा, कटु, २ तीखा, तीक्ष्ण, तीव्र ।

प्रा०तीतर-(सं० तित्तिरि, तित्ति ऐसा शब्द, रा=लेना) पु० एक पखेरूका नाम ।

प्रा०तीतरकेमुँहलछमी, तीतरकेमुँहकुशल जब कि कोई कमसमझ मनुष्य किसी बात को निर्णय करने के लिये नियत किया जाय जिसके निर्णय करने में वह योग्य नहीं है तब उस मनुष्यके लिये यह कहावत बोली जाती है ।

प्रा०तीतरी—स्त्री० तितली, पांखों वाला कीड़ा ।

प्रा०तीन—(सं० त्रि०)गु० दो और एक, तीन, ३ ।

प्रा०तीनतेरह-तित्तर बित्तर, डांवा डोल, छिन्न भिन्न, खराब, सत्यानास, चौपट, तहस नहस ।

प्रा०तीय-(सं०स्त्री) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री, भार्या ।

प्रा०तीयल-(तीय) स्त्री० स्त्रियोंके कपड़ों का जोड़ा ।

सं०तीर-(तीर्=पार हो जाना, वा पूरा करना) पु० किनारा, तट, कूल, २ वाण, क्रि०वि०पास, ढिग ।

सं०तीर्थ-(तॄ=पारहोना) पु० पवित्र जगह, पुण्यस्थान, यात्राकी जगह, जैसे प्रयाग, काशी, गया, जगन्नाथपुरीआदि विशेषकर ये जगह जिन के पास पवित्र नदियां (जैसे गंगा यमुना आदि) बहती हों और उन के आस पास की जगह ।

सं०तीर्थराज-(तीर्थ+राजा) पु० तीर्थोंका राजा, प्रयाग, इलाहाबाद ।

प्रा०तीली-(सं० तूली) स्त्री सींक, सलाई ।

सं०तीव्र-(तीव्=मोटा होना, वा तिज्=तीखा होना) गु० तीखा तीक्ष्ण २ तीता, चरपरा, बहुत कडुवा, ३ अत्यन्त, अपार ।

प्रा०तीस—(सं० त्रिंशत्)गु० बीस और दश, ३० ।

प्रा० तीसरा–(सं० तृतीय) गु० ती-जा, तिहायत।

प्रा० तीसी–(सं० अतसी) स्त्री० अलसी, अरसी।

प्रा० तुक-स्त्री० दोहे चौपाई आदि छंद में पद के अन्त के अक्षरों का मिलान, यमक, जमक, क़ाफ़िया संबंध, २ छन्द का एकपद।

प्रा० तुकली } स्त्री० छोटी गुड्डी,
तुक्कल } छोटी पतंग।

सं० तुङ्ग–(तुञ्=बचाना, वा दृढ़हो-ना) गु० ऊंचा, लंबा, पु० एक पेड़ का नाम, २ पहाड़।

सं० तुङ्गभद्रा-स्त्री० एक नदी का नाम जो मैसूर में है।

सं० तुच्छ–(तुद्=दुःखसे, छो=काट-ना) पु० पुवाल, तुस, गु० नीचा, नीच, शून्य, छूछा, निष्फल, अवज्ञा करने योग्य, घृणाके योग्य, अधम, हलका, निकम्मा, ओछा।

सं० तुट-पु० संग्राम, टूटफूट।

सं० तुण्ड–(तुड्=तोड़ना) पु० मुख टोंट, चोटरी, नोक, चोंच।

प्रा० तुतराना } क्रि० अ० हिचक
तुतलाना } हिचकके बोलना, हकलाना, अटक अटकके बोलना, अधूरा बोलना, साफ नहीं बोलना, जैसे छोटे बालक बोलते हैं।

प्रा० तुपक-स्त्री० बंदूक, पिस्तोल।

प्रा० तुम–(सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम पुरुष का बहुवचन। [पिजाना।

प्रा० तुमाना–क्रि० स० धुनवाना,

सं० तुमुल-पु० अत्यन्त रोमहर्षण युद्ध, घोरयुद्ध।

सं० तुम्बुर-पु० तम्बूरा, नाम गंधर्व।

सं० तुम्बरी-स्त्री० बीण, बीणा।

प्रा० तुरई-स्त्री० एक तरकारीका नाम।

प्रा० तुरग } (तुर=वेग से, गम्=
तुरी } जाना) पु० घोड़ा।

सं० तुरङ्ग } (तुर=वेगसे, गम्=जा-
तुरङ्गम } ना) पु० घोड़ा, तुरग, अश्व, बाजी।

प्रा० तुरत } (सं० त्वरित, त्वर्=ज-
तुरन्त } ल्दीकरना) क्रि० वि० झ-टपट, तुरतफुरत, शीघ्र, जल्दी, अभी।

प्रा० तुरपन-(तुरपना) स्त्री० एक तरह का टांका।

प्रा० तुरपना-क्रि० स० सीना, टांकना।

प्रा० तुरही } (सं० तूर्य) स्त्री० रण-
तुरी } सिंगा, नफ़ीरी, सहनाई करनाई, नरसिंहा।

प्रा० तुराई-स्त्री० सेज, शय्या, तोशक, बिछौना, २ (त्वरा) गु० वेगसे।

सं० तुरीय–(चतुर्=चार) गु० चौथा, पु० निर्गुण ब्रह्म, स्त्री० एक अवस्था।

प्रा० तुरुक-मुसलमान, तुर्किस्तान का रहनेवाला।

प्रा० तुल } (सं० तुल्य) गु० बराबर,
तूल } समान ।

प्रा० तुलकरखड़ेहोना-बोल० लड़नेकेलिये आमने सामने खड़ेहोना ।

प्रा० तुलना—(सं० तुलन, तुल्=तोलना (क्रि० अ० तोला जाना, २ उपमा, बराबर होना, लड़ने को खड़े होना ।

प्रा० तुलसिका } (तुला=बराबरी,
तुलसी } अस्=फेंकना, अर्थात् जिसके बराबर सृष्टिमें कोई नहीं) एक पौधे का नाम ।

सं० तुलसी } पु० हिंदी रामायण
तुलसीदास } कर्त्ता ।

सं० तुला—(तुल्=तोलना) स्त्री० बराबरी, २ तराजू, ३ सातवीं राशि (ज्योतिष में) ।

सं० तुलाधार—(तुला+आधार) क० पु० वैश्य, बनिया, बक़ाल ।

सं० तुलित-म्री० पु० तौला हुआ ।

सं०तुल्य-(तुल्=तोलना, वा० तुलना) गु० बराबर, समान, सदृश, सम ।

सं० तुष=भूसी, छिलका, चोकर ।

सं० तुषार—(तुष्=प्रसन्न करना वा होना) पु० शीत, पाला, हिम, बर्फ़, ओस, गु० ठंढा ।

सं० तुष्ट(तुष्=प्रसन्न होना) क० पु० तृप्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न, आनंद, हर्षित, साविर ।

सं० तुष्टि-(तुष्=प्रसन्न होना) भा० स्त्री० तृप्ति, सन्तोष, आनंद, प्रसन्नता ।

सं० तुहिन-(तुह्=मारना, वा हानि पहुँचाना) पु० पाला, बर्फ़, हिम ।

प्रा० तू-(सं० त्वम्) सर्वना० मध्यम पुरुष, एकवचन ।

प्रा० तूतू-कुत्ते को पुकारने का शब्द ।

प्रा० तूंबा—(सं० तुम्ब, तुबि=मांगना) पु० तुम्बा, एक तरह का बरतन जिसमें साधुलोग पानी रखते हैं ।

सं० तूण } (तूण्=भरना, वा सिकु-
तूणीर } ड़ना) पु० भाथा, तर्कस, तीर रखने की पेटी, निषंग ।

प्रा० तूतक } (सं० तुत्थ, तुत्थ=
तूतिया } फैलानावाढकना) पु० नीलाथोथा ।

प्रा० तून—(सं० तुन्न, तुद्=पीड़ा देना) पु० एक पेड़ का नाम जिस की लकड़ीकी मेज़ कुरसी आदि बनती हैं उसके फूल पीले होते हैं जिससे कपड़े रंगे जाते हैं ।

सं० तूर्ण—(तूर् वा त्वर्=जल्दी करना) क्रि० वि० झटपट, तुरन्त, शीघ्र ।

सं० तूल—(तूल्=निकालना, वा भरना) स्त्री० रूई, निर्बीज रुई ।

सं० तूली—(तूल्=भरना) स्त्री० चितेरे की कूची, तीली, सींक ।

प्रा० तूवर } पु० राजपूतों की एक
तूंवर } जाति ।

सं० तूष्णीम्-(तूष्=सन्तोषकरना वा सन्तुष्ट होना) क्रि० वि० चुपचाप, मौन, खामोश ।

सं० तृण-(तृह्=नाशकरना) पु० घास, चारा, घासफूस, तिनका, खर ।

सं० तृणवत्—(तृण=तिनका, वत्=बराबर) गु० तिनके के बराबर, तुच्छ, हलका ।

सं० तृतीय-(त्रि=तीन) गु० तीसरा ।

सं० तृतीया-(तृतीय) स्त्री० तीसरी तिथि ।

सं० तृप्त-(तृप्=तृप्त होना) कृ० पु० सन्तुष्ट, हर्षित, आनंदित, सुखी ।

सं० तृप्ति—(तृप्=तृप्तहोना) भा० स्त्री० सन्तोष, हर्ष, प्रसन्नता, अघाना ।

सं० तृष् } (तृष्=प्यासाहोना) भा०
तृषा } स्त्री० पियास, प्यास, तृष्णा, पिपासा ।

सं० तृषार्त्त-(तृषा=पियास, आर्त्त=घबरायाहुआ) गु० पियास से व्याकुल, बहुत प्यासा ।

सं० तृषावन्त-(तृषा=पियास, वन्त=वाला) कृ० पु० पियासा, प्यासा ।

सं० तृषित-(तृषा) कृ० पु० पियासा, प्यासा ।

सं० तृष्णा-(तृष्=प्यासाहोना, वा लोभ करना) स्त्री० पियास, प्यास, २ लोभ, लालच, ३ चाह, इच्छा, लालसा, जो वस्तु नहीं मिली हो उसकी चाह ।

सं० ते-सर्वना० वे, २ तेरा ।

प्रा० ते }
तैं } अव्यय० से ।

प्रा० तेंतालीस-(सं० त्रयश्चत्वारिंशत् त्रि=तीन, चत्वारिंशत्=चालीस) गु० चालीस और तीन ।

प्रा० तेंतीस-(सं० त्रयस्त्रिंशत्, त्रि=तीन, त्रिंशत्=तीस) गु० तीस और तीन ।

प्रा० तेंदुवा-पु० चीता, बाघ ।

प्रा० तेईस-(सं० त्रयोविंशति, त्रि=तीन, विंशति=बीस) गु० बीस और तीन ।

सं० तेज-(तेजस्, तिज्=तीखाहोना) भा० पु० प्रताप, ऐश्वर्य, पराक्रम, प्रभाव, चमक, २ बल, ३ आग, ४ तीक्ष्णता । [नायागया ।

सं० तेजित-स्प० पु० शाणित, पै-

प्रा० तेजपात-(सं० तेजपत्र, तेज=तीखा, पत्र-पत्ता) पु० तेज की पत्ती, एक तरह का गरम मसाला ।

प्रा० तेजमान } (सं० तेजस्विन्)
तेजवन्त } गु० प्रतापी, ऐश्वर्यवान् । [तितना ।

प्रा० तेता-(सं० तावत्) क्रि० वि०

प्रा० तेतो-क्रि० वि० तितना ।

सं० तोमर-पु० नाम शस्त्र, २ एक प्रकार का छन्द ।

प्रा० तेरस-(सं० त्रयोदशी) स्त्री०

तेरहवीं तिथि ।

प्रा० तेरह—(सं० त्रयोदश) गु० तीन और दश १३ । [बरस ।

प्रा०तेरुस—(सं०तृतीय)पु० तीसरा

प्रा० तेल—(सं० तैल, तिल अर्थात् तिलों से निकला हुआ) पु०तिलों से निकलाहुआ चिकना पदार्थ ।

प्रा० तेलचढ़ाना—बोल० व्याह में दुलहा और दुलहिन के शिर, कंधे और हाथ पैरों में तेल और हल्दी मलना, (यह व्याहकी एक रीति है)।

प्रा० तेलिया—(सं० तैल) गु०एक प्रकार का रंग ।

प्रा० तेली—(सं० तैली) पु० तेल बेचनेवाला ।

प्रा० तेलिन—स्त्री०तेली की लुगाई।

प्रा० तेवरी—स्त्री० घुरकी, धमकी, झिड़की ।

प्रा० तेवरीचढ़ाना—बोल० घुड़कना, आंख दिखलाना, भौं चढ़ाना।

प्रा०तेवहार—पु०पर्व,उत्सव, मेला ।

प्रा० तेह } पु० क्रोध, कोप, गुस्सा,
तेहा } रिस, झांझ ।

प्रा० तेहर—पु० स्त्रियों के पावँ का गहना । [उनको, तिससे उससे ।

प्रा० तेहि—सर्वना० उसने, उसको,

अ० तैयार=व्यवस्थित, उद्यत, मौजूद ।

प्रा० तैरना—(सं०तरण) क्रि० अ० हेलना, पैरना, तिरना, पारहोना ।

सं० तैलङ्ग—पु०कर्णाटकदेश ।

प्रा० तोंद—(सं०तुन्द,तुण्=खाना) स्त्री० बड़ा पेट ।

प्रा० तोंदैल } (तोंद) गु० मोटापेटवाला ।
तोंदैला }

प्रा० तोड़—(तोड़ना) पु० टूट,फूट, खण्डन, २नदीकावेग,३दूधकापानी ।

प्रा० तोड़जोड़—बोल०काट छांट, काट कूट, बात को ठीक ठ क करके बोलना ।

प्रा० तोड़डालना—बोल० तोड़ना, और नाश करना, गिराना, टुकड़े टुकड़े करना ।

प्रा०तोड़देना—बोल०तोड़ना, बिगाड़ना ।

प्रा० तोड़लेना—बोल० खींचना, नोचना, खींचलेना (जैसे पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा०तोड़ना—(सं०त्रोटन,त्रुट्=तोड़ना) क्रि० स० फोड़ना,फाड़ना, टुकड़े करना, २ रुपया भुनाना, ३ खींच लेना (पेड़से फल फूल आदि) ।

प्रा० तोड़ा—पु० कमी, घटी, २ हजार रुपयों की थैली, ३ पलीता, ४ रस्सीका टुकड़ा, ५ सिकली, ६ पांवमें पहनने का गहना ।

प्रा० तोतला-गु०हकला,लड़बड़हा।

प्रा० तोता—पु०सुग्गा,सुआ,सूगा।

प्रा० तोपना-क्रि० स० ढांकना, छिपाना, गाड़ना।

प्रा० तोबड़ा-पु० एक प्रकार की थैली जिसमें घोड़ा दानाखाता है।

सं० तोमर-(तु=नाश करना, और मृ=मारा जाना, वा तो गये हुये (तु=जाना और मृ=मारा जाना अर्थात् जो उसके सामने जाते हैं वे मारेजातेहैं) पु० बरछी, सांगी, एक शस्त्रका नाम, २ एक छंदका नाम।

सं० तोय-(तु=जाना, वा बढ़ना वा तु=पूर्णता, तु=भरना और या जाना अर्थात् जो हरएक चीज को भरदेता है पु० पानी, जल, नीर, वारि।

सं० तोयद-(तोय=पानी, द=देने वाला, दा=देना) पु० बादल, मेघ, घटा।

प्रा० तोयधर-(तोय=पानी, धर= रखनेवाला, धृ=रखना) पु० बा- दल, मेघ, घन।

सं० तोयनिधि-(तोय=पानी, निधि =खजाना) पु० समुद्र, सागर, स- मंदर। [तड़ागादि।

सं० तोयाशय-धि० पु० जलस्थान,

प्रा० तोर-सर्वना० तेरा।

सं० तोरण-(तुर्=जल्दी करना) पु० घर के द्वार के बाहर सिंह के आकार काठ जो व्याह में अथवा और कोई उत्सव में बाँधा जाता है, २ फूलोंकी माला जो पर्व अ- थवा किसी उत्सव में फाटक पर बांधी जाती है। [वैथा

सं० तोलक-क० पु० तौला, तौल-

प्रा० तोल } (सं० तुल्=तोलना) पु० माप, जोख, नाप।
तौल

प्रा० तोला-(सं० तुल्=तौलना) पु० बारह माशे की तौल।

सं० तोषक-(तुष्+अक) क० पु० तृप्ति कारक, संतोषी, प्रसन्न करनेवाला।

सं० तोष-(तुष्=प्रसन्न होना) भा० पु० सन्तोष, हर्ष, आनंद, प्रसन्नता।

प्रा० तोहि-सर्वना० तुझको, तुझे।

प्रा० तौलना-(सं० तुल्=तौलना) क्रि० स० जोखना, तौल करना, वजन करना।

सं० त्यक्त-(त्यज्=छोड़ना) र्म० पु० छोड़ाहुआ, त्यागाहुआ।

सं० त्याग-(त्यज्=छोड़ना) भा० पु० छुड़ाव, तजना, २ दान, ३ विरक्ति, वैराग्य।

प्रा० त्यागना-(सं० त्याग) क्रि० स० छोड़ना, तजना, त्यागकरना।

सं० त्यागशील-क० पु० दाता, दा- नी, फ़य्याज़।

सं० त्याजित-र्म० पु० छोड़ाहुआ, विसर्जित।

सं० त्यागी-(त्यागिन्, त्याग) क० पु० छोड़नेवाला, २ वैरागी, ३ उदार, दाता।

सं० त्याज्य-र्म्म० पु० त्यागने योग्य, छोड़ने लायक। [ख्याति।

सं० त्रपा-स्त्री० लज्जा, कीर्त्ति, यश,

सं० त्रपाक-क० पु० लज्जालु, लज्जाशील।

सं० त्रपित(-त्रप्+इत, त्रप्=लजाना) र्म्म० पु० लज्जित, शर्माया हुआ।

सं० त्रयोदशी-(त्रय=तीन, दश=दश) स्त्री० तेरस, तेरहवीं तिथि।

सं० त्रस्त-(त्रस्=डरना) क० पु० डराहुआ, डरपोका, भीत, डरौंवा।

सं० त्राण-(त्रै=बचना) भा० पु० बचाव, रत्ता, पालन, २ मुक्ति, मोत्त, निस्तार, छुटकारा, उद्धार, ३ कवच, लोहेकी कुरती।

सं० त्राणकर्त्ता-(त्राण+कर्त्ता) क० पु० बचानेवाला, मुक्तिदाता, उद्धार करनेवाला, मोत्तदेनेवाला।

सं० त्राता-(त्रै=बचाना) क० पु० बचानेवाला, रत्तक, त्राणकर्त्ता, मुक्तिदाता।

सं० त्रास-(त्रस्=डरना) भा० पु० डर, भय, शङ्का, धाक।

सं० त्रासक-(त्रास+अक) क० पु० डरवानेवाला।

सं० त्रासित-(त्रस्=डरना) र्म्म० डराहुआ, भयान्वित, भयभीत।

प्रा० त्राह-(सं० त्राहि, त्रै=बचाना) वि० बोल० बचाओ, दयाकरो।

प्रा० त्राहत्राहकरना-बोल० विलाप करना, हाय हाय करना, दया के लिये पुकारना, २ दोष लगाना, बुरा कहना।

सं० त्रि-(तृ=पार होना) गु० तीन ३।

सं० त्रिकटु-त्रि=तीन, कटु=करुई वस्तु द्व० सोंठ, पीपर, मिर्च।

सं० त्रिकालदर्शी-(त्रि=तीन, काल=समय, दर्शी=देखनेवाला, दृश=देखना) पु० भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् इन तीनों समय की बात जाननेवाला, त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ २ ऋषि, मुनि।

सं० त्रिकूट-(त्रि=तीन, कूट=चोटी) पु० एकपहाड़का नाम जिसपर लङ्कापुरी बसतीहै, जैसे "गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका" "तहँ रह रावण सहज अशंका" (तुलसीकृतरामायण)।

सं० त्रिकोण-(त्रि=तीन, कोण=कोना) पु० तिकोन, तिखूंट, त्रिभुज।

सं० त्रिगुण-र्म्म० पु० तीन से गुणा हुआ पु० तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।

सं० त्रिजटा-स्त्री० एक रात्तसी का नाम जिसका वर्णन रामायण में है।

सं० त्रिदश-त्रि=तीन, दशा=अवस्था अर्थात् १ जन्मना, २ विद्यमान रहना,

३ नाश होना ये तीनदशाजिनकीहों, अथवा त्रि=तीन,त्रिदश तीस अर्थात् तेंतीस, यहां इस एकही त्रि शब्द का अर्थ दो बार लिया जाता है मुख्य देवता ३ ३ हैं, जैसे १ २सूर्य्य, ११ रुद्र, ८ बसु, और २ विश्वेदेव) पु० देवता, देव, सुर ।

सं० **त्रिदोष**–(त्रि=तीन, दोष= बिगाड़)पु०बात,पित्त,कफका रोग।

सं० **त्रिधा**–(त्रि=तीन, धा=प्रकार अर्थ में प्रत्यय) क्रि० वि० तीन प्रकार से, त्रिविध ।

सं० **त्रिनयन** } (त्रि=तीन नयन
त्रिनेत्र } वा नेत्र=आंख, अर्थात् तीन आंखवाला) पु० शिव, महादेव ।

प्रा० **त्रिपुंड**–(सं० त्रिपुण्ड्, त्रि= तीन,पुण्ड्र=लकीर, पुडि=मलना) पु० तीन रेखा का तिलक, शिव और शक्ति मतवालों का तिलक ।

सं० **त्रिपुर**–(त्रि=तीन, पुर=नगर) पु० एक दैत्य का नाम जिसने तीन पुर बनाये थे ।

सं० **त्रिपुरदहन**–(त्रिपुर=एकराक्षसका नाम, दहन=जलानेवाला, दह्=जलाना) पु० शिव, महादेव।

सं० **त्रिपुरान्तक**–(त्रिपुर+अंतक, नाश करनेवाला)पु०शिव,महादेव।

सं० **त्रिपुरारि**–(त्रिपुर, अरि= वैरी) पु० शिव, महादेव ।

प्रा० **त्रिफला**–(त्रि=तीन, फल) पु० हड़, बहेड़ा, आंवला ।

सं० **त्रिभंगी**–(त्रि=तीन,भंग=टूटा हुआ) पु० टँगड़ी,कमर और गरदन को झुका कर खड़े होने की दशा जैसे " त्रिभङ्गीछबि " स्त्री० एक छन्दका नाम ।

सं० **त्रिभुज**–(त्रि=तीन, भुजा=बाहु) पु० त्रिकोण, तिखूंट, तिकोन ।

सं० **त्रिभुवन**–(त्रि=तीन, भुवन= लोक) पु० तीन लोक (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) ।

प्रा० **त्रिया**–(सं० स्त्री) स्त्री० स्त्री, नारी, लुगाई, तिरिया, तिय, तीय ।

सं० **त्रियामा**–(त्रि=तीन,याम=पहर) स्त्री० रात, रजनी, रात्रि ।

सं० **त्रिलोक**–(त्रि+लोक) पु० तीन भुवन,(स्वर्ग,पृथ्वी,पाताल) ।

सं० **त्रिलोकी**–(त्रिलोक)स्त्री०तीन लोकों का समूह, स्वर्ग, पृथ्वी, और पाताल ।

सं० **त्रिलोकीनाथ**–(त्रिलोकी+ नाथ) पु० तीन लोक के नाथ, विष्णु, ईश्वर ।

सं० **त्रिलोचन**–(त्रि=तीन,लोचन =आंख) पु०महादेव, शिव, २ तीन आंखवाला ।

सं० **त्रिविक्रम**–(त्रि=तीनों लोकमें

त्रि=सब तरफ से, क्रम्=पांव रखना) अर्थात् जिन्हों ने अपने पैर से तीनों लोक को नापा, जैसे हरिवंश में लिखा है कि,(त्रिरित्येवत्रयोलोकाः, कीर्तितामुनिसत्तमैः । क्रमतेतांस्तथा सर्वान्, त्रिविक्रमोजनार्दनः) पु० विष्णु, वामनावतार में राजा बलि को बांधने के समय विष्णु का विराट् रूप ।

सं० त्रिविध—(त्रि=तीन, विध=प्रकार) गु० तीन प्रकार का, तीन तरह का ।

सं० त्रिवेणी—(त्रि=तीन,वेणी=धारा) स्त्री० गंगा यमुना और सरस्वती का संगम जो प्रयाग में हुआ है, तीन नदियों का संगम ।

सं० त्रिशिर—(त्रिशिरस्,त्रि=तीन, शिरस्=सिर, अर्थात् जिसके तीन सिर हों) पु० एक राक्षसका नाम, रावण का बेटा वा भाई ।

सं०त्रिशूल—(त्रि=तीन, शूल=लोहे का तीखा कांटा) पु० एक अस्त्रका नाम जिसके लोहेके तीन तीखे कांटे होते हैं, महादेव का अस्त्र ।

सं०त्रिशूलपाणि—(त्रिशूल+पाणि=हाथ, अर्थात् जिसके हाथ में त्रिशूल है) पु० महादेव, शिव, २ त्रिशूलरखनेवाला ।

सं० त्रिसन्ध्या—(त्रि=तीन,सन्ध्या =समय) स्त्री० प्रभात, दोपहर और सांझ, प्रातः, मध्याह्न, सायंकाल ।

सं० त्रुटि—(त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० टूट, हानि, कमी, न्यूनता, (टूट शब्दको देखो) ।

सं० त्रेता-(त्रि=तीन, इता=पाया, वा त्रय=तीन) पु० यज्ञकी तीन पवित्र अग्नि (जैसे १ दक्षिणाग्नि, २ गार्हपत्य, ३ आहवनीय) २ दूसरा युग जो १२९६००० बरस का था।

सं० त्रैराशिक—(त्रि=तीन,राशि=समूह) स्त्री० तीन जानी हुई रमशियों का हिसाब ।

सं०त्रैलोक्य—(त्रिलोक) भा०पु० त्रिलोकी, आकाश,पाताल,पृथ्वी।

सं० त्रोटक—(त्रुट्=तोड़ना) पु० एक छन्दका नाम ।

सं० त्रोटी—(त्रुट्=तोड़ना) स्त्री० चञ्चु, चोंच, ठोंठ, २ पखेरू ।

सं० त्र्यम्बक—(त्रि=तीन,अम्बक=आंख) पु० महादेव, शिव, त्रिनयन, त्रिलोचन ।

सं० त्वक् } (त्वच्=ढकना) स्त्री०
त्वचा } चमड़ा छूनेकी इन्द्री, स्पर्शइन्द्री, छाल, छिकला, वकला, शरीर पर का चाम ।

सं० त्वरा (त्वर्=जल्दी करना) स्त्री० शीघ्रता, जल्दी, उतावली, तेजी ।

संं०त्वरित—(त्वर्=जल्दी करना) कृ० पु० तुरंत, झटपट, जल्दी, क्रि० वि० जल्दी से, वेग से ।

सं०त्वष्टा—(त्वक्ष्=दुर्बल होना) कृ० पु० ब्रह्मा, विश्वकर्म्मा, नज्जार, बढ़ई।

सं०त्विषा—भा० स्त्री० रश्मि, किरण, ज्योति ।

सं०त्विषि—(त्विष्=दीप्ति उजाला) भा० स्त्री० किरण ।

—:०:—

थ

सं०थ (थुड्=ढकना) पु० पहाड़, २ खाना, ३ रोग, ४ डर, ५ बचाव, ६ मंगल [घड़ी ।

प्रा०थई—स्त्री० कपड़ों का ढेर, थड़,

प्रा०थंब } (सं० स्तम्भ) पु० खथंभ } म्भा, खंभ, थांभ, थूनी, सितून, पाया ।

प्रा०थंभना—(सं० स्तम्भन, ष्टम्भ वा स्तम्भ्=रोकना वा ठहरना) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ संभलना ।

प्रा०थकना } (सं० स्थगन, स्थग् थाकना } =ढकना) क्रि० अ० मांदा होना, खेदित होना, अकुलाना, हारना ।

प्रा०थकित—(सं० स्थगित, स्थग्=ढकना) कृ० पु० थकाहुआ, २ अचंभित, विस्मित, अचंभेमें, तअज्जुबमें ।

प्रा०थन—(सं० स्तन) पु० गाय, भैंस आदिकी चूंची, लेवा ।

प्रा०थपक—पु० थपथपानेका शब्द, थोप, थप्पड़, चपेटा ।

प्रा०थपड़ा—पु० थाप, थपेड़ा, चपेटा, तमाचा ।

प्रा०थपड़ी—स्त्री० ताली, हाथताली, करताली, थप्पड़ ।

प्रा०थपेड़ा—पु० चपेटा, धौल, थाप, थपेड़ा, तमाचा ।

प्रा०थप्पड़—पु० स्त्री० थपड़ा, थपेड़ा, धौल, चपेट ।

प्रा०थम—(सं० स्तम्भ) पु० स्तम्भा, खम्भ, थाँभ, थूनी ।

प्रा०थमना—(सं० स्तम्भ) क्रि० अ० ठहरना, स्थिर होना, रुकना, २ संभलना ।

प्रा०थरथर—गु० डगमग, कांपताहुआ ।

प्रा०थरथराना } क्रि० अ० कांपना, थरहराना } हिलना, डगथर्राना } मगाना ।

प्रा०थरथराहट } स्त्री० कंपाहट, कंथरथरी } पकंपी, डोल, हिलाव, कंपन ।

प्रा०थल—(सं० स्थल) वि० पु० जगह, सूखीजगह, ठांव, धरती, स्थान।

प्रा०थलकना—क्रि० अ० धड़कना, फड़कना, तलपना ।

प्रा०थलचर (सं० स्थलचर) क० पु० धरतीपर चलनेवाला पशुआदि, भूचर, भूमिचर ।

प्रा०थलथलकरना } थलथलाना } क्रि० अ० डगमगाना लहराना, हिलोरना, हिलना (जैसे मोटे आदमी का ढीला मांस) ।

प्रा०थलिया—(सं० स्थाली, स्था वा स्थल=ठहराना) स्त्री० थाली, थाल, छोटा थार ।

प्रा०थांग—स्त्री० चोरों की मांद अथवा घात की जगह ।

प्रा०थांभ—(सं० स्तम्भ) पु० खम्भ, खंभा, थंब, थंभ, थम, थूनी ।

प्रा०थांभना—(सं० स्तम्भ, ष्टम्भ् वा स्तम्भ्=रोकना वा ठहरना) क्रि० सं० सहारना, ठहराना, संभालना, सहारा देना, टेक देना आड़ देना, २ हाथ पकड़ना, बचाना, पालन करना, रक्षाकरना, ३ रोकना, अटकाना, छेंकना, ४ ठहरा देना, खड़ाकरना, (जैसे घोड़े को) ।

प्रा०थांवला—(सं० स्थल, स्थल्=ठहराना) पु० पेड़के जड़ के आस पास मिट्टी की मेंड अथवा घेरा, क्यारी, आलवाल, थाला ।

प्रा०थिति—(सं० स्थिति, स्था=ठहरना) भा० स्त्री० ठहराव, रुकाव, रोक, क़याम ।

प्रा०थाती } थाथी } (सं० स्थापित, स्था=रहना) स्त्री० धरोहर गिरों, जाकड़, बन्धक, अमानत ।

प्रा०थान—(सं० स्थान) पु० जगह, २ साराकपड़ा, ३ घोड़े अथवागाय बैल के रहने की जगह चरनी, ४ सिक्का, जैसे एक थान अशरफ़ी अथवा मोहर ।

प्रा०थाना—(सं० स्थान) पु० चौकी कोतवाली, २ बांसकाटान ।

प्रा०थाप—स्त्री० धौल, थप्पड़, थपक । २ छोटे ढोल के बजाने का शब्द, ३ मर्यादा, नामवरी ।

प्रा०थापना—(सं० स्थापन) क्रि० स० थोपना (जैसे गोबर) २ थप थपाना, ठोंकना, ३ रखना, स्थापन करना, ठहरा देना, धरना ।

प्रा०थापना—(सं० स्थापना) स्त्री० नवरात्रि में एक कोरे घड़े में पानी भर करके दुर्गा के सामने रखके दुर्गा की पूजाकरना, आश्विन सुदी अथवा चैत सुदी परिवा को जो देवी की पूजा होती है उसे थापना की पूजा कहते हैं । [चिह्न ।

प्रा०थापा—पु० चौपाये के पांवका

प्रा०थापी—स्त्री० थपथपाने का शब्द, २ मोंगरी जिस से कुम्हार मिट्टी कूटते हैं, वा छत पीटी जाती है ।

प्रा०थाम—(सं० स्तम्भ) पु० खंभा,